रत्नों व रुद्राक्ष की पहचान, गुण व धारण विधि

रत्न व रुद्राक्ष रहस्य

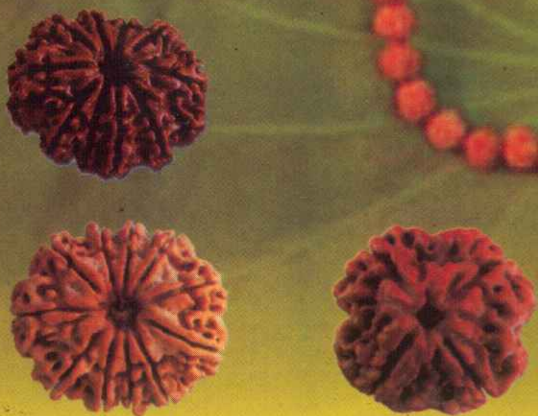

असलोमल विजयकुमार (हरिद्वार-मथुरा)

रत्नों व रुद्राक्ष की पहचान, गुण व धारण विधि

रत्न व रुद्राक्ष रहस्य

रुद्राक्ष व रत्न की पूर्ण जानकारी का अनूठा संकलन

लेखक :
विजयकुमार अग्रवाल

सौ वर्षों की पहचान
अखलोमल विजयकुमार
नेपाल व इंडोनेशिया रुद्राक्ष के एक मात्र आयातक
संतुष्टि ही हमारा उद्देश्य है

9319519305, 9634019911

प्रकाशक :
अखलोमल विजयकुमार

रामगिरी की हवेली,
बड़ा बाजार, हरिद्वार-249401
फोन : 01334-227606, 222266

26, ग्राउंड फ्लोर-2nd, भोईवाड़ा
भूलेश्वर मुम्बई-400002
फोन : (022) 66315556-57-58

कंसखार, छत्ता बाजार,
मथुरा-281001
फोन : (ऑफिस) (0565) 2407185, 3196677
(शोरूम) (0565) 2504880, 3296677

मूल्य : 50/-

इस पुस्तक के किसी भी भाग की नकल करना कानूनी जुर्म है।
किसी भी वाद-विवाद का न्याय क्षेत्र हरिद्वार होगा।

हर प्रकार के असली व शुद्ध राशि के नग, रत्न व उपरत्न-एक मुखी से चौदह मुखी तक रुद्राक्ष-चन्दन, स्फटिक, रुद्राक्ष, मूँगा, नवरत्न, कमलगट्टा, हल्दी आदि की माला-ताम्र, चाँदी व सोने पर अंकित श्रीयन्त्र तथा अन्य यन्त्र-ब्रह्मगांठ के जनेऊ-बजने वाले शंख, दक्षिणावर्ती लक्ष्मी शंख-अष्टधातु व नवरत्न की अंगूठी-असली शालिग्राम-पारद व स्फटिक के शिवलिंग व जलहरी-सभी प्रकार की तांत्रिक सामग्री-हत्था जोड़ी, सियारसिंगी व बिल्ली की जेर आदि सभी सामग्री पूर्ण विश्वास व उचित रेट पर मिलने का एक मात्र स्थान :

सौ वर्षों की पहचान

असलोमल विजयकुमार

नेपाल व इंडोनेशिया रुद्राक्ष के एक मात्र आयातक

संतुष्टि ही हमारा उद्देश्य है

असलोमल विजयकुमार

रामगिरी की हवेली,
बड़ा बाजार, हरिद्वार-249401
फोन : 01334-227606, 222266

26, ग्राउंड फ्लोर-2nd, भोईवाड़ा
भूलेश्वर मुम्बई-400002
फोन : (022) 66315556-57-58

कंसखार, छत्ता बाजार,
मथुरा-281001
फोन : (ऑफिस) (0565) 2407185, 3196677
(शोरूम) (0565) 2504880, 3296677

हमारे यहाँ से सभी प्रकार का सामान वी.पी.पी. द्वारा भी भेजा जाता है।

विषय सूची

क्र० सं०	विषय	पृ० सं०
1.	उद्देश्य व निवेदन	4
2.	भूमिका	5
3.	रत्नों का इतिहास	6
4.	रत्नों का प्रारम्भिक अध्ययन	12
5.	चौरासी रत्न तथा उपरत्न	19
6.	रत्न और ज्योतिष	34
7.	मेष—मूंगा	36
8.	वृष—हीरा	37
9.	मिथुन—पन्ना	38
10.	कर्क—मोती	39
11.	सिंह—माणिक	40
12.	तुला—हीरा	41
13.	कन्या—पन्ना	42
14.	वृश्चिक—मूंगा	42
15.	धनु—पुखराज	43
16.	मकर—नीलम	44
17.	कुम्भ—नीलम	45
18.	मीन—पुखराज	46
19.	गोमेद (राहु रत्न)	47
20.	लहसुनिया (केतु रत्न)	48
21.	स्फटिक	50
22.	शंख	52
23.	पारद शिवलिंग की महिमा	53
24.	हकीक	54
25.	अष्ट धातु	54
26.	श्री शालिग्राम जी	56
27.	नर्मदेश्वर	57
28.	ऊँ नम: शिवाय तथा जय माता दी कड़ा	58
29.	श्री ज्योति शालिग्राम जी	58
30.	बजरबट्टू	59
31.	मल्यागिरी चन्दन के हार	60
32.	राशि चक्र (हिन्दी)	61
33.	राशि चक्र (अंग्रेजी)	63
34.	रुद्राक्ष—मान्यता एवं महात्म्य	65
35.	रुद्राक्ष का आकार व प्रकार	65
36.	रुद्राक्ष उत्पत्ति की प्राचीन कथा	65
37.	रुद्राक्ष महात्म्य—प्राचीन कथा	68
38.	एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष	71
39.	रुद्राक्ष पहनने की विधि	84
40.	रुद्राक्ष का विभिन्न रोगों में उपयोग	87
41.	रुद्राक्ष की व्यवसाय में महत्ता	87
42.	रुद्राक्ष खरीदने से पहले ध्यान देने योग्य बातें	88
43.	अच्छे रुद्राक्ष की पहचान	89
44.	रुद्राक्ष धारण करने का शुभ समय	91
45.	रुद्राक्ष के बारे में विचार	92
46.	ग्रह व राशि के अनुसार लाभकारी रुद्राक्ष	93
47.	असली रुद्राक्ष की पहचान	94
48.	रुद्राक्ष माला	95
49.	माला शुद्धि	96
50.	विभिन्न मालायें तथा उनके प्रकार	97
51.	अष्टधातु की अँगूठी	98
52.	यंत्र	100
53.	ताम्र-पत्र पर अंकित यंत्रों की सूची	102
54.	स्फटिक श्री यंत्र	103
55.	पिरामिड	104
56.	स्फटिक बाल, हत्था जोड़ी	105
57.	बिल्ली की जेर	107
58.	एकाक्षी नारियल	107
59.	श्वेतार्क नारियल	107
60.	प्रमुख चमत्मकारी कवच	108

उद्देश्य व निवेदन

आज के तेज युग में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी कारण से दुखी है, कोई निर्धनता से दुखी है, कोई शारीरिक रोगों से पीड़ित है, किसी को मानसिक परेशानी है तो कोई मेहनत का फल नहीं मिलने से दु:खी है। हर मनुष्य तेजी से बढ़ते हुये उन्नति के शिखर पर पहुँच जाना चाहता है। इसके लिये जरूरी है कि परिश्रम के साथ मन्त्र-तन्त्र, जप-यज्ञ, टोटके-यन्त्र तथा रत्नों का प्रयोग नियम से किया जाये। इसको जानने के लिये मनुष्य को भविष्यवक्ताओं तथा ज्योतिषाचार्यों के पास पहुँचना पड़ता है। ये इनको, इनके दुख को दूर करने तथा मनोकामना पूर्ण करने के लिये रत्न धारण तथा यन्त्र पूजन आदि उपाय बताते हैं तथा मनुष्य इन पर विश्वास करते हुये अपना लक्ष्य पाने के लिये सुझाये गये उपायों पर चलने लगता है। इन सबके बावजूद भी यदि व्यक्ति फिर भी अपने मनोरथ में सफल नहीं हो पाता है तो इसका कारण क्या है, यही समझाने के लिये मैंने यह पुस्तक लिखने का विचार बनाया है।

अपनी ग्रह बाधाओं को दूर करने तथा अपना उन्नति शिखर पाने के लिये मनुष्य इन रत्नों तथा अष्ट धातुओं का प्रयोग अति प्राचीन काल से करता आ रहा है तथा इससे यह लाभ उठाता रहा है। इसका पता पौराणिक ग्रन्थों में बहुधा देखने को मिलता है। इन सबको करने के बावजूद यदि मनुष्य दुखी है तो इसका मतलब आप शायद यह समझेंगे कि यह सब प्रभावशाली नहीं हैं, परन्तु इसका यह मतलब ऐसा नहीं है।

इसका मतलब है कि सफलता पाने के लिये या तो प्रयोग लगन से नहीं हुआ है या वह नकली नग धारण किये हुये है। वह रत्न दोषपूर्ण है और विधिवत् धारण न किया गया है। ऐसा भी सम्भव है कि उसने अपने ग्रह से सम्बन्धित सही नग न धारण किया हो। यदि पूर्ण समझदारी तथा अच्छे ज्योतिषाचार्य तथा विधि-विधान से कोई नग धारण किया जाता है तो वह अपना कार्य अवश्य ही पूर्ण करता है, यह शास्त्र-संगत बात है तथा लेखक की अजमाई हुई है। इससे जुड़े कितने ही किस्से मेरे साथ घटित हुये हैं, परन्तु यहाँ हमें ज्यादा गहराई में नहीं जाना है, मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन के परिश्रम से जो बातें अनुभव की हैं, मैं उन्हीं अनुभवों के आधार पर इस पुस्तक में सही रत्नों की जानकारी तथा किस व्यक्ति को कौन-सा रत्न धारण करना चाहिये, कौन-सा रुद्राक्ष धारण करना चाहिये, कौन-से मन्त्र की पूजा करनी चाहिये तथा किस माला से जाप करना चाहिये, कौन-सा यन्त्र स्थापित करना चाहिये आदि का संक्षेप में वर्णन कर रहा हूँ। इस पुस्तक को यदि कोई भी आदमी एकान्त में पूर्ण चित्त के साथ अध्ययन करेगा तो अपने लिये उचित वस्तु का चयन ठीक ढंग से कर सकेगा तथा इन रत्न-रुद्राक्ष-यन्त्र आदि की सहायता से अपने जीवन में उमंग तथा तरंग का सरस बहाव पैदा करने में स्वयं सक्षम होगा।

इस पुस्तक के लेखन में मेरे पुत्र—अरविन्द कुमार (बबली), राकेश कुमार (टीटू) तथा मनीष कुमार (सन्ना) ने अथाह सहयोग दिया है, जिनके सहयोग से मैं आपके सामने पुस्तक रख पाने में सफल हो पाया हूँ। इनको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि यह भी इस दिव्य रोशनी को आगे बढ़ाते हुए मेरे बाद भी यह मशाल थामकर रखें तथा व्यापार की साख को बचाकर रखें।

धन्यवाद!

—विजय कुमार अग्रवाल

भूमिका

रत्न शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है—श्रेष्ठ। अत: रत्न शब्द सर्वत्र श्रेष्ठता का ही द्योतक होता है, किन्तु आभूषणों मे प्रयोग किये जाने वाले जिन रत्नों का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है, यदि उनके विषय में विचार किया जाये तो रत्न प्राय: दो प्रकार के होते हैं—खनिज रत्न और जैविक रत्न। खनिज रत्न उन रत्नों को कहते हैं, जो खानों से प्राप्त होते हैं। पृथ्वी के गर्भ में विभिन्न रासायनिक द्रव्य विद्यमान रहते हैं। इन रासायनिक द्रव्यों में विभिन्न तापक्रम के द्वारा विभिन्न प्रकार की रासायनिक क्रियायें निरन्तर होती रहती हैं। इसी के परिणामस्वरूप पृथ्वी के गर्भ में विभिन्न रत्नों का जन्म होता है। हीरा, माणिक, पन्ना, नीलम, पुखराज, गोमेद, लहसुनिया खनिज रत्न हैं। इनकी उत्पत्ति और प्राप्ति खानों से होने के कारण ही इन्हें खनिज रत्न कहा जाता है।

रत्नों की दूसरी श्रेणी में जैविक रत्न आते हैं। जैविक का अर्थ हैं, जीव के द्वारा उत्पन्न किया गया। इस श्रेणी में दो ही रत्न आते हैं—मूँगा और मोती। इनकी रचना विभिन्न समुद्री कीटों द्वारा समुद्रों के गर्भ में की जाती है। हमारे प्राचीन शास्त्रों के अनुसार रत्न और उपरत्नों की कुल संख्या चौरासी मानी गयी है। इनमें माणिक, मोती, मूँगा, हीरा, पन्ना, पुखराज, गोमेद और लहसुनिया इन नौ रत्नों को नवरत्न माना गया है और शेष का उपरन्त माना गया है, किन्तु इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उपरत्न भी होते हैं।

यहाँ हम इस विषय में अधिक विस्तार में न जाकर केवल इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि रत्नों का प्रयोग प्राय: दो प्रकार से किया जाता है। एक ओर तो लोग शौकिया तौर पर आभूषणों में जड़वाकर शोभा वृद्धि के लिये धारण करते हैं। दूसरी ओर इसके साथ ही ज्योतिषीय दृष्टि से भी इन रत्न-उपरत्नों का विशेष महत्व है। हमारे प्राचीन शास्त्रों की ऐसी मान्यता है कि सभी रत्न, उपरत्न तथा रुद्राक्षादि में एक प्रकार की दैवी शक्ति निहित होती है, जिसके आधार पर ये धारक की ग्रह-बाधाओं को दूर कर उसके जीवन में सुख तथा शान्ति की स्थापना करते हैं।

जहाँ तक रत्न और ग्रह-बाधा का प्रश्न है, इस विषय में हमारा निश्चित मत है कि रत्न और उपरत्न व्यक्ति की ग्रह-बाधाओं को दूर करने में समर्थ होते हैं। हमारा प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र भी इस बात से सहमति प्रकट करता है कि रत्न, रुद्राक्ष आदि का प्रयोग मानव-जीवन के कष्टों को दूर करने के लिये किया जाता है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार विभिन्न रत्नों की भस्म व पिष्टी का उपयोग विभिन्न बीमारियों में किया जाता है। आयुर्वेद शास्त्र के एक बहुत बड़े विद्वान् का कथन है कि मानव-शरीर पर यन्त्र, मन्त्र, औषधि तथा रत्न और रुद्राक्ष का समान रूप से प्रभाव पड़ता है।

रत्नों का इतिहास

मनुष्य प्राकृतिक रूप से ही सौंदर्य प्रेमी रहा है। इसीलिए जब वह धीरे-धीरे सभ्यता की ओर बढ़ रहा था तब भी वह तरह-तरह की वस्तुओं से अपने शरीर को सजाता-संवारता रहता था। पक्षियों के सुन्दर पंख, हड्डियां, दाँत तथा पत्थर आदि जो भी वस्तु उसे अपनी ओर आकर्षित करती उसे वह अपने शरीर की शोभा वृद्धि के लिए प्रयोग करने लगता था। आज भी अगर हम गौर करें तो पाएंगे कि छोटे-छोटे बच्चे सुन्दर पत्थर, पर, सीपियाँ तथा चूड़ियों के टुकड़े इत्यादि को इकट्ठे करके अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। मनुष्य की इसी प्रवृति ने रत्नों का आविष्कार किया होगा।

रत्नों का उपयोग सर्वप्रथम कब आरम्भ हुआ, यह तो ठीक-ठीक बता पाना कठिन है, फिर भी आज विद्वानों की सर्वसम्मति से संसार की अत्यन्त प्राचीन मानी जाने वाली पुस्तक ऋग्वेद में 'रत्न' शब्द का उपयोग देखने को मिलता है। उसके बाद लिखी गई अन्य पुस्तकों जो कि आज से हजारों साल पहले लिखी गई थीं, जैसे—महाभारत, अग्निपुराण, देवी भागवत, गरूण पुराण, भाव प्रकाश, चरक, वाग्भट्ट, सुश्रुत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, शुक्रनीति तथा अमरकोश में भी रत्नों के विषय में जानकारी मिलती है। प्रत्येक सम्प्रदाय की धार्मिक पुस्तकों में भी रत्नों का वर्णन देखने को मिलता है।

यूनान के प्रसिद्ध लेखक थ्योफेरेटस (Thiopharatus) (372-287 ईसा पूर्व) ने रत्नों के विषय पर बहुत कुछ लिखा है। प्रथम शताब्दी के लेखक प्लीनी (62-113) ने एक विशाल पुस्तक 'नेचुरल हिस्ट्री' नाम से लिखी थी जिसके अन्त में एक बड़ा अध्याय रत्नों के विषय पर भी दिया गया था। 13वीं शताब्दी के प्रसिद्ध लेखक व पर्यटक मार्कोपोलो, 16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रत्न व्यापारी, जौहरी, पर्यटक व लेखक टेवरनियर (Taverniar), 11वीं शताब्दी में कल्याणी के चालुक्य राजा सोमेश्वर,

आठवीं शताब्दी के मशहूर लेखक बुद्ध भट्ट की पुस्तक 'रत्न परीक्षा' तथा अलाउद्दीन खिलजी के जौहरी ठक्कर फेरू आदि ने रत्नों पर बहुत कुछ लिखा है।

कीमती पत्थरों के बहुत-से नाम जो आज प्रचलित हैं पहले उन्हें कोई जानता भी नहीं था। आज के बहुत-से रत्न पहले अन्य नामों से जाने जाते थे। रत्नों के लिए भारत प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है तथा हीरों से सर्वप्रथम संसार को परिचित कराने का सौभाग्य भारत को ही प्राप्त है। अफ्रीका व ब्राजील में हीरों के मिलने से पहले भारत इस क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता था। हीरों को आभूषणों में प्रयोग करने के लिए तराशने का तरीका भी सर्वप्रथम भारतीयों ने ही आविष्कृत किया था। लगभग 2800 वर्ष ईसा पूर्व ही से भारतीय इस कला में निपुण हो चुके थे।

इब्नेबतूता के अनुसार उस जमाने में सोने की इतनी अधिकता थी कि गयासउद्दीन ने तुगलकाबाद में किले के अन्दर एक बड़ा महल बनवाया तो उसकी ईंटों पर सोना चढ़ा हुआ था। जिस वक्त सूरज निकलता था तो उस महल की चमक-दमक के कारण कोई भी व्यक्ति उसकी ओर नजर जमाकर नहीं देख सकता था। उसके अन्दर एक हौज भी था जिसमें पिघला हुआ सोना भरा रहता था। शाही महल के अन्दर जो स्नान गृह था वह भी सोने का था।

मुगल बादशाहों के खजाने में जवाहरात की बहुत अधिकता रही। अकबर जब मरा तो उसके खजाने में 11-14 माशे की दस करोड़ और 100-500 तोले तक की एक हजार अशरफियाँ थीं। सोना 272 मन, चांदी 370 मन तथा जवाहरात एक मन थे। उन जवाहरात की कीमत तीन करोड़ रुपये से भी अधिक थी। उस काल में हीरे, मोती, नीलम और माणिक की बड़ी कद्र थी, जिनको प्राप्त करने के लिए हर प्रकार की कोशिशें जारी रहती थीं।

बाबर को एक बड़ा हीरा ग्वालियर के राजा विक्रमाजीत की संतान से मिला था। उसके विषय में वह अपनी 'तजके बाबरी' में लिखता है—"जब हुमायूं आगरा आया तो विक्रमाजीत की संतान भागने के ख्याल में थी। हुमायूं ने सैनिक नियुक्त कर दिए थे मगर उन्हें लूटने और

मारने की इजाजत नहीं दी थी। विक्रमाजीत की संतान ने अपनी इच्छा से बहुत-से जवाहरात हुमायूं को नजर किए। उसमें एक मशहूर हीरा था जो सुल्तान अलाउद्दीन लाया था। यह लगभग आठ मिसकाल अर्थात 216 रत्ती का था। कहते हैं कि बाज लोगों ने उसकी कीमत सारी दुनिया के खिराज (खर्च) का निस्फ (आधा) तशखीस (निर्धारित) की थी। जब मैं आया तो हुमायूं ने उस हीरे को पेश किया लेकिन मैंने हुमायूं ही को दे दिया।''

कहा जाता है कि यही हीरा कोहनूर के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसको नादिरशाह लूटकर ईरान ले गया, परन्तु फिर चक्कर खाता हुआ रंजीत सिंह के पास लाहौर पहुंचा और वहां से अंग्रेजों ने मलिका विक्टोरिया के पास भेज दिया और अब ब्रिटेन के मुकुट में लगा हुआ है, परन्तु कुछ लोगों का विचार है कि यह हीरा कोहनूर नहीं था बल्कि कोहनूर वह हीरा कहलाया जो सन् 1666 ई० में मीर जुमला ने शाहजहाँ को दिया था और उसका वजन नौ टांक अर्थात 216 रत्ती था।

मुगल बादशाहों में जवाहरात का सबसे बड़ा कदरदान शाहजहाँ था। वह हर प्रकार के जवाहरात जमा करता रहा। फ्रांसीसी पर्यटक व रत्न व्यापारी ट्रेवरनियर का बयान है कि शाहजहाँ से ज्यादा जवाहरात शायद ही दुनिया के किसी अन्य बादशाह के पास हों। शाइस्ता खां ने सन् 1655 ई० में उसको एक बहुत बड़ा हीरा दिया जिसका वजन 116 रत्ती था और कीमत एक लाख रुपये थी (बादशाहनामा जिल्द II पृ० 480)। यही हीरा शाहजहां ने दारा-शिकोह को दिया (बाद० ना० जि० III)। शाहजहां को सन् 1658 में बीजापुर के कुतुबुलमुल्क से भी एक बहुत बड़ा हीरा मिला जो तराशने से पहले 180 रत्ती का था। उसकी कीमत $1\frac{1}{2}$ लाख रुपये थी। शाहजहां ने उसको और जवाहरात के साथ एक शमादान में लगाया और मदीना-ए-मुनव्वराह रौजा-ए-पाक के लिए बतौर तोहफा भेज दिया। उस शमादान की कीमत $2\frac{1}{2}$ लाख रुपये थी। मीर जुभला ने सन् 1666 में शाहजहां को एक बड़ा हीरा दिया, जो वजन में नौ टांक (216 रत्ती) था और उसकी कीमत दो लाख 16 हजार रुपये भी (मासिरउल उमरा जि०

III पृ० 535)। ट्रेवरनियर ने उस हीरे के सम्बन्ध में लिखा था कि यह वजन और खूबसूरती में अपनी मिसाल आप है (सफरनामा वर्नियर)। यही हीरा आगे चलकर कोहनूर कहलाया, जिसको नादिरशाह हिन्दुस्तान से लूटकर ईरान ले गया लेकिन यह फिर हिन्दुस्तान वापस आया और रंजीतसिंह के हाथ लगा और अब अंग्रेजों के कब्जे में है (इम्पीरियल ट्रेजरी ऑफ द इन्डियन मुगल्ज; लेखक अब्दुल अजीज पृ० 182, 229)। अब उसकी कीमत बे अन्दाज बताई जाती है।

नीलम–आदिल खां बीजापुरी ने जहांगीर को उसके 12वें साल-ए-जलूस में एक नीलम भेजा था, जो वजन में छह छटांक और सात सुर्ख (151 रत्ती) था और उसकी कीमत एक लाख रुपये थी। जहांगीर लिखता है कि इतना बड़ा नफीस, खुशरंग और शादाब नीलम कभी पहले नजर से नहीं गुजरा (तज० जहां० पृ० 199)। जहांगीर को एत्मादउलदौला ने उसके 13वें साल-ए-जलूस में एक नीलम दिया था जिसकी नफासत जहांगीर को बहुत पसंद आई थी (तज० जहां० पृ० 239)। औरंगजेब के खजाने में मोतियों और नीलम का एक हार था। हर मोती दस-दस बारह-बारह रत्ती का था। बीच में एक नीलम था, जिसका वजन 40 रत्ती था।

जमर्रुद (पन्ना)–अकबर के पास एक जमर्रुद था, जिसका वजन $17\frac{3}{4}$ टांक और तीन सुर्ख (429 रत्ती) था। अबुलफजल ने उसकी कीमत 52 हजार रुपये लिखी है (आईने अकबरी जि० I आईन III)। जहांगीर के 12वें साल-ए-जलूस में आदिलशाह बीजापुरी ने उसको दूसरे तोहफों के साथ एक जमर्रुद भी भेजा जिसके बारे में वह लिखता है कि इतना खुशरंग और नफीस जमर्रुद देखने में नहीं आया (तज० जहाँ० 240)। उसके 13वें साल-ए-जलूस में राजा विक्रमाजीत ने उसको जमर्रुद की एक माला पेश की जिसकी कीमत दस हजार रुपये थी। औरंगजेब के खजाने में लाल और जमर्रुद का एक हार था। उसमें सिर्फ जमर्रुद का वजन 30 रत्ती था (इकबाल नामा जहांगीरी 117)।

याकूत–अकबर के शाही खजाने में 4 टांक और $7\frac{3}{4}$ सुर्ख ($103\frac{3}{4}$ रत्ती) का एक याकूत था। उसकी कीमत 50 हजार रुपये थी (आईने अकबरी जि० I आईन III)। याकूत प्राय: खंजर के दस्तों को सजाने और अंगूठी में जड़ने के लिए प्रयोग होता था। मीर जमालउद्दीन हुसैनी ने जहांगीर को उसके 13वें साल-ए-जलूस में नजराने दिए उसमें एक खंजर भी था जिस पर एक कीमती याकूत जड़ा था। इसीलिए उस खंजर की कीमत 50 हजार रुपये हो गई थी (तज० जहां० पृ० 157)। उसी साल शहजादा खुर्रम ने जहांगीर को उसके 13वें साल-ए-जलूस में नजराने लिए उसमें एक खंजर कभी था जिस पर एक कीमती याकृत जड़ा था। इसीलिए उस खंजर की कीमत 50 हजार रूपये हो गई थी (तज० जहां० पृ० 157)। उसी साल शहजादा खुर्रम ने जहांगीर को एक याकूत दिया जिसकी कीमत 40 हजार रुपये थी (तज० जहाँ० पृ० 266)। बीजापुर के हुमुमरां कुतुबुलमुल्क से शाहजहां ने याकूत की एक अंगूठी ली थी जिसकी कीमत 50 हजार रुपये लगाई गई थी (बादशाहनामा जिल्द प्रथम पृष्ठ 209)।

मोती–मोती के अध्याय में इस विषय पर लिखा गया है। उसके अतिरिक्त बादशाहनामा के लेखक ने शाहजहां की दो तसबीहों का वर्णन किया है जिनमें 125 मोती थे और दो मोतियों के बाद एक याकूत का दाना था। दोनों तसबीहों के बीच के मोती का वजन 32 रत्ती था, जिसकी कीमत 40 हजार रुपये थी (बादशाहनामा पृ० 392)। मोती कभी तकमें (बन्धों) में भी लगाया जाता था। जहांगीर ने अपने 18वें साल-ए-जलूस में शहजादा शहरयार को खलअत में एक कबा-ए-नादरी (कबा-एक विशेष प्रकार का लिबास जो आगे से खुला होता है) दी तो उसका एक तकमा एक कीमती मोती का था। जब किसी को शाहाना खलअत दिया जाता तो उसमें मोती जरूर होता था। मोती इतनी दरियादिली से इनाम में दिए जाते थे कि शहजादों और दरबारियों के अलावा अन्य लोग भी इस इनाम से सरफराज हुआ करते थे।

अकीक, मरजान, लाजवर्त–उस जमाने में अकीक, मरजान और लाजवर्त की बहुतायत रही। लाजवर्त तोहफे में कई-कई मन आया करते थे। जैसे बलख से नजर मुहम्मद खां ने शाहजहां को तोहफे भेजे तो उनमें एक सौ मन संगे लाजवर्त था।

जवाहरखाना–उस जमाने में कीमती जवाहरात के लिए एक जवाहरखाना होता था जिसका जिम्मेदार एक प्रतिष्ठित मनसबदार होता था। इसमें हीरे, लाल, नीलम, जमर्रुद, मोती और दूसरे सोने व चांदी के साज व सामान का अम्बार लगा रहता था। यद्यपि आलमगीर के जमाने में शाहजहां के जमाने की तरह जवाहरात की खरीदारी का शौक नहीं रह गया था फिर भी उसका खजाना जवाहरात से भरा हुआ था।

शाही खजाने में नजरानों और तोहफों की वजह से अत्यधिक जवाहरात जमा होते रहते थे और मुगल बादशाहों और उनके उमरा की दौलत की कोई सीमा नहीं रह गई थी। ●

रत्नों का प्रारम्भिक अध्ययन

चाहे वह प्राचीन काल रहा हो या वर्तमान, मनुष्य का आकर्षण सुन्दर रत्नों (Gems) एवं मूल्यवान पत्थरों (Precious stones) के प्रति रहा है। जमाने की प्रगति के साथ-साथ उनको तराशने एवं संवारने की कला भी उन्नति करती रही है। शताब्दियों पूर्व क्रिश्चियन युग (Christian era) के आरम्भ में विभिन्न प्रकार के क्वार्टज तथा अन्य कठोर पत्थर तराशे व पॉलिश किए जाते थे। इनमें मूर्तियों का निर्माण किया जाता था। इसके अलावा विभिन्न प्रकार का कलात्मक कार्य (Art work) और सजावटी सामान भी बनाया जाता था।

पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी प्रकार के खनिजों में से एक बड़ी मात्रा अपनी दुर्लभता, कठोरता, पायदारी, सुन्दर रंगों और विशिष्ट चिन्हों की वजह से स्वयं को अति मूल्यवान बना देती है।

शताब्दियों पूर्व और आज के वैज्ञानिक युग में भी रत्नों और मूल्यवान पत्थरों के बीच भिन्नता रही है अर्थात् दोनों शब्दों के अलग-अलग अर्थ हैं। प्राकृतिक तौर पर शब्द 'रत्न' हरेक पत्थर के लिए प्रयोग किया जा सकता है चाहे वह मूल्यवान हो या साधारण पत्थर या वह जो कैमियोज (Cameos उभरी हुई नक्काशी) या इन्टाग्लियो (Intaglis अन्दर खुदी हुई नक्काशी) के लिए प्रयोग किया जाता था और जिनसे सरकारी या निजी गुप्त दस्तावेजों व पत्रों इत्यादि पर मोहर (Seal) आदि लगाने का कार्य लिया जाता था, (कैमियोज तो केवल सजावटी महत्व ही रखते थे) भी रत्न कहला सकते हैं।

मूल्यवान पत्थर (Precious stones) शब्द जो कि आज बहुप्रचलित है, केवल उन खनिजों के लिए प्रयोग किया जाता है जो कि अत्यन्त दुर्लभ, अति सुन्दर, पायदार, आकर्षक रंगों वाले और प्राय: त्रुटिहीन होते हैं। उनका मूल्य भी अत्यधिक होता है तथा उनका प्रयोग सिर्फ आभूषणों

के लिए किया जाता है। साधारणत: इनमें हीरा, माणिक्य, नीलम एवं पन्ना इत्यादि रत्न सम्मिलित हैं जिनको पहलदार तराश कर मूल्यवान धातुओं में जड़ा जाता है। मूंगा, मोती एवं अम्बर आदि की गणना भी मूल्यवान पत्थरों में ही की जाती है, जबकि यह कोई खनिज पदार्थ नहीं हैं। शताब्दियों का गुजरते जाने वाला समय तथा देश-विदेश के फैशनों की लहर पुरुषों व नारियों को उनके देशी रत्नों की महत्ता बताती रहती है।

साधारणत: मनुष्य हमेशा उन खनिजों में रुचि लेता रहा है जो कि प्राकृतिक रूप से बहुतायत में उपलब्ध हैं क्योंकि उनकी कमी नहीं होती। वह सरलता-पूर्वक तराशे जा सकते हैं और सुन्दरता में भी कोई बहुत अधिक कम नहीं होते। ऐसे रत्न अल्पमोली (Semi precious stones) कहलाते हैं। नए-नए खनिज स्त्रोतों के मिलते रहने से उनका मूल्य चढ़ता-उतरता रहता है।

रत्न शब्द का उपयोग पहले की अपेक्षा अब अधिक गहरे अर्थों में किया जाने लगा है। कोई की खनिज जो कि सुन्दर, टिकाऊ और दुर्लभ हो तथा जो तराशने एवं पॉलिश करने के पश्चात् आभूषण के रूप में उपयोग किया जा सके, वह रत्न कहलाता है। खनिजों के बहुत-से प्रकार रत्न कहलाते हैं।

रंग रत्नों का मुख्य गुण है। करीब-करीब सभी मूल्यवान रत्न रंगीन होते हैं तथा नेत्रों को आकर्षित करते हैं। रंग ही एक ऐसा गुण है जो नदी में बहते हुए पत्थरों को भी एक-दूसरे से अलग करता है और जिनके द्वारा एक कुशल रत्न तराश यह अन्दाजा लगा सकता है कि अमुक पत्थर तराशने एवं पॉलिश करने के पश्चात् नेत्रों को आकर्षित करने लगेगा।

रंगों के बाद दूसरा गुण उनका त्रुटिहीन होना है। उनमें दरारें, बिन्दु, चीर, गड्ढे, आभाहीनता तथा अन्य दोष इत्यादि न हों अर्थात वह सूक्ष्मदर्शी से भी नजर न आते हों। इस उद्देश्य के लिए 10-15 पावर का सूक्ष्मदर्शी लैंस उपयोग किया जाता है। रत्नों की कीमत इसी गुण पर ज्यादा निर्भर करती है। हीरे, माणिक, पन्ने व नीलम इसी गुण के कारण अधिक मूल्य प्राप्त करते हैं।

टिकाऊपन रत्नों का तीसरा आवश्यक गुण है। इसके अलावा 'दुर्लभता सदैव रत्नों का महत्व बढ़ाती रहती है' ऐसा माना जाता है, परन्तु इसमें थोड़ा संदेह है। तीन अति लोकप्रिय रत्न पत्थर कार्नेलियन (Cornelian), लाजवर्त (Lapis lazuli) और फिरोजा (Tourquoise) हैं जो कि बहुतायत से 5000 वर्षों से भी अधिक समय से उपयोग होते आ रहे हैं और यह दुर्लभ भी नहीं हैं फिर भी अत्यधिक पसंद किए जाते हैं। कार्नेलियन तो बहुत ही आम है जबकि लाजवर्त और फिरोजा भी इतने दुर्लभ रत्न नहीं हैं। इन रत्नों की लोकप्रियता केवल एक कारण से ही है, वह है इनका फैशनेबल (Fashionable) होना।

फैशन ही एक ऐसा गुण है जो किसी भी रत्न की लोकप्रियता और महत्व एवं मूल्य को बढ़ा देता है। केवल हीरा ही इस बात से अलग रहा है। कई सौ वर्षों से हीरा बतौर रत्न लोकप्रिय रहा है। फैशन बदलते रहे, विभिन्न रत्नों के महत्व में उतार-चढ़ाव आता रहा, परन्तु इसकी लोकप्रियता में आज भी कोई कमी नहीं आई है, जबकि यह 2000 सालों से भी पूर्व से बतौर रत्न प्रयोग होता आया है। यह रत्न हमेशा से ही रत्नों में एक विशिष्ट स्थान रखता आया है।

इसी प्रकार प्राचीन समय से ही माणिक भी रत्न के बतौर प्रयोग किया जाता रहा है। फिर भी 60 वर्ष पूर्व इसकी मांग में भारी कमी आ गई थी क्योंकि तब नकली माणिकों की बाजार में भरमार हो गई थी, जिसके कारण इसका फैशन नहीं रहा था। इसके पश्चात् फैशन ने फिर नई करवट ली और माणिक फिर एक लोकप्रिय रत्न बन गया।

एक नया रत्न

जयपुर से मिले एक समाचार के अनुसार अब रत्नों के संसार में एक और नया रत्न आ जुड़ा है। इस पारदर्शक बहुरंगे रत्न का नाम इसके अन्वेषक रत्न वैज्ञानिक शेखर वशिष्ठ के नाम पर वशिष्टाइट रखा गया है। यह पहला अवसर है कि किसी भारतीय रत्न वैज्ञानिक ने किसी रत्न की खोज की हो। श्री वशिष्ठ, रत्न परीक्षण प्रयोगशाला व क्षेत्रीय आभूषण

परिषद् के क्षेत्रीय अधिकारी हैं। इस रत्न में बैंगनी और पीले रंग की धारियों का अद्‌भुत मिश्रण है।

इस रत्न की खोज की कहानी इस प्रकार है कि एक निर्यातक को जब यह सिद्ध करने के लिए कहा गया कि यह कृत्रिम रत्न नहीं है, वह जांच प्रमाणपत्र के लिए श्री वशिष्ठ के पास आया। श्री वशिष्ठ के अनुसार पहली नजर में ही लग गया कि इस रत्न में कुछ असामान्यता है। पन्द्रह दिन के गहन अध्ययन और अनुसंधान के बाद इसका महत्व स्थापित किया जा सका।

संश्लिष्ट रत्न

वैज्ञानिकों ने रत्नों पर अनुसंधान करके ज्ञात किया है कि प्रत्येक रत्न कुछ तत्वों का सम्मिश्रण होता है। केवल हीरा ही एक ऐसा रत्न है जो कि विशुद्ध रूप से कार्बन है। इसके अलावा अन्य रत्नों में पाए जाने वाले तत्व इस प्रकार हैं—कैल्शियम, कार्बन, फास्फोरस, सिलीकन, सोडियम, हाइड्रोजन, फैरिक आक्साइड, जिरकोनियम, एल्यूमीनियम, मैग्नीशियम, तांबा, बेरिलियम तथा आक्सीजन। किन-किन रत्नों में कौन-कौन से तत्व पाए जाते हैं यह तो आप आगे उनसे संबंधित अध्यायों में ही पढ़ेंगे।

फिरोजा की गणना उन रत्नों में है जिनको मनुष्य इतिहास काल के पूर्व से ही अलौकिक शक्तियों का स्वामी मानता आया है। इन्हें सौभाग्य के ताबीज आदि की हैसियत से बरता और शुभ व अशुभ फलों का स्वामी माना जाता है। क्योंकि प्राचीन मिस्त्र वासी इन्हें आयात करने के योग्य न थे इसलिए उन्होंने असली से हु-ब-हू मिलते-जुलते नकली फिरोजे बनाने का तरीका आविष्कृत कर लिया था।

रत्नों के कुछ महत्वपूर्ण गुण

मणिभ या रवा (Crystals)—प्राय: रत्नों की संरचना रवेदार (Crystalline) होती है। रवा उस प्राकृतिक ठोस पदार्थ को कहते हैं जो अपना एक निश्चित आकार रखता है। उसके चारों ओर के तल समतल

तथा चिकने होते हैं तथा उसकी रचना भी एक नियमित रूप की होती है। बड़ा रवा अपने ही जैसे बारीक रवों का समूह होता है। असली व नकली रत्नों की पहचान भी इसके द्वारा हो जाती है क्योंकि कृत्रिम रत्न में रवे नहीं होते। अपने विशिष्ट प्रकार के रवों के कारण ही रत्नों को सरलतापूर्वक पहचाना जा सकता है क्योंकि वह रत्न संसार में जहां कहीं भी पाया जाएगा उसके रवों का प्रकार वही होगा, परन्तु प्रत्येक रत्न रवेदार नहीं होता।

रत्नीय पत्थर तथा रवे (Crystal) में अन्तर यह होता है कि ऐसा पत्थर जो चट्टानों आदि में से निकलने के बाद अपना कोई विशेष आकार-प्रकार न रखता हो रत्नीय पत्थर कहलाता है, जबकि जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है। एक विशेष रूप रखने वाला रत्नीय पत्थर रवेदार कहलाता है। रवों के छह प्रकार होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

(1) घनाकार (Cubic)

(2) चतुष्फलक या द्विसमलम्बाक्ष (Tetragonal)

(3) षड्भुजीय या षटकोणीय (Hexagonal)

(4) सम चतुर्भुज या विषमलम्बाक्ष (Rhombic)

(5) एक नताक्ष या एक पदी (Monoclinic)

(6) त्रिनताक्ष या त्रिपदी (Triclinic)

रंग (Colour)—सुन्दर वस्तु को देखने पर सर्वप्रथम हम उसके रंगों से ही प्रभावित होते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि वस्तुओं के सौंदर्य में रंगों का महत्वपूर्ण स्थान है और प्रायः स्त्रियों को लाल रंग एवं पुरुषों को नीला रंग विशेष प्रिय होता है। किसी भी रत्नीय पत्थर के रंग का उसके रासायनिक संयोग (Chemical Composition) से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। उनमें रंग बनने का कारण उसमें किसी कार्बनिक (Organic) अथवा अकार्बनिक (Inorganic) तत्वों का प्रभाव होता है।

चिराव, विदलन अथवा विदरण (Cleavage)—जो खनिज दो दिशाओं में आसानी से विभक्त होने का गुण रखते हैं। ये दिशाएं (लगभग

जितना कोई देख सकता है) एक-दूसरे के साथ लम्बवत् होती हैं और इस तरह चपटे किनारों वाली प्लेटें बनाती हैं। यह गुण विदलन कहलाता है और कुछ विशेष खनिजों को पहचानने का एक सरलतम तरीका यह है कि उनके विदलन-दरारों की दिशा और विदलन खंडों की आकृति देखी जाए। विदलन हीरे एवं पुखराज में पाया जाता है।

संसार का सर्वाधिक कठोर पदार्थ होते हुए भी हीरा अपनी सतहों के समान्तर दिशा में इतनी ही सरलतापूर्वक चिर जाता है जैसे कि लकड़ी अपने रेशे के समान्तर दिशाओं में सरलता से चिर जाती है। इसको हम अभ्रक के उदाहरण से भी समझ सकते हैं क्योंकि उसमें भी चिराव होता है और उन चिरावों पर से हम अभ्रक की परतें अलग-अलग कर सकते हैं।

भंग अथवा टूट (Fracture)—चिराव के अलावा अन्य वस्तु होती है भंगुरता या भंग। भंग उसे कहते हैं जबकि रत्न इस प्रकार टूटकर अलग हो जाए जैसे लकड़ी को हाथों से तोड़कर दो भागों में विभाजित कर देने पर सिरे नजर आते हैं। यह भंग कई प्रकार का होता है। अधिकतर रत्नों का भंग टेढ़ा-मेढ़ा होता है ठीक ऐसा ही जैसे कि कांच की टूट होती है। जहां रत्न टूटता है वहां भी तल चमकदार चिकना हो सकता है, लेकिन विदलन में जिस तरह विदलन एक अकेले तल वाला और नियमित होता है, भंग वैसा नहीं होता; भंग में अनेक ऊंचे-नीचे तल बन जाते हैं, किन्तु यह गुण रत्नों की पहचान में कोई विशेष सहायक नहीं है।

रंग बदलने वाले रत्न

कुछ रत्नों के विषय में एक बात यह भी मानी जाती है कि ये रंग बदलकर अपने स्वामियों पर आने वाली विपत्तियों के बारे में उन्हें सूचित कर देते हैं। ऐसा विश्वास है कि असली मूंगा अपने रंग को बदलकर स्वास्थ्य के बिगड़ने की चेतावनी देता है। जब माणिक पहनने वाले पर

कोई विपत्ति आने वाली होती है तो माणिक्य का रंग फीका पड़ जाता है तथा कष्ट के दूर होते ही वह दोबारा अपने असली रंग पर पलट आता है।

महारानी कैथराइन के माणिक का रंग फीका पड़ जाने पर महारानी को अत्यधिक चिन्ता रहने लगी। इस घटना के कुछ ही समय बाद उनके पति ने उन्हें तलाक दे दिया। यह भी माना जाता है कि विष को निकट लाने पर भी इसका रंग हल्का पड़ जाता है।

नीलम के विषय में कहा जाता है कि यह दुश्मन के षड्यन्त्र की चेतावनी अपना रंग फीका करके देता है। फिरोजा के बारे में मान्यता है कि यह पहनने वाले को अपना रंग बदलकर आने वाले खतरे की सूचना देता है। तामड़ा (Garnet) अपना रंग परिवर्तित करके आने वाले संकट की चेतावनी देता है।

एक क्रिस्टल के प्याले में यदि विष डला हो तो प्याला धुंधला पड़ जाता है। कटैला का धारणकर्ता यदि बीमार पड़ जाए तो उसका रंग बदल जाता है। विष मिली वस्तु के निकट ले जाने पर इसकी चमक मंद पड़ जाती है। •

चौरासी रत्न तथा उपरत्न

वैसे तो रत्नों की संख्या बहुत अधिक है और यदि इसे दूसरे शब्दों के कहा जाए तो लगभग प्रत्येक पत्थर रत्न के बतौर प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु भारतीय जौहरियों ने जिन रत्नों को मान्यता दी है, उनकी संख्या उन्होंने चौरासी निर्धारित की है।

एक रोचक बात यह है कि रत्नों की संख्या चौरासी निर्धारित करने के बाद भी जौहरी चौरासी के फेर में पड़ जाने के डर से इस चौरासी की संख्या से इतने आतंकित रहते हैं कि अपने व्यापार में इस संख्या का कदापि व्यवहार नहीं करते।

यदि चौरासी के भाव में उन्हें कोई सौदा करने को बाध्य करे तो वह इनकार कर देते हैं, जबकि पौने या सवा चौरासी में बेचने को वे सहर्ष तैयार हो जाते हैं। इसी तरह न तो वे किसी पुड़िया में चौरासी नगीने रखते हैं और न ही कदापि चौरासी रत्ती माल बेचते हैं।

जौहरियों ने जो चौरासी रत्न व उपरत्न निर्धारित किये हैं वे रत्न इस प्रकार हैं—

1. माणिक (Ruby)–इसे अंग्रेजी में रूबी (Ruby), फारसी में याकूत, हिन्दी, मराठी, बंगाली व गुजराती में माणिक, अरबी में लाल बदख्शां, संस्कृत में माणिक्य व रवि रत्न आदि कहते हैं।

यह गुलाब जैसे लाल रंग का पारदर्शक रत्न होता है। सबसे सुन्दर माणिक कबूतर के रक्त जैसे लाल रंग का होता है। चार या उससे अधिक कैरट का त्रुटिहीन, सुन्दर रंग वाला माणिक ऐसे ही हीरे की तुलना में दुगना या पांच गुना मूल्य प्राप्त करता है। आठ या दस कैरट के माणिक कम ही मिलते हैं। चौबीस रत्ती से अधिक वजन के माणिक को 'लाल' कहते हैं।

सबसे अच्छी श्रेणी का माणिक बर्मा में मिलता है। इसके अतिरिक्त श्रीलंका, थाईलैंड, अफगानिस्तान, काबुल, उत्तरी कैरोलिना, मोनटाना, हिन्द चीन, भारत तथा बैंकाक में ये पाए जाते हैं।

2. हीरा (Diamond)—नौ रत्नों में इसका अपना एक विशिष्ट स्थान है तथा यह रत्नों का राजा कहलाता है। यह अंग्रेजी में डायमन्ड (Diamond), अरबी व फारसी में अलमास, संस्कृत में हीरक, वज्रमणि, अभेद्य तथा लैटिन में एडामन्टेन आदि कहलाता है।

शुद्ध रवेदार कार्बन को ही हीरा कहते हैं। यह माणिक को छोड़कर अन्य सारे रत्नों से अधिक मूल्यवान रत्न होता है तथा सफेद, पीले, गुलाबी, काले, लाल, नीले, बैंगनी व हरे रंगों में मिलता है।

इसकी खदानें अंगोला, बोत्स्वाना, ब्राजील, सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, घाना, हिन्दुस्तान, इन्डोनेशिया, आइवरी कोस्ट, लेसोथो, बोर्नियो, लीबिया, वैरिया, लीवोन, गायना, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिणी-पश्चिम अफ्रीका, यू० एस० एस० आर०, आस्ट्रेलिया, तनजानिया, वेनेजुएला, जायर, कांगो तथा इंग्लैंड इत्यादि देशों में पाई जाती हैं।

संसार का सबसे बड़ा हीरा कुलिनन 530.2 कैरट का है।

3. नीलम (Blue Sapphire)—इसको अंग्रेजी में सैफायर (Sapphire), हिन्दी व उर्दू में नीलम, बांग्ला में इन्द्रनील तथा संस्कृत में इन्द्रनील मणि, शनि रत्न तथा नील रत्न इत्यादि कहते हैं।

यह पारदर्शक नीला कोरण्डम या एल्यूमीनियम आक्साइड होता है जो कि विशेषकर अमेरिका, श्रीलंका, भारत, चीन, थाईलैंड, काबुल, जावा, आस्ट्रेलिया तथा मोनटाना में पाया जाता है। सबसे उत्तम कश्मीरी नीलम होता है जो कि अलसी के फूल जैसे गहरे नीले रंग का होता है।

इसका रंग नीला, मोर की गर्दन जैसा होता है तथा हल्के रंगों में भी मिलता है। पारदर्शक, लोचदार व चमकदार नीलम उत्तम माना जाता है। संसार का सबसे बड़ा नीलम 1444 कैरट का है।

4. पन्ना (Emerald)—इसे अंग्रेजी में एमराल्ड (Emerald), हिन्दी में पन्ना, फारसी में जमर्रुद, संस्कृत में मरकत मणि, हरिन्मणी, बुध रत्न, मराठी में पांचू रत्न, बांग्ला में पाना, कन्नड़ में पाचिपलई तथा गुजराती में पीलू कहते हैं।

यह एक पारदर्शक व सुन्दर रत्न है तथा रंग में विशुद्ध रूप से हरा होता है। यह नीम की पत्ती जैसे रंग का भी होता है। चिकना, कमल के पत्ते की भांति स्वच्छ, सिरस के फूल जैसा हरी आभा वाला पन्ना सर्वश्रेष्ठ होता है।

यह रत्न आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कोलम्बिया, मिस्त्र, उत्तरी कैरोलिना, पाकिस्तान, दक्षिणी अफ्रीका, सेन्डवाना, दक्षिणी रोडेशिया और साइबेरिया (यू० एस० एस० आर०) में मिलता है।

5. पुखराज (Topaz)—इसको उर्दू, हिन्दी व मराठी में पुखराज, फारसी में याकूत जर्द या याकूत अस्फर, कन्नड़ में पुष्पराज, गुजराती में पीलूराज, संस्कृत में पीतरक्त मणि, पुष्पराज, पुष्पराग, पीत रत्न व गुरु रत्न आदि कहते हैं। बर्मा की भाषा में यह आउटफिया कहलाता है।

इसका रंग पीला, सुनहरा, सफेद, हरा, बैंगनी, लाल, शराबी पीला (Wine yellow), गुलाबी, हल्का नीला तथा भूरा होता है। यह रंगहीन भी उपलब्ध होता है।

यह बर्मा, यूराल पर्वत, जापान, श्रीलंका, ब्राजील, भारत, तुर्किस्तान, ईरान, स्काटलैंड, दक्षिणी कैरोलिना, आयरलैंड, यू० एस० ए०, जर्मनी, कार्नवाल, मैक्सिको व कोलेरैडो में पाया जाता है।

अमलतास के फूलों की तरह पीले रंग का पुखराज सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। संसार का सबसे बड़ा पुखराज 7725 कैरट का है।

6. मोती (Pearl)—इसे इंगलिश में पर्ल (Pearl), उर्दू व फारसी में मरवादीद, लैटिन में मार्गारिटा तथा संस्कृत में मुक्ताफल, मुक्ता, मौक्तिक और मुक्तक कहते हैं।

मोती फारस की खाड़ी, अदन, श्रीलंका, बंसरा, तनावली, बगदाद, आस्ट्रेलिया, पेसिफिक महासागर व पनामा के द्वीप, जापान, लाल सागर,

भारत, वेनेजुएला, पालीनीशियन द्वीप समूह के समुद्री किनारे, आर्चीपेलेगो द्वीप समूह, दक्षिणी कैलिफोर्निया, मिसीसिपी, आयरलैंड, रूस, स्काटलैंड तथा जर्मनी आदि देशों में पाए जाते हैं।

7. मूंगा (Coral)—यद्यपि मूंगा कोई पत्थर नहीं है फिर भी इसकी गणना नौ मूल्यवान रत्नों में की जाती है। यह समुद्रों में रहने वाले एक प्रकार के जीवों द्वारा निर्मित होता है।

इसे अंग्रेजी में कोरल (Coral), फारसी में मरजान, मराठी में पोले, तेलगू में प्रवालक, संस्कृत में प्रवाल, अंगारक मणि, विद्रुम कहते हैं। यह बर्मा में टाडा व चीन में सहूहोची के नाम से जाना जाता है।

8. गोमेद (Zircon)—इसको उर्दू, संस्कृत, हिन्दी व मराठी में गोमेद मणि या गोमेदक, अरबी में हजार यमनी कहते हैं। इसे चीनी भाषा में पीसी तथा बर्मी भाषा में गोमोक कहते हैं।

इसका रंग पीला, सुरमई, भूरा, नीला, नारंगी, लाल व हरा होता है। यह रंगहीन भी होते हैं। यह रत्न इन्डो-चायना, श्रीलंका, बर्मा, चीन, भारत, अरब, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, फ्लोरिडा, मैडागास्कर, नार्वे, यू० एस० ए०, उत्तरी कैरोलिना, कनाडा, फ्रांस, रूस तथा दक्षिणी अफ्रीका आदि में पाया जाता है।

9. लहसुनिया (Cat's Eye)—इसे अंग्रेजी में कैट्स आई स्टोन (Cat's eye Stone), हिन्दी में लहसुनिया, बंगाली में वैदूर्य मणि, सूत्र मणि, गुजराती में लसणियो, संस्कृत में विडालाक्ष, वैदूर्य तथा केतु रत्न कहते हैं।

इसका रंग सेब जैसा हरा, पीला, धानी तथा भूरा होता है। प्रत्येक रत्न में बिल्ली की आंख की तरह सूत पड़ता है। इसका रंग स्याही सफेदी लिए हुए भी होता है। क्योंकि इसकी चमक बिल्ली की आंख जैसी होती है इसलिए ही इसको कैट्स आई या बिल्ली की आंख कहते हैं।

यह भारत, बर्मा, श्रीलंका, अफ्रीका, चीन, ब्राजील, उत्तरी अमेरिका तथा युराल पर्वत में पाया जाता है।

10. उपल (Opal)—यह लगभग सभी रंगों में प्राप्त होता है। प्राय: यह सफेद, नीला, पीला, सुरमई, काला, भूरा, लाल व हरा आदि रंगों में उपलब्ध होता है जिस पर लाल, नीले तथा अन्य बहुत-से इन्द्रधनुषी, आभायुक्त, चमकदार, जगमगाते रंगों के सितारे जैसे मालूम पड़ते हैं। संसार का सबसे बड़ा उपल एक लाख 77 हजार कैरट का है।

'उपल' एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ बहुमूल्य पत्थर होता है। संसार में यह ओपल के नाम से जाना जाता है। इसको जलगर्भक, उपलय, कुर्बुरमणि, ओपल, मन्मथाश्मा तथा तुषार भी कहते हैं।

यह रत्न आस्ट्रेलिया, होन्डरास (Honduras), मैक्सिको, नेवेडा (Nevada), ईडाहो (Idaho), हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, न्यू साउथ वेल्ज, श्रीलंका, बर्मा, यू० एस० ए० तथा कैलिफोर्निया में पाया जाता है।

11. वैक्रान्त या तुरमली (Tourmaline)—यह विभिन्न रंगों जैसे—लाल, गुलाबी, हरा, नीला, काला, पीला आदि में या फिर रंगहीन मिलता है। इसके रंगों का बहुरंगापन इसमें मिले रासायनिक यौगिकों के आधार पर होता है। इसकी खदानें भारत, श्रीलंका, मैडागास्कर, दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका, साइबेरिया, एल्बाद्वीप, दक्षिणी कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों में पाई जाती हैं।

12. मरगज (Jade)—इसको उर्दू में मरगज, फारसी में संगे सम तथा चीनी भाषा में यू कहते हैं। यह रत्न भी कई रंगों में मिलता है। पन्ना जैसा हरा, हरापन लिए सफेद, सेब जैसा हरा, सफेद, हल्का नीला, बैंगनी, बनफशी तथा काले रंगों में उपलब्ध होता है।

चीन में इसको अति मूल्यवान एवं पवित्र रत्न माना जाता है। चीनी माताएं इस रत्न को इसलिए पहनती थीं क्योंकि उनका विश्वास था कि इससे स्तन में दूध का प्रवाह बढ़ता है। मरगज सर्वाधिक अपर बर्मा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसके प्राप्ति स्थान तिब्बत, दक्षिणी चीन, यूनान, मैक्सिको, दक्षिणी अमेरिका, तुर्किस्तान, साइबेरिया व न्यूजीलैंड हैं।

13. नरम (Spinal Ruby)—यह रक्तवर्ण में हल्की गुलाब जैसी कांति वाला या श्यामपन लिए हुए बहुत साफ नरम पत्थर होता है। यह विभिन्न रंगों, जैसे, गहरा लाल, गहरा हरा, गुलाबी, पीला, नारंगी, लाल, बैंगनी, नीला व घास जैसा हरा भी होता है। यह रत्न श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, भारत, मैडागास्कर, आस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, ब्राजील, न्यूजर्सी तथा न्यूयार्क में पाया जाता है।

14. बेरुज (Aquamarine)—यह पारदर्शक समुद्री नीला या सफेद और समुद्री हरा होता है। इसके प्राप्ति स्थान ब्राजील, साइबेरिया, मैडागास्कर, संयुक्त राज्य, कोलेरैडो, एल्बा द्वीप, आयरलैंड, युराल पर्वत, कैलिफोर्निया, उत्तर कैरोलिना, भारत व श्रीलंका हैं। 243 पौंड का एक बेरुज मणिभ (Crystal) ब्राजील में प्राप्त हुआ था।

15. फिरोजा (Tourquaise)—इसका रंग आसमानी या नीलापन लिए हरा होता है। इसके प्राप्ति स्थान ईरान (नेशापुर, शीराज, करमान), संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, कैलिफोर्निया, तिब्बत, ऐरीजोना, न्यू मैक्सिको, साइबेरिया व नेवाडा आदि हैं।

16. जबरजद्द (Peridot)—इसे हरितमणि भी कहते हैं। यह हरे पीले (धानी) रंग का पारदर्शक आभायुक्त रत्न है तथा लाल सागर के पश्चिमी किनारे पर सेंट जॉन द्वीप, बर्मा, ऐरीजोना, नार्वे व न्यू मैक्सिको में पाया जाता है।

17. अकीक (Agate)—यह बहुत-से रंगों (लाल, काला, सफेद, हरा, पीला व मटियाला) में मिलता है। इस पर समानान्तर लहरदार धारियां होती हैं। किन्हीं अकीकों में यह धारियां न होकर वैसे ही विभिन्न रंगों के धब्बे जैसे पाए जाते हैं तथा इसमें मोम जैसी चमक व चिकनाहट होती है। यह दक्षिणी ब्राजील, जर्मनी, भारत, सिसली, संयुक्त राज्य, इंग्लैंड, डेनमार्क, रोम व संसार के समस्त देशों में किसी न किसी मात्रा में पाया जाता है।

18. कहरुवा (Amber)—इसको तृणाकर्ष, तृणकान्त तथा वृक्षनिर्यासमणि भी कहते हैं। यह भी मूंगे की तरह कोई पत्थर नहीं है बल्कि यह एक प्रकार की राल होती है जो नरम पारदर्शक तथा

अपारदर्शक दोनों प्रकार की होती है। इसका रंग लाल, पीला, सफेद, गहरा भूरा, नीलाहट लिए लालीयुक्त तथा हरापन लिए हुए भी होता है। प्राय: यह शहद की तरह भूरा ही प्राप्त होता है। इसमें काफूर की तरह की गंध आती है। यह सिसली, बाल्टिक सागर की तट भूमि, रूमानिया, थाईलैण्ड, जापान, अमेरिका, रूस, बर्मा, ब्राजील, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, ईस्ट इण्डीज, पेरू, मैडागास्कर, मोशका तथा संसार के अन्य भागों में भी किसी-न-किसी मात्रा में उपलब्ध होता है।

19. तामड़ा (Garnet)—यह रत्न पत्थर गहरा लाल, भूरा, सुनहरी, पीला, सफेद, हल्का हरा व काला आदि रंगों में मिलता है। इसके प्राप्ति स्थान उत्तरी भारत, श्रीलंका, रूस, ब्राजील, चेकोस्लोवाकिया, अलास्का, स्विट्जरलैंड तथा दक्षिणी अफ्रीका है।

20. कुरंड (Corundum)—यह गुलाबी, नीला, सफेद, हरा, मटियाला लाल, रंगहीन, भूरे रंग के विभिन्न शेड्स, पीला व बैंगनी आदि रंगों में उपलब्ध होता है। इसकी खदानें भारत, बर्मा, श्रीलंका, थाईलैंड, यूराल, मोनटाना, उत्तरी कैरोलिना, आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य, जार्जिया, हेलेना, ट्रांसवाल, यूनियन आफ साउथ अफ्रीका तथा कनाडा में हैं। इस पत्थर पर घिसकर रत्न तैयार किए जाते हैं तथा इसकी साण भी बनाई जाती है।

21. कटैला (Amethyst)—यह बैंगनी या बनफशी रंग का पारदर्शक रत्न होता है। गरम करके इसका रंग परिवर्तित किया जा सकता है। इसके प्राप्ति स्थान ब्राजील, उरुग्वे (Uruguay), दक्षिणी अमेरिका, साइबेरिया, श्रीलंका, भारत, मैडागास्कर, ईरान, मैक्सिको, चैकोस्लोवाकिया, मायन (Maine), न्यूहैम्पशायर, उत्तरी कैरोलिना, पेन्सिलिवानिया, नोवास्कोशिया, बर्मा और जर्मनी हैं।

22. दाना-ए-फरहंग (Malachite)—इसका रंग पिस्ते की तरह हरा, पन्ने की तरह हरा या घास जैसा हरा होता है। इसकी विशेषता यह है कि इस पर प्राकृतिक रूप से ही गुर्दे की आकृति बनी होती है। इसीलिए यह गुर्दा पत्थर या किडनी स्टोन (Kidney Stone) भी कहलाता है। यह एक प्रकार से गुर्दे के दर्द की अचूक दवा माना जाता है। इसको दर्द के

स्थान पर बाँधने रात को भिगोकर प्रात: उस पानी को पी लेने से गुर्दे का दर्द बन्द हो जाता है। ऐसा होने का कारण शायद यह है कि इसमें तांबे का अंश अत्यधिक होता जो कि त्वचा के सम्पर्क में आकर किसी प्रकार की विशेष प्रतिक्रिया करता है जिसके परिणामस्वरूप दर्द बन्द हो जाता है। इसके कई प्रकार के डेकोरेशन पीस भी बनाए जाते हैं। लेनिनग्राद (रूस) के एक गिरजाघर में तो इसके बड़े-बड़े खम्भे लगे हुए हैं। इसके प्राप्ति स्थान यूराल पर्वत यू०एस०एस०आर०, क्यूबा, अमेरिका, फ्रांस, चिली, दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका, काटांगा, बेल्जियम कांगो, रोडेशिया, ऐरीजोना, आस्ट्रेलिया और न्यूमैक्सिको हैं।

23. सुनेहला (Citrine)—यह सोने के रंग की तरह का चमकदार हल्का पीला पारदर्शक रत्न है। यह संसार के लगभग सभी देशों में प्राप्त होता है। इसे गोल्डन क्वार्टज भी कहते हैं।

24. एलेग्जेन्ड्राइट (Alexendrite)—इस रत्न को यह नाम रूस के एलेग्जेन्डर द्वितीय ने दिया था। यह रत्न गिरगिट की तरह रंग बदलता है। रात में बिजली के प्रकाश में यह नीली लाल झलक मारता हुआ नजर आता है तो सूर्य के प्रकाश में विलक्षण हरा मिश्रित बैंगनी हो जाता है। यह एकसाथ कई रंग प्रदर्शित करता है अर्थात् इसको विभिन्न कोणों से देखने पर इसमें अलग-अलग रंग नजर आते हैं। इसके रंगों का बहुरंगापन इसमें विद्यमान वेनाडियन तत्व के कारण होता है। इसके वास्तविक रंग का वर्णन नहीं किया जा सकता। यह बहुत अल्प मात्रा में पाया जाता है इसीलिए इसको नकली बनाते हैं। इसके प्राप्ति स्थान यूराल पर्वत, श्रीलंका तथा अफ्रीका हैं।

25. धुनैला (Smoky Quartz)—यह धुएं जैसे काले, पीले या भूरे रंग का चमकदार, पारदर्शक रत्न होता है। रत्नों के अतिरिक्त इससे कीमती धूप के चश्मे भी बनाए जाते हैं। इसके प्राप्ति स्थान स्विट्जरलैंड, यू० एस० ए०, उत्तरी कैरोलिना तथा मायन हैं।

26. लाजवर्त (Lapis Lazuli)—आजकल इस नाम से जाना जाने वाला यह रत्न प्राचीन काल में नीलम कहलाता था। यह मोर की गर्दन जैसा नील वर्ण का अपारदर्शक रत्न होता है। इसमें यहां-वहां सोने की

तरह की जगमगाहट वाले धब्बे होते हैं। यह लेजुराइट, कैल्साइट, पाइरॉक्जिन (Pyroxene) तथा अन्य सिलिकेटस व पायराइट का मिश्रण होता है। इसके प्राप्ति स्थान उत्तरी पूर्वी अफगानिस्तान, साइबेरिया और चिली हैं।

27. फिटक-स्फटिक (Rock Crystal)—यह कांच की तरह आरपार दिखने वाला स्वच्छ एवं कठोर पत्थर होता है। इसे प्राकृतिक बिल्लौर भी कहा जाता है। हजारों वर्ष तक जिन स्थानों पर बर्फ गिरती रही और जमती रही वहां रासायनिक प्रतिक्रिया द्वारा सबसे नीचे की जिस बर्फ ने पत्थर का रूप धारण किया वही फिटक-स्फटिक कहलाती है। यदि हम इसके नीचे कोई रंगीन वस्तु रखकर देखें तो वह हमें श्वेत ही दिखाई देगी। सर्वोत्तम फिटक-स्फटिक मैडागास्कर द्वीप का होता है। यह आल्पस, ग्रीस, ब्राजील, मैडागास्कर के द्वीप, जापान, कश्मीर, भारत, चीन, नेपाल तथा मुस्लिम देशों में मिलता है। संसार का सबसे बड़ा फिटक-स्फटिक 7 सितम्बर 1958 को यू० एस० एस० आर० की यूराल खान से प्राप्त किया गया था जिसका वजन 17 टन था।

28. सुलेमानी (Onyx)—यह काले रंग का सफेद डोरे वाला पत्थर होता है। अन्य कुछ रंगों में भी मिलता है। यह सिन्धु नदी, नर्मदा, सुलेमान पर्वत तथा कश्मीर में प्राप्त होता है। रत्नों के रूप में प्रयोग होने के अतिरिक्त यह सजावटी सामान बनाने के काम भी आता है।

29. गौदन्ता या चन्द्रमणि (Moon Stone)—इसका नाम गौदन्ता पड़ने का कारण इसका गाय के दांतों की तरह पीला होना है। इसके चमकदार टुकड़े व डलियां प्राप्त होती हैं। इसमें सूत भी पड़ते हैं। चांद के प्रकाश में देखने पर ऐसा लगता है जैसे इसमें पानी भरा हुआ है। यह श्रीलंका, बर्मा, स्विट्जरलैंड, ब्राजील, अमेरिका तथा भारत में मिलता है।

30. यशब (Jasper)—यह काले, हरे, लाल, सफेद, भूरे, नीले, पीले मटियाले रंगों का एक अपारदर्शक रत्न है तथा बर्मा, ईरान, मिस्त्र, तिब्बत, चीन, मैक्सिको, लद्दाख, उत्तरी अमेरिका, सिसली, जर्मनी व लाल सागर में प्राप्त होता है।

31. काकर नीली (Sodalite)—यह नीलम जाति का नरम और कुछ जर्दी लिए हुए रत्न होता है। इसका रंग नीलम से मिलने के बावजूद यह गुण और मूल्य में उससे बहुत ही कम होता है। नीलम के साथ ही प्राय: प्राप्त होता है।

32. पितौमिया (Blood Stone)—यह लाल रंग के छींटों वाला हरे रंग का गुम पत्थर होता है। पहले यह सेंट स्टीफन्ज स्टोन कहलाता था। यह साइबेरिया, भारत, हैब्रिडेस (Hebrides) द्वीप में मिलता है।

33. संगे सितारा (Gold Stone)—इस गेरूवे रंग के रत्न में सोने के समान छींटे चमकते हैं। यह नकली बनाया जाता है क्योंकि असली पत्थर इतना सुन्दर नहीं होता। पिघले हुए शीशे में तांबे का चूर्ण मिलाकर इस पत्थर को तैयार किया जाता है। अधिकतर यह इटली में बनाया जाता है।

34. पनघन (A Variety of Agate or Sard Pebble)—सफेद रंग का अति सुन्दर चिकना, कोमल व चमकदार पत्थर पनघन के नाम से जाना जाता है। इसके बीच में पानी कैद होता है जो कि हिलाने से हिलता हुआ दिखाई देता है। प्राय: यह खिलौने आदि बनाने के काम में आता है। ऐसा ही एक अति सुन्दर एवं बड़ा पत्थर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉक्टर जाकिर हुसैन को रूस के राष्ट्रपति द्वारा भेंट स्वरूप दिया गया था, जो कि अब भी उनके संग्रहालय में देखा जा सकता है। यह पत्थर काले रंग का तथा कुछ हरापन लिए हुए भी मिलता है।

35. जहर मोहरा (Serpentine)—यह हरा पीला मिश्रित होता है। इसके प्याले व खरल आदि भी बनाए जाते हैं। ऐसा कहा जाता है। कि इसके प्याले में यदि विषैला पदार्थ डाला जाए तो वह विषहीन हो जाता है। इसको पानी में घिसकर पिया जाता है और अगर इसको पीने के बाद कोई कड़वी चीज खाएं तो उसका कड़वापन महसूस नहीं होता। यह भारत, तिब्बत व खुरासान में प्राप्त होता है।

36. सोना मक्खी या स्वर्ण माक्षिक (Bismuth)—इसका रंग हल्की लाली लिए चांदी जैसा सफेद होता है। इसके प्राप्ति स्थान नार्वे, स्वीडन, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, बोलीविया, कनाडा व यू० एस० ए० हैं।

37. मृतांगार (Jet)—यह कोयले का ही एक प्रकार है। यह कठोर होता है। इस पर पालिश अच्छी आती है। यॉर्कशायर (इंग्लैंड) में वहीं से प्राप्त जेट या फिर स्पेन से आयात किए हुए जेट से विभिन्न वस्तुएं बनाई जाती हैं। रत्नों के रूप में भी यह लोकप्रिय है।

38. तुरसावा (A Kind of Zircon)—यह गोमेद से बहुत अधिक मिलता-जुलता होता है। ऋतुओं के अनुसार इसके रंग बदलते रहते हैं। सर्दी में लाल, गर्मी में सफेद व वर्षा ऋतु में यह पीले रंग में परिवर्तित होता रहता है। इसका रंग समुद्री पानी जैसा, आभायुक्त श्वेत, लाल, हल्का पीला, हरा, गुलाबी रंग में पीलापन लिए, काली आभा वाला या हरी और सफेद आभा वाला होता है। यह भारत में विन्ध्य और हिमालय पर्वत के क्षेत्रों, श्रीलंका, थाईलैंड (स्याम), अरब (मदीना) फारस, ईराक तथा बर्मा में पाया जाता है।

39. काला चार लाईन (Diopside)—यह एकदम काला या फिर हल्का काला होता है। इसमें मून स्टोन की तरह सूत पड़ता है, जो छह कोणों का सितारा बनाता है, परन्तु बिल्कुल काले रंग में क्रास चार लाइनों का बनता है। इसीलिए इसको काला चार लाईन कहते हैं। इसका नाम ब्लैक स्टार भी है।

40. चीते की आंख (Tiger eye)—इसका रंग चीते की आंख की तरह का चमकीला पीला होता है और इसमें उसी रंग का सूत पड़ता है। चीते की आंख की तरह दीखने के कारण ही इसे टाइगर आई कहा जाता है। इसका नाम दरियाई लहसुनिया भी है।

41. उदक या तेल मणि-यह पत्थर कड़वे तेल की तरह रंग का होता है। यदि इसको आग के पास रखा जाए तो यह सोने के समान रंग में चमकने लगता है।

42. सूर्याक्षमा (Sunstone)—इसका रंग पीला या लाल होता है और देखने में दहकता हुआ अंगारा जैसा होता है। इसको अंगार मणि, संगे आतश, सूर्य रत्न व ओलिगोक्लेज भी कहते हैं। इसकी चमक-दमक का कारण इसमें विद्यमान आयरन ऑक्साइड है। इसके प्राप्ति स्थान साइबेरिया व नार्वे हैं।

43. लालड़ी (Spinal)—यह रत्न सफेद, लाल, नीला, हरा, भूरा तथा काला आदि रंगों में मिलता है। इसकी खदानें श्रीलंका, अफगानिस्तान, थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, मैडागास्कर, भारत, न्यूयार्क, ब्राजील, न्यूजर्सी तथा अपर बर्मा आदि देशों में हैं।

44. राताुवा (Jasper)—यह मांस या गेरू के समान लाल रंग का होता है। चमकीला व अपारदर्शक पत्थर होता है। प्राय: अकीक के साथ ही निकलता है और कार्नेलियन (Cornelion) भी कहलाता है। कुछ जौहरी एक अन्य गेरूवे रंग के पत्थर को भी रतवा कहते हैं। यमन में अच्छी श्रेणी का रतुवा पाया जाता है।

45. सींगली (Mysore Star)—इसे मंसूरी माणिक भी कहते हैं और यह होता भी माणिक जाति का ही रत्न है। स्याही और सुर्खी मिश्रित गुम पत्थर है। इसमें बनने वाला सितारा छह कोणों वाला होता है।

46. संगी–यह सभी रंगों, जैसे—सफेद, काला, लाल, हरा, पीला और मटमैला आदि में प्राप्त होता है तथा चमकदार एवं चिकना रत्न है। हिमालय से निकली हुई नदियों द्वारा प्राय: प्राप्त किया जाता है।

47. जजेमानी (A Variety of Onyx)—सुलेमानी जाति का रत्न है। इसका रंग पीली आभा वाला सफेद या भूरा होता है। इसमें काले डोरे होते हैं। यह नर्मदा नदी और सुलेमानी पर्वत पर मिलता है।

48. आलेमासी (A Kind of Agate)—सफेद डोरे वाला भूरे तेलिया रंग का पत्थर होता है। यह भी सुलेमानी जाति का ही रत्न है तथा यह तीनों रत्न एक ही स्थान पर मिलते हैं।

49. गौरी (A Kind of Agate)—अकीक से मिलता-जुलता लगभग सभी रंगों का धारियों वाला सख्त पत्थर होता है। इसकी खरल, रत्न तौलने के बाट तथा प्याले आदि भी बनाए जाते हैं। हिमालय की खानों में भी कभी-कभी मिलता है।

50. संगे यहूद (Jews Stone) बेर के समान मटिया रंग, बलूती आकृति का लम्बा, दोनों तरफ से नोकदार पत्थर होता है। इसे मूत्र व दमा की बीमारी में घिसकर पीते हैं।

51. संगे सिमाक (Prophry)—मलिनता लिए लाल रंग पर श्वेत छींटों वाला, सख्त व गुम पत्थर होता है। इससे खरल बनाते हैं।

52. मकनातीस (Load Stone)—यह भूरे, काले या मटियाले रंग का होता है। इसे चकमक पत्थर भी कहते हैं। इसको आपस में रगड़ने से आग की चिंगारियां निकलती हैं।

53. विद्रूम या संगे मूंगी–यह लाल, मूंगिया या सफेद रंग का हल्का, चिकना व छिद्र युक्त रत्न होता है। किसी-किसी पर गंदुमी छींटे भी नजर आते हैं।

54. संगे सरमाही–सफेद या भूरे रंग का त्रिकोणाकार पत्थर है जो फारस की खाड़ी में अत्यधिक पाया जाता है।

55. संगे पन्नी–हरे रंग का, अंग में कोमल, रूखा तथा वजन में हल्का रत्न होता है। यह पन्ने का उपरत्न है।

56. संगे मूसा (Jet)—यह काला संगमरमर होता है। रत्नों के अतिरिक्त खरल, प्याले व तश्तरियाँ आदि बनाने के काम आता है।

57. दुर्रे नजफ (Door-E-Nazaf) or (Floor Stone)—धानी रंग का गुम पत्थर होता है। फर्श बनाने के काम आता है। इस पर पालिश अच्छी आती है।

58. मूवे नजफ (Move-Najaf) or (Floor Stone)–सफेद पत्थर में बाल की तरह बारीक काली लाइनें होती हैं। यह भी फर्श के काम आता है।

59. बांसी (Bamboo Stone)—समुद्री हरा या काई रंग का मोटे पानी का नरम पत्थर होता है। इस पर पालिश अच्छी आती है।

60. दो पोस्ता (Sardonex)—इस सुन्दर पत्थर में सफेदा व भूरी समानान्तर या लहरदार धारियां होती है।

61. अबरी (Abri)—काले व पीले रंग का बादली, संगमरमर की तरह का पत्थर होता है। खरल बनाने में प्रयोग किया जाता हैं।

62. ढेडी (A Kind of Marble)—काले रंग का सख्त अंग वाला अपारदर्शक पत्थर होता है जिसकी खरलें बनाई जाती हैं।

63. लूधिया (A Kind of Marbel)—मजीठ की तरह लाल रंग का गुम पत्थर होता है। प्राय: खरल बनाने के काम आता है।

64. दारचना (Braunite)—कत्थई रंग पर पीले व धूमिल छींटें होते हैं। खरलें बनाने के काम भी आता है।

65. गुदडी (A variety of Marble)—यह फकीरों व संन्यासियों का रत्न कहलाता है। यह कई प्रकार के रंगों में मिलता है।

66. हदीद (Eye Agate)—भूरापन लिए स्याही रंग का या मटियाले रंग का भारी पत्थर होता है। इसकी मालाएं बनती हैं।

67. हजरते ऊद (Mazrat-e-ud)—मटियाले रंग का पत्थर होता है। मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है।

68. अमलीया (A Variety of Marble)—काले रंग में गुलाबी झांई लिए हुए होता है। इसके खरल बनाये जाते हैं।

69. दान्तला (Achroite)—सफेद पानीदार, चिकना व पारदर्शक रत्न हैं। दांतों सम्बन्धी रोग में प्रयोग किया जाता है।

70. सिन्दूरिया (Pink Sapphire) or (Group of Corundum)—गुलाबी रंग का कुछ सफेदी लिए पानीदार नरम चमकदार रत्न होता है।

71. मरियम–सफेद संगमरमर जैसा होता है। इसकी पालिश अच्छी होती है।

72. डुर (Epidote)—गहरे कत्थई रंग का अपारदर्शक पत्थर होता है। इसके खरल भी बनते हैं।

73. सींजरी (Moss Agate)—यह अकीक की तरह अनेक रंगों का फूल-पत्तीदार पत्थर होता है।

74. कसौटी (Basanite)—काले रंग का होता है तथा सोना जांचने के काम आता है।

75. हालन लरजा (Sand Stone)—यह गुलाबी रंग का होता है जिसको हिलाने से इसका रंग भी हिलता है।

76. खारा (Tektites)—खरल बनाने के काम आने वाला हरापन लिए काला पत्थर होता है।

77. मकड़ा (Spider Stone)—हल्के काले रंग का होता है जिस पर मकड़ी का जाल जैसा होता है।

78. कुदरत (Kudrat)—सफेद व पीले छींटों वाला काला गुम पत्थर होता है।

79. सीवार (Sivar)—हरे रंग पर भूरे रंग की अपारदर्शक रेखा वाला रत्न है।

80. सीमरक (Prophyry)—पीलापन लिए हुए लाल रंग का रत्न होता है।

81. हवास (Hawas)—यह हरे रंग का कुछ सुनहरापन लिए हुए पत्थर होता है।

82. रोमनी (Romni)—यह रत्न कुछ स्याही लिए गहरे लाल रंग का होता है।

83. मारबल (Marble)—अनेक रंगों का होता है। मूर्तियाँ बनाने के काम आता है।

84. अम्बर (Ambar)—अम्बर एक प्रसिद्ध और मूल्यवान सुगन्धित पदार्थ है जो हिन्द महासागर, निकोबार और अफ्रीका के समुद्र तटों पर पाया जाता है। इसमें कस्तूरी जैसी सुगन्ध होती है। ऐसा समझा जाता है कि आज से लगभग 10 लाख वर्ष पहले पृथ्वी पर जो भयंकर प्रकार के भूकंप आए थे उनमें कुछ विशेष जाति के वृक्ष भूमि के गर्भ में समा गए और यहां की गर्मी से इन वृक्षों से जो राल निकली उस पर कुछ अन्य प्रकार के रासायनिक परिवर्तन हुए और वह पत्थर जैसे ठोस रूप में आ गई। अम्बर वास्तव में रत्न न होते हुए भी रत्न विज्ञान के विशेषज्ञों नें इसे रत्न माना है। ●

रत्न और ज्योतिष

रत्न और ज्योतिष का आपस में गहरा संबंध है। ऐसा कहा गया है कि रत्न सूर्य की किरणों को स्वयं में एकत्रित करके न सिर्फ मानव जीवन को प्रभावित करते हैं अपितु ग्रहों के दुष्प्रभाव को भी मिटाते हैं। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से हरेक ग्रह का एक प्रतिनिधि रत्न निर्धारित किया गया है, जो मनुष्य के जीवन में उस ग्रह के बुरे प्रभावों का निवारण करता है। रत्न व उपरत्नों का मनुष्य के जीवन पर निश्चित रूप से असर पड़ता है। इस विषय में हम भारतीय तथा पाश्चत्य दोनों ही विद्वान् एकमत हैं कि रत्न एवं उपरत्न ग्रहों के दुष्प्रभावों को दूर करने में समर्थ होते हैं। यह अलग बात है कि इस बारे में भारतीय तथा पाश्चात्य पद्धति भिन्न-भिन्न हैं। यहाँ इस विषय में हम भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों ही पद्धतियों का विवेचन संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके साथ ही साथ यहाँ पर एक प्रश्न यह भी उठता है कि रत्न मनुष्य के जीवन या ग्रहों को किस तरह से प्रभावित करते हैं। इस बारे में सर्वमान्य धारणा यह है कि विभिन्न रत्न या उपरत्न रंग एवं रश्मियों को अपने में समाहित करके ही मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसी कारण से कहा जाता है कि राशि रत्नों की अंगूठी बनवाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि उसका निचला भाग खुला रहे या उंगली से स्पर्श करता रहे, जिससे सम्बन्धित रंग एवं अदृश्य किरणें रत्न में से गुजरकर शरीर में प्रवेश कर सकें।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार

भारतीय ज्योतिष के अनुसार रत्न धारण करने की बहुत-सी विधियाँ प्रचलित हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित विधि व्यक्ति की राशि के आधार पर रत्न धारण करने की है। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति का नाम कमल है, इस प्रकार से वर्णाक्षर क्रम से कमल की मिथुन राशि हुई।

मिथुन का स्वामी ग्रह बुध होता है, बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न पन्ना होता है, इस प्रकार से कमल नामक व्यक्ति को बुध ग्रह हेतू पन्ना धारण करना चाहिये।

नाम राशि के विषय में भी ज्योतिषशास्त्र के विद्वानों में मतभेद है। इस बारे में कुछ लोग जन्म-राशि को महत्वपूर्ण मानते हैं तथा उनका कहना है कि जन्म-राशि के आधार पर ही रत्न धारण करना चाहिये। इसके अलावा कुछ विद्वान् प्रचलित नाम को ज्यादा महत्व देते हैं तथा उनकी मान्यता है कि प्रचलित नाम के आधार पर ही रत्न धारण करना चाहिये। नाम के विषय में हमारा अपना मात यह है कि नाम उसे कहते हैं जिसके पुकारने पर सोया हुआ व्यक्ति जाग जाये, जैसे—किसी व्यक्ति का जन्म का नाम गोगी है, किन्तु उसका प्रचलित नाम रमेश है। वह व्यक्ति अगर निद्रावस्था में है तो गोगी नाम से पुकारे जाने पर वह कभी भी जागने वाला नहीं है, क्योंकि गोगी नाम तो उसकी चेतना में कहीं है ही नहीं, हाँ, रमेश नाम से पुकारे जाने पर वह जरूर जाग जायेगा। फिर जहाँ तक जन्म-नाम का प्रश्न है तो जन्म-नाम केवल जन्मपत्री में ही होता है, जबकि ऐसे बहुत-से व्यक्ति होते हैं जिनकी जन्मपत्री होती ही नहीं है। इस प्रकार इस विषय में हमारा मत है कि व्यक्ति को प्रचलित नाम के आधार पर ही रत्न धारण करना चाहिये।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार रत्न पहनने की दूसरी विधि जन्म कुण्डली के आधार पर है। इसके आधार पर कुण्डली में यह देखकर रत्न धारण का विधान है कि किसी व्यक्ति पर किस ग्रह विशेष की दशा अथवा महादशा चल रही है तथा उसके द्वारा उसका क्या अनिष्ट हो रहा है अथवा होने वाला है। इस तरह से कुण्डली देखकर ज्योतिषी रत्न धारण करने की सलाह देते हैं।

पाश्चात्य धारणा के अनुसार

पाश्चात्य धारणा के अनुसार रत्न धारण करने की विधि सूर्य राशि के आधार पर मानी गयी है। इसके अनुसार, माना जाता है कि अमुक समयावधि में सूर्य अमुक राशि में अपनी प्रखर अवस्था में रहता है। इस प्रकार इस हिसाब से व्यक्ति की अमुक राशि हुई तथा उसे अमुक रत्न धारण करना चाहिये। उदाहरण के लिये, अगर किसी व्यक्ति का जन्म

21 मार्च से 19 अप्रैल के बीच हुआ है तो उसकी राशि मेष हुई, अत: उसे मूँगा अथवा उसके उपरत्न धारण करने चाहियें। पुस्तक में आगे यथास्थान इसका उल्लेख किया गया है।

राशि-रत्न, उपरत्न आदि नवग्रह ही होते हैं एवं इन नवरत्नों का वास्तविक जीवन में अपना महत्व है। रत्नों को केवल राशि जानकर ही नहीं पहनना चाहिए वरन् ग्रह-दशा जानकर ही विधि-विधान से किसी योग्य ज्योतिषी की आज्ञा से पहनना चाहिए। अन्यथा इससे लाभ के बजाए हानि होने लगती है। इसलिए यहाँ पर हम राशि के अनुसार कौन-सा रत्न-उपरत्न पहनना चाहिए, उसका वर्णन कर रहे हैं—

मेष (Aries)

(च, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)

इस राशि वाले व्यक्ति अत्यंत सरल, साहसी एवं संयमी होते हैं। आत्म-विश्वास की कमी नहीं होती। सरल हृदय होने के कारण दूसरे लोग सहज ही इनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। क्योंकि इस राशि का स्वामी मंगल है अत: ऐसे व्यक्तियों को मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

मूंगा (Coral)

कुछ व्यक्तियों की धारणा है कि मूंगा वास्तव में एक पौधा होता है, किन्तु यह धारणा गलत है। वास्तव में यह समुद्र के गर्भ में पाया जाता है और इसका निर्माण एक विशेष प्रकार के कीड़े द्वारा होता है। यह रत्न मुख्यत: लाल रंग का होता है, किन्तु यह सफेद, सिंदूरी एवं काले रंग में भी मिलता है। मूंगा मुख्यत: अल्जीरिया, ईरान की खाड़ी, हिन्द महासागर एवं इटली तथा जापान में पाया जाता है। असली मूंगे की पहचान यह है कि यह अत्यधिक चिकना होता है। असली मूंगे को यदि रक्त में रखा जाए, तो रक्त चारों ओर जम जाता है। इसी प्रकार यदि मूंगे पर पानी की नन्हीं बूँदें डाली जाएँ तो वह बूँदें नीचे नहीं गिरतीं। यदि असली मूंगे पर नमक का तेजाब डाला जाए तो उसके ऊपर झाग उठने आरंभ हो जाते हैं। असली मूंगे को यदि जलाया जाए तो वह पूरे का पूरा जल जाता है।

धारण करने की विधि व लाभ—मूंगा कम से कम सवा तीन रत्ती या इससे ऊपर का पहनना चाहिए।

मूंगा धारण करने से पहले उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करानी आवश्यक होती है। इसे मंगलवार के दिन सोने की अँगूठी अथवा चाँदी, ताँबे की अँगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए।

मूंगे के विषय में ऐसी मान्यता है कि इसे धारण करने से मंगल ग्रह की शांति होती है तथा रक्त संबंधी समस्त विकार दूर हो जाते हैं। मूंगा धारण करने वाले व्यक्तियों को भूत-प्रेत कष्ट नहीं देते और यदि मूंगा बच्चों को पहनाया जाए तो उन्हें नजर नहीं लगती। मूंगा वृश्चिक और मेष राशि वालों के भाग्य को जगाता है। मूंगा पहनने से मान-सम्मान में भी वृद्धि होती है।

मूंगा पहनने का मन्त्र–

"ऊँ क्रां क्रीं स: भौमाय नम:"

नोट–मूंगा अपना असर तीन वर्ष तक ज्यादा देता है।

वृष (Taurus)

(ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

इस राशि का स्वामी शुक्र ग्रह है। इस राशि वाले व्यक्ति कुशल एवं विनम्र होते हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी ये व्यक्ति प्रबल इच्छा शक्ति रखते हैं और किसी को भी अपना बना लेते हैं। ये व्यक्ति विलासी होने के साथ-साथ सौंदर्य प्रेमी भी होते हैं। इस राशि वाले व्यक्तियों को हीरा रत्न धारण करना चाहिए, किन्तु हीरा प्राप्त न हो तो उसके स्थान पर सफेद पुखराज अथवा स्फटिक भी धारण किया जा सकता है।

हीरा (Diamond)

अत्यधिक मूल्यवान एवं दुर्लभ होने के कारण इस रत्न को रत्न राज भी कहा जाता है। यह इतना कठोर होता है कि इससे काँच को आसानी से तोड़ा या काटा जा सकता है। हीरा वास्तव में शुद्ध कार्बन ही है जो कोयले की खानों से प्राप्त होता है। भारत में यह मध्य प्रदेश, तमिलनाडु,

गुजरात एवं उड़ीसा की खानों में पाया जाता है। हीरे की पहचान यह है कि इसे जलाया जाए तो यह गैस बनकर उड़ जाता है। इसके अतिरिक्त इसकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ती और यह छूने से ठंडा महसूस होता है। असली हीरे को यदि धूप में रखा जाए तो उसमें से सप्तरंगी किरणें निकलती हैं।

धारण करने की विधि व लाभ

हीरे को धारण करने से पहले उसकी प्राण-प्रतिष्ठा जरूरी होती है। इसे सोने या चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर अनामिका उँगली में धारण करना चाहिए। अँगूठी में हीरे को इस प्रकार जड़वाएं कि वह आपकी उँगली का स्पर्श करता रहे। हीरे को धारण करने से शुक्र ग्रह के समस्त दोष तो शांत होते ही हैं साथ ही ऐसी भी मान्यता है कि इसे धारण करने से धन-सम्पत्ति में वृद्धि होती है, मानसिक शांति मिलती है और मनुष्य जीवन भर निरोगी बना रहता है।

हीरा पहनने का मन्त्र—"ॐ द्रां द्रीं द्रौ स: शुक्राय नम:"

नोट—हीरा अपना ज्यादा असर सात वर्ष तक दिखाता है।

मिथुन (Gemini)

(का, की, कू, ध, ड़, छ, के, को, ह)

बुध ग्रह इस राशि का स्वामी है। इस राशि वाले व्यक्ति विनोदी एवं सरल हृदय वाले होते हैं। पांडित्य से पूर्ण ये व्यक्ति जीवन से कभी हार नहीं मानते और कठिनाइयों को भी हँसते-हँसते झेल जाते हैं। गंभीर न रहना और प्रत्येक समय मुस्कराते रहना इस राशि वालों का विशेष गुण होता है। शीतल प्रकृति के ये व्यक्ति समाज में सर्वत्र अपना प्रभाव जमाए रहते हैं। इस राशि के व्यक्तियों को पन्ना धारण करना चाहिए।

पन्ना (Emerald)

पन्ना भी मूल्यवान रत्न होता है जो ग्रेनाईट की चट्टानों से प्राप्त होता है। भारत में ये उदयपुर, अजमेर एवं छतरपुर में पाया जाता है।

धारण करने की विधि व लाभ

इस रत्न को धारण करने से बुध ग्रह से संबंधित सभी दोषों का नाश हो जाता है। इसके अतिरिक्त यह नेत्र रोग नाशक है और इसे धारण करने से मनुष्य वीर्यवान एवं बलवान होता है। इसे धारण करने से एक लाभ यह भी है कि इससे मनुष्य की बिखरी हुई चंचल चित्तवृत्तियाँ शांत होती हैं और मनुष्य को मानसिक शांति मिलती है। असली पन्ने को यदि लकड़ी पर रगड़ा जाए तो ऐसा करने से इसकी चमक फीकी नहीं पड़ती अपितु और बढ़ जाती है। पन्ने को सोने अथवा चाँदी की अँगूठी में मढ़वाकर दायें हाथ की कनिष्ठ उँगली में धारण करना चाहिए।

पन्ना पहनने का मन्त्र– "ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:"

नोट–पन्ना अपना ज्यादा असर तीन वर्ष तक दिखाता है।

कर्क (Cancer)

(हा, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

इस राशि का स्वामी चंद्रमा है। इस राशि के व्यक्ति अत्यंत भावुक, लज्जाशील एवं कल्पनाशील होते हैं। ऐसे व्यक्ति इतने उदार होते हैं कि दूसरों का दुख नहीं देख पाते। किसी भी स्थिति में निराश न होना और निरन्तर आगे बढ़ना ऐसे व्यक्तियों का विशेष गुण होता है। चंद्रमा संबंधी दोषों को शांत करने के लिए ऐसे व्यक्तियों को अपनी उँगली में मोती धारण करना चाहिए।

मोती (Pearl)

मोती खान से निकलने वाला रत्न नहीं है, यह एक जैविक रत्न है। मोती समुद्र में सीप के अन्दर से निकला हुआ रत्न है। मुख्यत: इसका रंग सफेद होता है। भारत में यह दरभंगा जिले में एवं अन्य देशों में चीन, जापान आदि में पाया जाता है। असली मोती की पहचान यह है कि इसकी चमक धुंधली नहीं पड़ती, अपितु स्थायी रहती है। इसके अतिरिक्त ये तारे की भाँति प्रकाशवान एवं चिकना होता है।

धारण करने की विधि व लाभ

मोती को धारण करने से जहाँ चंद्रमा संबंधी दोषों से राहत मिलती है वहीं इससे मानसिक शांति भी मिलती है और क्रोध शांत रहता है।

जिन लोगों के जीवन में अनिश्चितता रहती है, हमेशा विपरीत परिस्थितियां बनी रहती हैं, कुछ भी सोचने-समझने की शक्ति खत्म हो जाती है, किसी भी बात का निर्णय नहीं ले पाते हैं, उन लोगों को मोती पहनना चाहिए। मोती को सोने या चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए। इससे पूर्व प्राण-प्रतिष्ठा आवश्यक है। मोती कम से कम सवा चार रत्ती का पहनना चाहिए। मोती के नग की जगह अगर 109 मोती की माला पहनी जाये तो भी ठीक रहेगा।

मोती पहनने का मन्त्र

"ऊँ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रयसे नम:"

नोट-मोती अपना ज्यादा असर दो वर्ष एक माह 27 दिन तक दिखाता है।

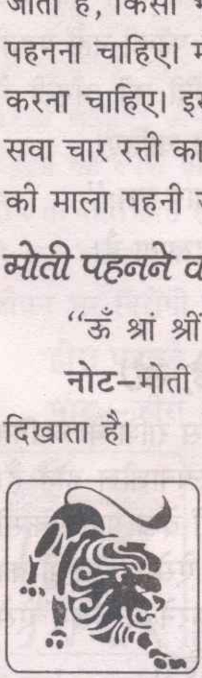

सिंह (Leo)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सूर्य ग्रह इस राशि का स्वामी है। इस राशि वाले व्यक्ति वैसे तो सरल एवं उदार हृदय वाले होते हैं। किन्तु इसके साथ ही ये वीर, स्वाभिमानी एवं जिद्दी भी होते हैं। इसके विषय में कहा जाता है कि ऐसे व्यक्ति जिस बात पर अड़ जाते हैं तो उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। इस राशि वाले व्यक्तियों को सूर्य संबंधी दोषों के लिए माणिक रत्न को धारण करना चाहिए।

माणिक (Ruby)

यह रत्न प्राय: लाख के रंग जैसा होता है और ग्रेनाइट चट्टानों से प्राप्त होता है। ऐसी चट्टानें हिमालय पर्वत पर पाई जाती हैं। असली

माणिक हथेली पर रखने से ताप का आभास होता है। इसके अतिरिक्त यदि इसे प्रात:काल के समय सूर्य के प्रकाश में देखा जाए तो इसमें से किरणें भी निकलती प्रतीत होती हैं।

धारण करने की विधि व लाभ

यह रत्न सूर्य ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है इसलिए इसको धारण करने से जहाँ सूर्य ग्रह संबंधी सभी दोष नष्ट होते हैं, वहीं इसके धारण करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है। इसके अलावा इसे धारण करने से मानसिक कष्ट दूर होकर असीम शांति मिलती है। यह रत्न वंश वृद्धिकारक भी माना जाता है। इसके उपयोग से डर, व्याधि, दुख, क्लेश, चिन्ता इत्यादि का नाश होता है। इस रत्न को पहनने से व्यक्ति के जीवन में ठहराव आता है। माणिक रत्न को सोने या चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए। यह कम से कम सवा चार रत्ती का पहनना चाहिए। इससे अधिक वजन का माणिक ज्यादा लाभकारी होता है। धारण करने से पूर्व प्राण-प्रतिष्ठा आवश्यक है।

माणिक पहनने का मन्त्र–"ऊँ हां हीं हौं स: सूर्याय नम:"

नोट–माणिक अपना ज्यादा असर चार वर्ष तक दिखाता है।

तुला (Libra)

(रा, री, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते)

इस राशि का स्वामी शुक्र माना गया है। इस राशि वाले व्यक्ति उदार हृदय होते हैं। अत्यंत बुद्धिमान ऐसे व्यक्ति प्राय: राजनीतिज्ञ होते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि इस राशि के व्यक्ति कुशल विचारक होने के कारण सफल दार्शनिक भी होते हैं। अपने ही विचारों में लीन ऐसे व्यक्ति एक प्रकार से दुहरा जीवन जीते हैं। इनके अंदर कुछ होता है और देखने में ये कुछ और नजर आते हैं। इस राशि के व्यक्तियों को शुक्र के दोषों की शांति के लिए हीरा रत्न अथवा सफेद पुखराज धारण करना चाहिए।

नोट–वृष और तुला दोनों ही राशि वालों को हीरा पहनना चाहिए और पुखराज का वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं।

कन्या (Virgo)

(ढा, पा, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

इस राशि का स्वामी बुध ग्रह है। क्योंकि बुध इस राशि का स्वामी है अत: इस राशि वाले व्यक्ति अत्यंत बुद्धिमान एवं विद्या प्रेमी होते हैं। बुद्धि चातुर्य के साथ-साथ इनका हृदय भी विशाल होता है। इस राशि के व्यक्ति स्वयं तो दूसरों को सहयोग देते हैं पात्र इन्हें दूसरों का सहयोग कठिनता से प्राप्त होता है। उदार हृदय वाले ऐसे व्यक्ति अकसर अपने मित्रों के हाथों छले जाते हैं। इस राशि के व्यक्तियों को बुध ग्रह की शांति के लिए पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना उपलब्ध न होने पर हरा हकीक धारण कर सकते हैं।

नोट–मिथुन और कन्या दोनों ही राशि वालों को पन्ना रत्न पहनना चाहिए और पन्ना का वर्णन हम पहले कर चुके हैं।

वृश्चिक (Scorpio)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

इस राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। इस राशि के व्यक्ति सामान्यत: स्पष्टवादी होते हैं। ये उनका गुण भी होता है और अवगुण भी। कारण यह है कि अपने इसी स्वभाव के कारण ये आलोचनाओं का शिकार बनते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ व्यक्ति इन्हें अहंकारी भी समझ बैठते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि ऐसे व्यक्तियों में अहंकार नाममात्र को भी नहीं होता। इस राशि वाले व्यक्ति हठी भी होते हैं, किन्तु ये हठ उनके स्वाभिमान के कारण होता है। कारण स्पष्ट है कि ये झुकना नहीं जानते। इसके अतिरिक्त यह भी सच है कि ये नीतिज्ञ भी होते हैं और नीति के बल पर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान खोज लेते हैं। इस राशि के व्यक्तियों को मंगल ग्रह की शांति के लिए मूंगा रत्न धारण करना चाहिए। धारण करने से पूर्व प्राण-प्रतिष्ठा आवश्यक है।

नोट–मेष तथा वृश्चिक दोनों ही राशि वालों को मूंगा पहनना चाहिए और मूंगा के बारे में हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं।

धनु (Sagittarious)

(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ़ा, भे)

बृहस्पति इस राशि का स्वामी है। इस राशि के व्यक्ति अत्यंत सौम्य, विनम्र एवं उदार होते हैं। ऐसे व्यक्ति न तो कभी किसी को दुख देते हैं और न ही किसी का दुख देख सकते हैं। परोपकारी प्रकृति के ये व्यक्ति सदैव दूसरों की सेवा के लिए तैयार रहते हैं। बुद्धिमानी में इनका मुकाबला नहीं होता। यदि ऐसे व्यक्ति अपनी बुद्धि का प्रयोग रचनात्मक कार्यों में करें तो ये उच्च कोटि के विद्वान सिद्ध होते हैं। बृहस्पति ग्रह से संबंधित दोषों की शांति के लिए ऐसे व्यक्तियों को पीला पुखराज अथवा पीला हकीक धारण करना चाहिए।

पुखराज (Yellow Saffhire)

पुखराज मुख्यत: पीले रंग का होता है और ये ग्रेनाइट चट्टानों में पाया जाता है। भारत में यह विंध्याचल, हिमालय एवं उड़ीसा आदि स्थानों में पाया जाता है। श्रीलंका, ब्राजील एवं जापान जैसे देशों में भी पुखराज पाया जाता है। असली पुखराज पारदर्शी होने के साथ-साथ चिकना भी होता है। इसके अलावा असली पुखराज को यदि सूर्य के सामने देखा जाए तो इसमें से किरणें फूटती हैं।

पुखराज धारण करने की विधि व लाभ

इस रत्न को धारण करने से जहाँ बृहस्पति ग्रह की शांति होती है वहीं इससे व्यापार में वृद्धि भी होती है। यदि किसी का विवाह न हो रहा हो अथवा विलम्ब से होने वाला हो तो उसके लिए पुखराज एक उत्तम रत्न माना गया है। कुछ विद्वान इसे बल, वीर्य एवं नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाला तथा चर्म रोगों का नाशक भी मानते हैं। पुखराज को सोने अथवा चाँदी की अँगूठी में तर्जनी उँगली में धारण करना चाहिए। यदि पुखराज

उपलब्ध न हो तो उसके स्थान पर पीला हकीक भी धारण किया जा सकता है।

पुखराज पहनने का मंत्र–"ॐ ग्रां, ग्रीं, ग्रौ स: गुरुवे नम:"।

नोट–पुखराज अपना ज्यादा असर चार वर्ष तक दिखाता है।

मकर (Capricornus)

(भो, ज, जी, खे, खू, खी, खो, गा, गी)

इस राशि का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। इस राशि के व्यक्तियों में एक विशेष गुण यह होता है कि क्रोधी और झगड़ालू न होते हुए भी निर्भय प्रकृति के होते हैं। भयभीत ये किसी से नहीं होते और जो मन में आता है वही कह डालते हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्टवादी होते हैं। अत: इनके आलोचकों एवं विरोधियों की संख्या भी कम नहीं होती। फिर भी न तो ये घबराते हैं और न ही सत्य बोलने से हिचकिचाते हैं, किन्तु यह भी सत्य है कि ऐसे व्यक्ति सरल हृदय होते हैं। यदि सामान्य भाषा में कहा जाए तो दिल के काले नहीं होते और सर्वदा दूसरों के हित की बात सोचते हैं शनि ग्रह के दोषों के निवारण एवं मानसिक शांति के लिए ऐसे व्यक्तियों को नीलम धारण करना चाहिए।

नीलम (Blue Saffhire)

इस रत्न का रंग गहरा नीला होता है और यह विभिन्न प्रकार की चट्टानों में पाया जाता है। भारत में यह कश्मीर घाटी में एवं अन्य देशों में श्रीलंका, बैंकाक एवं आस्ट्रेलिया में मिलता है। असली नीलम पारदर्शी, चमकदार और चिकना होता है।

नीलम धारण करने की विधि व लाभ

इसके विषय में कहा गया है कि यदि किसी व्यक्ति पर शनि की साढ़े सती चल रही हो तो वह नीलम पहनने से प्रभावहीन हो जाती है। यदि दुर्घटना एवं चोरी का भय हो तब भी नीलम धारण करना चाहिए। नीलम को सोने अथवा चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

नीलम पहनने का मंत्र–"ऊँ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:"

या

"ऊँ हीं श्री शनैचराय नम:"

नोट–नीलम अपना ज्यादा असर पाँच वर्ष तक दिखाता है।

कुम्भ (Aquarius)

(गु, गे, गो, सा, सी, सू, सो, दा)

इस राशि का स्वामी शनि ग्रह है। इस राशि वाले व्यक्ति अत्यंत धीर-गंभीर एवं शांत स्वभाव वाले होते हैं, किन्तु यदि कहीं इनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है तो ये अत्यंत उग्र भी हो उठते हैं। अकारण ही किसी से झगड़ा ये करते नहीं, किन्तु झगड़ा होने पर कुछ भी कर बैठते हैं। इस राशि के व्यक्तियों की एक विशेषता यह होती है कि ये धर्म-कर्म में विशेष रुचि रखते हैं। सत्य एवं न्याय का मार्ग ये कभी नहीं छोड़ते, किन्तु किसी के आगे न झुकने के कारण इनके मित्रों की संख्या बहुत अधिक नहीं होती। स्पष्टवादी होने के कारण बहुत-से व्यक्ति इनके विरोधी भी बन जाते हैं। इस राशि के व्यक्तियों को शनि ग्रह एवं मन की शांति के लिए नीलम रत्न धारण करना चाहिए। नीलम पहनने से न केवल शनि का दुष्प्रभाव नष्ट होता है अपितु अन्य ग्रहों की भी शांति होती है। नीलम को धारण करने से पूर्व उसकी प्राण-प्रतिष्ठा आवश्यक है।

नोट–नीलम मकर तथा कुंभ दोनों राशि के लोगों को पहनना चाहिए तथा इसका वर्णन पहले भी किया जा चुका है।

मीन (Pisces)

(दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)

ऐसे व्यक्तियों के विषय में कहा जाता है कि ये जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं उसे पूरा करके ही

छोड़ते हैं। हताश ये कभी होते नहीं और कठिनाइयाँ आने पर भी निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं। दया एवं करुणा इनमें कूट-कूटकर भरी होती है। अत: किसी का दुख इनसे सहन नहीं होता। इस राशि के व्यक्तियों को बृहस्पति ग्रह की शांति के लिए पीला पुखराज धारण करना चाहिए।

नोट-चूँकि धनु और मीन दोनों राशियों का स्वामी गुरु ग्रह है इसलिये दोनों राशियों पर पुखराज रत्न तथा समान उपरत्न चलते हैं, इसलिये मीन राशि वाले पुखराज के बारे में जानने हेतु पहले पृष्ठों पर दिये गये विवरण को पढ़ें। पुखराज धनु तथा मीन दोनों राशियों पर समान असर प्रदर्शित करता है, इसलिये हम पुखराज के बारे में पृथक रूप से विवरण नहीं दे रहे हैं। दोनों राशि वालों के लिए पुखराज का विवरण और पहनने की विधि एकसमान है।

इस तरह से, सभी बारह राशियों के बारे में अध्ययन से हमें पता चलता है कि मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ तथा मीन इन बारह राशियों पर हीरा, मूँगा, पन्ना, मोती, माणिक, पुखराज, नीलम ये सात रत्न प्राचीन ज्योतिष के हिसाब से चलते हैं। इसके बाद दो रत्न राहु-गोमेद, केतु-लहसुनिया बचे रहते हैं, इनकी कोई राशि न होते हुये भी यह मानव जीवन में अपना विशेष असर छोड़ते हैं। इन दोनों को छाया ग्रह माना गया है। जन्म कुण्डली के हिसाब से जिन व्यक्तियों की कुण्डली में इनकी दशा हो, उन्हें यह रत्न जरूर पहनने चाहियें।

अत: अब हम राहु ग्रह के लिए गोमेद, केतु ग्रह के लिए लहसुनिया इत्यादि के विषय में वर्णन करेंगे।

राहु ग्रह के निवारण हेतु

गोमेद को राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है, इसलिये राहु ग्रह से सम्बन्धित सभी दोष तथा राहु दशा जनित समस्त बुरे प्रभावों के लिए गोमेद पहनना अति लाभकारी होता है। इस प्रकार से दैत्य ग्रह राहु की दशा को ठीक करने हेतु गोमेद पहनना चाहिये।

गोमेद (Hessonite)

गोमेद एक खनिज पत्थर है। अपनी रासायनिक संरचना में यह जिर्कोनियम का सिलिकेट रूप माना जाता है। इसकी उत्पत्ति सायनाइट की शिलाओं के भीतर होती है। भारत में गोमेद शिमला, कश्मीर, कुल्लू, मैसूर, बिहार, उड़ीसा, इत्यादि में पाया जाता है। विदेशों में यह बर्मा, श्रीलंका, थाइलैंड इत्यादि में पाया जाता है। गोमेद सुर्ख लाल या गो मूत्र के रंग में होता है। यह एक पारदर्शी रत्न है। गोमेद के अन्दर जाला, धुंधलापन अथवा कट के निशान अवश्य पाये जाते हैं। इसकी कीमत इसकी पारदर्शिता पर निर्भर करती है। उत्तम गोमेद में पारदर्शिता ज्यादा होती है, श्रीलंका तथा उड़ीसा की खदानों से प्राप्त गोमेद सबसे अच्छी किस्म का माना जाता है। श्रीलंका की खदानों का गोमेद मध्यम तथा बिहार की खदानों का गोमेद काफी कम मूल्य पर प्राप्त हो जाता है। हालांकि गोमेद अति मूल्यवान नहीं होता है, किन्तु अपने आकर्षक रंग एवं गुणों के कारण इसे नवरत्नों में सम्मानित स्थान प्राप्त है और इसकी कीमत से ज्यादा इसके लाभ हैं।

गोमेद की विशेषता और पहनने से लाभ

गोमेद राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। इस प्रकार गोमेद धारण करने से राहु ग्रह के अनिष्ट असर शान्त होते हैं। राहु ग्रह के प्रकोप से मानसिक तनाव बढ़ता है, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आता है, कार्यकुशलता में निर्णायक कमी आती है, निर्णय लेने की क्षमता क्षीण हो जाती है और योजनायें असफल हो जाती हैं। ऐसे व्यक्तियों को गोमेद जरूर धारण करना चाहिये। गोमेद पहनने से शत्रु पक्ष कमजोर होता है तथा शत्रु गोमेद धारण करने वाले के समक्ष टिक नहीं सकता है, इससे शत्रुओं का डर भी समाप्त होता है। गोमेद मुकदमें के मामले में कोर्ट-कचहरी के कार्यों में भी अति लाभकारी है। पेट सम्बंधी रोगों का कारण भी राहु ग्रह को माना गया है।, इस प्रकार गोमेद धारण करने से पाचन तन्त्र मजबूत होता है, जिससे पेट संबंधी रोगों में भी शान्ति मिलती है।

इस रत्न को पहनने हेतु राशि का विचार नहीं किया जाता है।

गोमेद पहनने की विधि

गोमेद गोमूत्र रंग का होता है तथा ग्रेनाइट पत्थर की चट्टानों में पाया जाता है। भारत में ये उड़ीसा, बिहार व कश्मीर में पाया जाता है। इसको पहनने से राहु-ग्रह की शांति होती है तथा शत्रु भी परास्त होते हैं। यह रत्न चाँदी या सोने में जड़वाकर ही पहनना चाहिए।

गोमेद कम से कम पाँच रत्ती का धारण करना चाहिये। इससे अधिक वजन का गोमेद शीघ्र लाभ पहुँचाता है। गोमेद को चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर कच्चे दूध तथा गंगाजल से धोकर शनिवार के दिन निम्न मन्त्र का जाप करते हुये मध्यमा उँगली में धारण करना चाहिये।

गोमेद धारण करने का मन्त्र–

"ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः"

नोट–गोमेद जिस दिन धारण किया जाता है उस दिन से तीन साल तक धारणकर्ता पर अपना असर ज्यादा करता है।

केतु ग्रह के निवारण हेतु

साधारण भाषा में इस रत्न को केतु ग्रह का रत्न माना जाता है।

ऐसा माना जाता है इसे धारण करने से केतु ग्रह के सभी दोष शान्त हो जाते हैं।

लहसुनिया (Cat's Eye)

लहसुनिया एक तरह का खनिज रत्न है। अपनी रासायनिक संरचना में यह बैरीलियम एक एल्यूमीनेट होता है। यह हल्का पीलापन रंग लिए होता है। इसमें अल्प मात्रा में अयम तथा क्रोमियम तत्व भी होता है। इसकी सतह पर बिल्ली की आँख की भाँति सफेद रंग का सूत या धारीं होती है जोकि इसको हिलाने पर चलती हुई प्रतीत होती है। कुल मिलाकर यह बिल्ली की आँख जैसा दिखायी देता है इसीलिये अंग्रेजी में इसे 'कैट्स आई' (Cat's Eye) कहते हैं। यह रत्न जहाँ केतु ग्रह के दुष्प्रभाव को नष्ट करता है, वही यह दुख-दरिद्रता व व्याधियों का भी नाश करता

है। बहुत थोडी मात्रा में लहसुनिया श्याम आभायुक्त भी पाया जाता है। लहसुनिया ब्राजील, श्रीलंका, चीन तथा बर्मा में होता है। भारत में यह प्रमुख रूप से उड़ीसा में काफी मात्रा में पाया जाता है।

लहसुनिया की विशेषता और पहनने से लाभ

लहसुनिया दानव ग्रह केतु का प्रतिनिधित्व रत्न है, इस प्रकार से लहसुनिया पहनने से केतु ग्रह जनित सभी दोष शान्त हो जाते हैं, राहु की दशा में भी यह रत्न काफी असरकारी है तथा राहु, केतु, शनि तीनों की दशा में भी यह अपना प्रभाव विशेष रूप से दिखाता है। लहसुनिया धारण करने से बल, तेज, पराक्रम, सम्पत्ति, सुख, आनन्द, पुत्र की प्राप्ति होती है। यह दिमागी परेशानियाँ, शारीरिक दुर्बलता, दु:ख, दरिद्रता, भूत-व्याधा से छुटकारा दिलाता है। लहसुनिया अगर अनुकूल आ जाये तो यह धन-दौलत में गति से वृद्धि करता है। आकस्मिक दुर्घटना, गुप्त शत्रु से भी यह रक्षा करता है। यह रत्न वायु गोला तथा पित्त नाशक भी है। इसे पहनने से रात्रि में बुरे स्वप्न, भूत बाधा भी नहीं आते हैं, एवं यह नेत्र सम्बधी रोगों का भी निवारण होता है। इसे लॉकेट के रूप में पहनने से यह दमे तथा श्वांस नली की सूजन में आराम पहुँचाता है।

लहसुनिया पहनने की विधि

लहसुनिया का वजन कम से कम 5 रत्ती से कम का असरहीन होता है तथा जितना वजनदार होता है, उतना ज्यादा लाभकारी होता है, इसलिये लहसुनिया 5 रत्ती अथवा इससे ज्यादा वजन का धारण करना चाहिये। इसे चाँदी की अँगूठी में जड़वाना चाहिये। लहसुनिया की अँगूठी को बुधवार अथवा शनिवार के दिन कच्चे दूध तथा गंगाजल से शुद्ध करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुये अनामिका उँगली में धारण करना चाहिये।

लहसुनिया पहनने का मन्त्र–

"ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं स: केतवे नम:"

नोट–लहसुनिया जिस दिन धारण किया जाता है, उस दिन से तीन साल तक धारणकर्त्ता पर अपना प्रभाव अधिक प्रदर्शित करता है।

स्फटिक (Rock Crystal)

स्फटिक को हीरे का उपरत्न माना गया है, इसलिये इसे शुक्र रत्न भी कहते हैं। स्फटिक को बिल्लौर, काँचमणि, बर्फ का पत्थर और अंग्रेजी में रॉक क्रिस्टल कहा जाता है। यह एक पारदर्शी रत्न हैं, इसे स्फटिक मणि भी कहा जाता है। स्फटिक पहाड़ों पर बर्फ के नीचे विभिन्न छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है, यह बर्फ के समान पारदर्शी-पन लिये सफेद रंग का रत्न होता है।

स्फटिक बेशक उपरत्नों की सूची में आता है, किन्तु इसका असर रत्नों से भी ज्यादा लाभकारी होता है, इसलिये इसका नाम स्फटिक मणि पड़ा है। यह कई रत्नों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

स्फटिक पत्थर को काट-तराश कर बहुत-सी डिजाइन की माला, श्रीयंत्र शिवलिंग, भगवान की मूर्तियाँ और लॉकेट आदि बनाये जाते हैं। यह कटिंग तथा पॉलिश के बाद बहुत ही सुन्दर हो जाता है।

चूँकि स्फटिक मणि है तथा इसमें भगवान का वास है, इस प्रकार से इसके बनाये गये धार्मिक खण्डों की पूजा-अर्चना का विशेष महत्व है। स्फटिक शिवलिंग और मूर्तियों को विराजमान करने हेतु सामान्यत: प्राण-प्रतिष्ठा की जरूरत नहीं रहती है।

स्फटिक की माला बहुत ही ज्यादा शुद्ध तथा आध्यात्मिक एवं शीतवयी जानी जाती है। स्फटिक की माला पर किसी भी मंत्र का जांप करने से वह मन्त्र बहुत जल्दी ही सिद्ध हो जाता है और यह असाधारण रूप से विशेष फलदायिनी और सर्वोत्तम मानी गयी है। इस माला पर लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा तथा गायत्री माता के मन्त्र का जाप करने से एकदम सिद्धि की प्राप्ति होती है। यह माला हमेशा ही लाभ देने वाली होती है।

नवरत्न अर्थात् नौ रत्न

प्राचीन मान्यता के अनुसार, नवरत्नों का सम्बन्ध नौ प्रकार के ग्रहों से होता है, क्रमश: मंगल ग्रह का सम्बन्ध मूँगा, चन्द्रमा का मोती, सूर्य का माणिक, बुध का पन्ना, बृहस्पति का पुखराज से, शुक्र का हीरे से,

शनि का नीलम, राहु का गोमेद तथा केतु का लहसुनिया से है, इस प्रकार से नौ ग्रहों की शान्ति के लिये नवरत्न को पहना जाता है।

रत्न अँगूठी धारण करने के बारे में यह नियम है कि विभिन्न रत्नों की अँगूठी धारण की जाये अथवा नवरत्नों की अँगूठी, माला, ब्रासलेट या पेन्डल पहना जाये, क्योंकि ग्रहों की महादशायें बदलती रहती है।

ज्योतिषों के अनुसार, जब सौर मण्डल के क्रूर तथा अनिष्टकारी ग्रह अपनी गति बदलते हैं तो जहाँ-जहाँ जाते हैं अपनी विषमयी किरणों के प्रभाव से वहाँ रहने वालों की बुद्धि, स्वास्थ्य और जीवन पर अपना बुरा प्रभाव डालते हैं। इन्सान के जीवन में सुख-दुःख, उत्थान-पतन, लाभ-हानि सब कुछ इन ग्रहों के लाभ या हानि के असर से होता है। ऐसी स्थिति कब आयेगी जब कोई ग्रह हमारे साथ अपना बुरा असर डालेगा, यह हम हर वक्त नहीं जान सकते हैं, इसी परेशानी से बचने हेतु नवरत्न पहने जाते हैं।

नवरत्न मनुष्य की अभीष्ट ग्रहों के बुरे असर से रक्षा करता है। नवरत्न धारण करने से हमारे जो ग्रह शुभ हैं वह इन्हें और भी ज्यादा लाभकारी बनाते हैं, जिससे वह हमारे लिये ज्यादा लाभकारी बनते हैं। कभी-कभी, किसी-किसी कुण्डली में ग्रहों की महादशा ऐसी बन जाती है कि यह फैसला लेना मुश्किल हो जाता है कि कौन-सा रत्न पहनना लाभकारी है तथा कौन-सा पहनना हानिकारक है, ऐसी स्थिति में नवरत्न पहनना चाहिये।

नवरत्न धारण करने से यश, धन, सुख-सम्पदा, मान-प्रतिष्ठा, सन्तान सौभाग्य एवं पारिवारिक सुख, मानसिक, सुख सब कुछ भरपूर मात्रा में प्राप्त होता है। इसे पहनने से हर तरह के दुष्य प्रभाव दूर होते हैं, रोगों में लाभ मिलता है और आयु भी लम्बी होती है।

नवरत्न को कोई भी धारण कर सकता है, यह हर राशि वाले के लिए समान रूप से शुभकारी होता है। इसे धारण करके सभी राशि वाले लाभ उठा सकते हैं। इसको धारण करने हेतु किसी भी ज्योतिष या पण्डित जी वगैरह की जरूरत नहीं होती है। हर हाल में पहनने वाले को लाभ ही पहुँचाते हैं, कभी भी नुकसान नहीं देते हैं। नवरत्न विशेषतः सोने में अथवा चाँदी में पहनने चाहियें।

शंख

शंख से हरेक व्यक्ति परिचित है। प्राचीन काल से आध्यात्मिक, धार्मिक पूजा-पाठ में शंख लाभकारी रहता है। अपने गुणों तथा प्रभावशीलता के कारण हिन्दू पूजा पद्धति में शंख एक अत्यन्त शुद्ध पूज्य वस्तु रही है। शंख बहुत ही प्राचीन युगों में भी आध्यात्मिक और धार्मिक स्वरूप के बारे में काफी वर्णन है। इसे लक्ष्मी का सहोदर और भगवान विष्णु का प्रिय पात्र माना जाता है इसीलिये आज भी कोई मांगलिक कार्य हो या मन्दिर में पूजा-अर्चना, आरती हो अथवा कोई शुभ कार्य हो, शंखनाद जरूर ही किया जाता है। शंख का घोष वातावरण में नवचेतना कर देता है। शंख से निकलने वाली ध्वनि से मन में एक अनोखी पवित्रता, आध्यात्मिकता और आस्तिकता का संचार होता है। शंख का उपयोग करना बहुत शुभ और मंगलकारी है। शंख दो प्रकार के होते हैं—

(1) वामवर्ती शंख (2) दक्षिणावर्ती शंख।

वामवर्ती शंख–वामवर्ती शंख अधिक मात्रा में मिलते हैं। वामवर्ती शंख उन्हें कहते हैं, जिनका पेट बायीं तरफ खुलता है। यह शंख अक्सर आसानी से मिल जाते हैं। यह विभिन्न प्रकार के होते हैं, इनका मुँह ऊपर से कटा हुआ रहता है। यह बजाने के काम में आता है। बजाने वाला शंख सबसे उत्तम द्वारिका का होता है। इसको बजाने के बहुत से लाभ हैं, कुछ लाभ की चर्चा हम कर रहे हैं।

वामवर्ती शंख बजाने के काम में आता है। पूजा-पाठ में शंख ध्वनि लाभकारी मानी जाती है। शंख की ध्वनि से देवता भी प्रसन्न होते हैं। जहाँ तक शंख की आवाज जाती है, वहाँ तक के वातावरण की पवित्र ध्वनि इन आत्माओं हेतु बहुत कष्टदायक होती है, ये इसकी आवाज को सहन नहीं कर सकते हैं।

दक्षिणावर्ती शंख–दक्षिणावर्ती शंख बहुत ही कम मात्रा में प्राप्त होते हैं। दक्षिणावर्ती शंख उन शंखों को कहते हैं, जिनका पेट दाहिने ओर खुलता है। दक्षिणावर्ती शंख को दाहिनावर्ती शंख, विष्णु शंख, जमना

शंख तथा लक्ष्मी शंख भी कहा जाता है। दक्षिणावर्ती शंख की उत्पत्ति के बारे में पौराणिक ग्रन्थों में इस तरह से लिखा है—

समुद्र मन्थन में जब यह शंख निकला तो भगवान विष्णु ने इसे अपने दाहिने हाथ में पहना था, इसीलिये यह भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी जी का प्रिय पात्र है।

पूजा के लिये दाहिनावर्ती शंख छोटा अथवा बड़ा कोई भी हो, सबका असर एक सा ही होता है। दाहिनावर्ती शंख में भरा हुआ साधारण जल भी पवित्र नदियों के जलों के समान लाभ देने वाला होता है, इसलिये भगवान को स्नान कराने के हेतु दाहिनावर्ती शंख में जल भरकर कराया जाता है। इसमें जल भरकर सूर्य भगवान पर भी चढ़ाया जाता है। दक्षिणावर्ती शंख धनदायक तथा आर्थिक समृद्धिकारी होता है क्योंकि यह समुद्र मंथन से निकला हुआ शंख है इसलिये ऐसी मान्यता है कि जिस घर में दक्षिणावर्ती शंख की पूजा होती है, वहाँ लक्ष्मी जी का वास होता है और लक्ष्मी जी खुश होकर पूजा करने वाले की आर्थिक विवशताओं को दूर करके उन्हें धनवान और आर्थिक समृद्धिकारी बना देती हैं।

पारद शिवलिंग की महिमा

पारद शिवलिंग की महिमा निराली है, जिसका वर्णन कुछ शब्दों में करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

पारद को आयुर्वेद में शिव-वीर्य माना गया है। पारद भगवान शिव का वीर्य होने की वजह से साक्षात् शिवरूप है। संसार की समस्त आश्चर्यजनक तथा सिद्धि देने वाली वस्तुओं में पारद शिवलिंग का बहुत ही महत्व है। शास्त्रों तथा प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार हिमालय पर्वत पर भगवान शिव स्वयं ही माँ भगवती से कहते हैं कि जो व्यक्ति पारे के स्थिर एवं ठोस लिंगाकार स्वरूप की पूजा करते हैं उनके घर में कभी दरिद्रता नहीं आती तथा न ही जीवन में मृत्यु का भय रहता है।

पारद शिवलिंग (रसलिंग) का दर्शन व पूजन करने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है और मनुष्य को अनुपम आनन्द भी प्राप्त होता है।

चूँकि पारा शिव-वीर्य है, इसलिये यह स्वयं में अति प्रतिष्ठित है। इसलिये इसकी प्रतिष्ठा विशेष रूप से नहीं करवानी पड़ती है। दुनिया में शंकर भगवान के लिंग की पूजा की जाती है और शिव-वीर्य के रूप में पारद का ठोस शिवलिंग भी हमें प्राप्त होता है तो ऐसे शिवलिंग की महत्वता सर्वाधिक है। पारद शिवलिंग के बारे में कहा जाता है कि जो फल सहस्त्र करोड़ शिवलिंग पूजा करने से मिलता है वह फल पारद शिवलिंग के दर्शन मात्र से प्राप्त होता है। पारद शिवलिंग की महामृत्युंजय मंत्र से पूजा करनी चाहिये।

हकीक (Agate)

यह सुलभता से मिलने वाला सबसे सस्ता पत्थर होता है। हकीक कई रंगों में पाया जाता है, जैसे—सफेद, दूधिया, पीला, लाल, काला, हरा, नीला आदि। इस पत्थर पर अक्सर धारियाँ-सी अथवा डोरियाँ पड़ी रहती हैं। यह पत्थर बहुत कठोर होता है। हकीक मूर्तियाँ बनाने के काम में आता है, इस पर बहुत सुन्दर नक्काशी की जाती है। इसके रंगों के हिसाब से इसके नगों का उपयोग बहुत सी राशियों में भी किया जाता है। हकीक रत्नों से भी अधिक लाभकारी होता है। यह एक अलौकिक रत्न है, इस रत्न में दैवीय शक्ति होती है, यह धारणकर्त्ता को बहुत ही ज्यादा लाभ पहुँचाता है। इसको बहुत-सी बीमारियों में भी, फकीर लोग इसके ऊपर की धारियों और रंगीन छींटो के हिसाब से लोगों को पहनवाते हैं। देखने में आया है कि यह बेहद कारगर साबित होता है। हकीक आने वाली परेशानियों की सूचना देकर परेशानियों को अपने ऊपर झेलकर धार को सुरक्षा देता है। हकीक से शिवलिंग एवं बहुत सी मूर्तियाँ भी बनायी जाती है। हकीक पत्थर की मालायें बहुत से ग्रहों की शान्ति हेतु पहनी जाती हैं तथा इस पर बहुत से मंत्रों तथा ग्रहों का जाप भी किया जाता है।

अष्ट धातु

आठ धातुओं को सन्तुलित मात्रा में लेकर उन्हें मिश्रण करके तैयार की गयी मिश्रित धातु अष्ट धातु कहते हैं। अष्ट धातु की अँगूठी, छल्ले,

ब्रासलेट, लॉकेट इत्यादि बनते हैं। इसका उपयोग यन्त्र इत्यादि बनाने में भी किया जाता है।

ज्योतिष में जिस तरह से बहुत से ग्रहों के बुरे असर को नष्ट करने हेतु विभिन्न रत्न पहनने का विधान है, उसी तरह से ज्योतिष में बहुत से ग्रहों के बुरे असर से बचने हेतु विभिन्न धातु धारण करने का भी प्रावधान है, जिस तरह से रत्न व्यक्ति तक स्वयं में ग्रहों के बुरे असर नहीं आने देते उसी प्रकार धातुयें भी अभीष्ट ग्रहों के विनाशकारी प्रभाव से पहनने वाले की रक्षा करती हैं। जिस तरह से विभिन्न ग्रहों के प्रतिनिधित्व रत्न हैं, उसी तरह से विभिन्न ग्रहों के विभिन्न प्रतिनिधित्व धातुयें भी हैं, अगर कोई व्यक्ति रत्न धारण करने में असमर्थ है तो वह ग्रह के अनुसार धातु भी पहन सकता है।

जिन आठ धातुओं को धारण करने का ज्योतिष विज्ञान में विधान है वह आठ धातु इस प्रकार हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, जस्ता, रांगा, सीसा तथा पारा। ग्रहों के हिसाब से ग्रह तथा धातु का सम्बन्ध हम नीचे वर्णन कर रहे हैं—

ग्रह	**धातु**
सूर्य, मंगल, गुरु	सोना, ताँबा
शुक्र, चन्द्रमा	चाँदी
बुध	पारा
शनि	रांगा, सीसा, लोहा
राहु	ताँबा
केतु	जस्ता

इस तरह से नौ ग्रहों हेतु आठ विभिन्न धातुओं को धारण करने का विधान है। चूँकि अष्ट धातु में आठों धातुओं का मिला जुला रूप होता है, इसलिये यह बहुत ही शुद्ध तथा बहुत ही विशिष्ट धातु कहलाती है। अष्ट धातु से बनी अँगूठी और छल्ले, यन्त्रों और मन्त्रों वाली अँगूठियाँ पहनने से पहनने वाले को मानसिक और शारीरिक सुख तो मिलता ही साथ में बहुत-सी जटिल बीमारियों से राहत भी मिलती है।

इस धातु से निर्मित यन्त्रों की यह विशेषता होती है कि यह दूसरी धातुओं से निर्मित यन्त्रों के मुकाबले ज्यादा जल्दी अपना असर दिखाते हैं, क्योंकि अष्ट धातु दूसरे सभी धातुओं की तुलना में ज्यादा शुभ मानी जाती है, इसलिये अष्ट धातु निर्मित यन्त्र भी दूसरे यन्त्रों की तुलना में ज्यादा शुभदायक और जल्दी ही सिद्ध होने वाले समझे जाते हैं। अष्ट धातु यन्त्र प्लेटाकार, मेरु आकार तथा कछुआकार इत्यादि रूप में बनाये जाते हैं। इन यन्त्रों को आकर्षण बनाये हेतु इन पर सोने, चाँदी, का पानी भी चढ़ाया जाता है। अष्ट धातु के बनाये हुये यन्त्र, रत्नों और उपरत्नों के समान ही फल देने वाले होते हैं। अपनी जरूरत के अनुसार अष्ट धातु निर्मित यन्त्रों में से अपने लिये उपयोगी यन्त्र लेकर अपने घर, दुकान, ऑफिस, कार इत्यादि स्थानों पर इसे सुशोभित करना चाहिये। अष्ट धातु निर्मित यन्त्र मात्र धूप अथा अगरबत्ती करते रहने से भी प्रभावशील रहते हैं। यह हर हाल में लाभ पहुँचाते हैं, कभी नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।

श्री शालिग्राम जी

श्री शालिग्राम भगवान नारायण का प्रतीक रूप होता है।

यह नेपाल की प्रमुख परम पवित्र गण्डकी नदी मुक्तिनाथ में पाये जाते हैं। यह भगवान नारायण की प्रतीक शिला मानी जाती है।

यह साक्षात् नारायण का रूप है, इससे और ज्यादा शुद्ध, पवित्र भगवान विष्णु की प्रतिमा संसार में कोई नहीं है, क्योंकि इसके अन्दर भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का चिह्न होता है। जो शालिग्राम खुले होते हैं उनमें चक्र का निशान स्पष्ट रूप से दिखायी देता है और जो शालिग्राम बन्द होते हैं उनके ऊपर छोटे-छोटे छेद देखकर चक्र महसूस किया जा सकता है।

शालिग्राम के भीतर चक्र के निशान क्यों पाये जाते हैं, इसका भी वर्णन है। एक बार सुदर्शन चक्रधारी भगवान श्री विष्णु जी से गुस्सा होकर वृन्दा ने शाप दिया कि तुम काले पत्थर के हो जाओ तथा तुम्हें कीड़े काटे। वृन्दा के शाप के कारण ही इसमें जल के भीतर ही कीड़ा

उत्पन्न होता है तथा इसे अन्दर से काटना प्रारम्भ कर देता है। यह काटते-काटते शालिग्राम जी को अंशमात्र सोना भी देता है तथा इसके भीतर ही विलीन हो जाता है। यह चमत्कार रूपी भगवान नारायण की शिला के पूजने से हर तरह की परेशानियाँ स्वतः दूर हो जाती हैं, जहाँ नारायण खुद विराजमान हों, वहाँ दु:ख कैसे ठहर सकता है। इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा-पूजन करने से सुख-समृद्धि आती है और मान-सम्मान में भी वृद्धि होती है। श्री शालिग्राम जी को स्नान कराके जो पंचामृत बनता है उसके सेवन से मनुष्य की पाप-बुद्धि नष्ट हो जाती है तथा सद्बुद्धि का उदय होता है।

शालिग्राम जी को घर में अवश्य स्थापित करें। कलियुग में यह साकार नारायण स्वरूप हैं।

नर्मदेश्वर

नर्मदा नदी से प्राप्त होने वाले शंकर जी के बाणलिंग आकृति को नर्मदेश्वर कहते हैं। नर्मदेश्वर पूजन-अर्चन से वह सभी फल प्राप्त होते हैं जो स्वयं शंकर भगवान की पूजा से होते हैं, यह साकार शिवरूप हैं। नर्मदा नदी के बनी कंकर-पत्थर नर्मदेश्वर होते हैं। नर्मदा नदी के कण-कण में भगवान शंकर जी का वास है। नर्मदेश्वरों की यह खासियत होती है कि यह बनाये नहीं जाते यह अपने आप बाणलिंगों की अनोखी तथा अत्यन्त सुन्दर आकृति लिये हुए ही नदी से निकालते जाते हैं। यह भूरे रंग के मटमैले से होते हैं, इन पर धारियाँ अथवा जनेऊ के चिह्न खुद-ब-खुद अंकित रहते हैं। इनकी पूजा करने से व्यक्ति को मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। नर्मदेश्वर की विधिपूर्वक सेवा करने से भगवान शिवजी खुश होकर साधक की मनचाही इच्छाओं को पूरी कर देते हैं। यह दृढ़ विश्वास है इसलिये इनकी पूजा मन लगाकर ध्यानपूर्वक करनी चाहिये। पवित्र नर्मदा नदी से प्राप्त होने वाले नर्मदेश्वर की तरह हकीक से निर्मित नर्मदेश्वर भी मिलते हैं, इनके पूजन का महात्म्य भी नर्मदेश्वर पूजन के महात्म्य की तरह ही है।

ऊँ नमः शिवाय तथा जय माता दी कड़ा

जिस तरह से ऊँ नमः शिवाय का जाप फलदायक होता है, उसी प्रकार से ऊँ नमः शिवाय के कड़े का भी प्रयोग करने से भगवान प्रसन्न होते हैं। कड़े को पहनने से जब भी व्यक्ति की निगाह उस पर जायेगी तभी उसके मन में भगवान शंकर का स्मरण आ जाता है। यही नहीं और भी लोग जो उस व्यक्ति से मिलते हैं और उनकी निगाह भी उस पर जाती है तो उनके मन में भी भगवान शंकर का स्मरण हो आता है और उस फल के मिलने की भगीदारी भी स्वयं उस व्यक्ति की ही होती है जो उस कड़े को पहनता है। ऊँ नमः शिवाय के जयघोष में उसकी निष्ठा, भक्ति और आस्था जुड़ी हुई है। भगवान नाम का जप करने वाले से तो सभी खुश होते ही हैं, किन्तु कारक से भी अति प्रसन्न होते हैं, ऐसी मान्यता है। क्योंकि ऊँ नमः शिवाय भगवान शंकर का महामन्त्र है तथा भूत-प्रेत इत्यादि भगवान के गण हैं तथा उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते, इसलिये महामन्त्र लिखे कड़े को धारण करने से समस्त प्रकार की दुष्ट आत्मायें दूर रहती हैं, यह आत्मायें कड़ा धारक के आस-पास नहीं आ सकती, इसलिये इसे कड़े को पहनने से मन का डर चला जाता है तथा व्यक्ति भयमुक्त होकर कहीं भी दिन हो अथवा रात हो कहीं भी घूम-फिर सकता है। जिस तरह से 'ऊँ नमः शिवाय' भगवान शंकर का महामंत्र है, उसी तरह से 'जय माता दी' माँ दुर्गा का महामन्त्र है, सिर्फ 'जय माता दी' कहने से ही समस्त दुःख दूर होते हैं, तो जय माता दी को अपने शरीर पर धारण करने से कितना पुण्य होता होगा इसका अंदाजा आप स्वयं लगा सकते हैं।

इस कड़े में ताँबा, पीतल तथा चाँदी का प्रयोग किया जाता है। यह धातुएँ भी शरीर को जरूरत के अनुसार बल देती है, इसलिये यह धारण करने के लिए एक उत्कृष्ट आभूषण है।

श्री ज्योति शालिग्राम जी

श्री ज्योति शालिग्राम जी कंचे के आकार अथवा इससे थोड़े बड़े आकार में होते हैं, इन्हें ज्योति शालिग्राम तथा ज्योतिलिंग भी कहते हैं।

इनके भीतर एक विशेष प्रकार की ज्योति विद्यमान रहती है जो कि इसे सूर्य के सामने करके देखने पर दिखलाई देती है। देखने में आया है कि यह कोई खनिज अथवा जैविक वस्तु नहीं है, वरन् यह मानव निर्मित एक विशेष तरह का अनोखा लिंग होता है। इसके पूजन करने से व्यक्ति अलौकिक आभा से निखर उठता है। श्री ज्योति शालिग्राम जी जैसे कि नाम से पता चल रहा है, वैसे ही इसकी पूजा कर अर्चना करने वालों की नेत्र-ज्योति तो बढ़ती हैं बल्कि आँखों के समस्त रोग भी ठीक हो जाते है।

भारतीय ग्रन्थों में भगवान शंकर के जितने भी बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान है तथा वहाँ जो शिव प्रतिमा स्थापित हैं, उन्हें ज्योतिर्लिंग के नाम से पुकारा जाता है, जैसे प्रमुख बारह ज्योतिर्लिंग। श्री ज्योति शालिग्राम जी अथवा श्री ज्योतिर्लिंग की पूजा-अर्चना दक्षिण भारतीय जन-मानस बहुतायत में करते हैं।

श्री ज्योतिर्लिंग की पूजा-अर्चना अनेक प्रकार की आध्यात्मिक शक्ति देने वाली होती है। इसकी पूजा-अर्चना करने से पूरे परिवार में आपसी समझ बढ़ती है और व्यक्तियों में धर्म का संचार होता है अधर्म का नाश होता है। यह भी एक भगवान प्रतिमा है। यह प्रत्येक व्यक्ति प्राप्त नहीं कर पाता है, क्योंकि हमेशा ही यह हरिद्वार, बद्रीनाथ अथवा मथुरा में ही ज्यादातर में मिलती हैं बाकी स्थानों पर यह मुश्किल से ही मिल पाती है।

बजरबट्टू

बजरबट्टू को नजरबट्टू भी कहते हैं। जैसे कि इसके नाम से ही पता चल रहा है। नजरबट्टू पहनने से नजर नहीं लगती है। इसका प्रभाव बच्चों पर अधिक होता है। इसे पहनने वाले बच्चों पर जादू-टोना इत्यादि का भी प्रभाव नहीं होता है। यह कँचे के आकार का दक्षिण भारतीय क्षेत्र में पैदा होने वाला फल है और यह लाल और काले धागें में ही पहनाया जाता है।

मल्यागिरी चन्दन (सन्दल) के हार

मल्यागिरी चन्दन को अंग्रेजी में सन्दल वुड तथा हिन्दी में सफेद चन्दन अथवा खुशबू वाला चन्दन कहा जाता है। सफेद चन्दन में जहाँ बहुत से गुण हैं वहाँ इससे निर्मित मालाओं में यह गुण है कि यह हमेशा अपनी भीनी-भीनी खुशबू बिखेरती रहती हैं। सफेद चन्दन हार चन्दन की लकड़ी को छीलकर उसके ऊपर से छिल्के को प्राप्त कर उसे फूल का आकार प्रदान करके बनाया जाता है, क्योंकि मल्यागिरी चन्दन लकड़ी में से हमेशा चन्दन की भीनी-भीनी मस्त खुशबू आती रहती है, इसीलिये यही गुण इससे निर्मित मालाओं में विद्यमान रहता है।

आज के भौतिक तथा तेज रफ्तार युग में यह सम्भव नहीं है कि हम अपने दुकान, घर, ऑफिस में लगे भगवान तथा पूज्य स्वर्गीय पूर्वजों की छवियों पर रोज ताजे खुशबूदार फूलों की माला अर्पण कर सकें, इसीलिये इस चन्दनहार का उपयोग किया जाता है, क्योंकि यह हार एक बार चित्र पहना देने से सालभर तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराता रहता है, क्योंकि इसमें से हमेशा भीनी-भीनी चन्दन की खुशबू आती रहती है इसलिये इसके धारण करने से प्रभु तो खुश होते ही हैं, स्वर्गीय पूर्वजों की आत्मा को भी शान्ति मिलती है। इसको आकर्षण बनाने हेतु कारीगर इसको तरह-तरह के खुबसूरत रूप भी प्रदान करते हैं, जिससे यह हर चित्र पर टंगी हुयी बेहद आकर्षक तो दिखलायी पड़ती ही है साथ ही दीवार की सजावट को भी शालीनता प्रदान करती है। एक बार इस हार को पहना लेने के पश्चात् एक साल पश्चात् इसे नदी में प्रवाहित करके दूसरा हार प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि धूल-मिट्टी, हवा तथा दूसरे कारणों से यह एक साल पश्चात् बहुत गन्दी हो जाती है तथा अपना आकर्षण खो देती है, इसलिये इसे हर वर्ष बदल कर नया हार उपयोग करना चाहिये। •

राशि, स्वामी तथा जन्म-तिथि के अनुसार पहने जाने वाले रत्न एवं उपरत्न इस राशि चक्र में देखें।

राशि	स्वामी	जन्म-तिथि	रत्न	उपरत्न
मेष	मंगल	21 मार्च–20 अप्रैल	मूँगा	लाल ओनेक्स, लाल हकीक
वृष	शुक्र	21 अप्रैल–20 मई	हीरा	ओपल, सफेद हकीक, सफेद पुखराज, स्फटिक
मिथुन	बुध	21 मई–20 जून	पन्ना	हरा हकीक, हरा ओनेक्स, फिरोजा, हरा मरगज
कर्क	चन्द्र	21 जून–20 जुलाई	मोती	सफेद मूँगा, दूधिया हकीक, मून स्टोन
सिंह	सूर्य	21 जुलाई–21 अगस्त	माणिक	रतवा हकीक, माणिक स्टार, गारनेट
कन्या	बुध	22 अगस्त–22 सितम्बर	पन्ना	हरा हकीक, हरा ओनेक्स, फिरोजा, हरा मरगज
तुला	शुक्र	23 सितम्बर–22 अक्टूबर	हीरा	ओपल, सफेद हकीक, सफेद पुखराज, स्फटिक
वृश्चिक	मंगल	23 अक्टूबर–22 नवम्बर	मूँगा	लाल ओनेक्स, लाल हकीक
धनु	बृहस्पति	23 नवम्बर–20 दिसम्बर	पुखराज	पीला हकीक, सुनैला
मकर	शनि	21 दिसम्बर–19 जनवरी	नीलम	काला हकीक, जमुनिया, लाजवर्त, काला स्टार
कुम्भ	शनि	20 जनवरी–18 फरवरी	नीलम	काला हकीक, जमुनिया, लाजवर्त, काला स्टार
मीन	बृहस्पति	19 फरवरी–20 मार्च	पुखराज	सुनैला, पीला हकीक

राशि, स्वामी तथा नाम के पहले अक्षर के अनुसार पहने जाने वाले रत्न एवं उपरत्न इस राशि चक्र में देखें।

राशि	स्वामी	नाम का प्रथम अक्षर	रत्न	उपरत्न
मेष	मंगल	चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ	मूँगा	लाल ओनेक्स, लाल हकीक
वृष	शुक्र	ई, ए, उ, ओ, वा, वी, वू, वे, वो	हीरा	ओपल, सफेद हकीक, सफेद पुखराज, स्फटिक
मिथुन	बुध	क, की, कु, घ, ड, छ, के, को, ह	पन्ना	हरा हकीक, हरा ओनेक्स, फिरोजा, हरा मरगज
कर्क	चन्द्र	हा, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	मोती	सफेद मूँगा, दूधिया हकीक, मून स्टोन
सिंह	सूर्य	मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे	माणिक	रतवा हकीक, माणिक स्टार, गारनेट
कन्या	बुध	टा, पा, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो	पन्ना	हरा हकीक, हरा ओनेक्स, फिरोजा, हरा मरगज
तुला	शुक्र	र, री, रू, रे, रो, त, ती, तू, ते	हीरा	ओपल, सफेद हकीक, सफेद पुखराज, स्फटिक
वृश्चिक	मंगल	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू	मूँगा	लाल ओनेक्स, लाल हकीक
धनु	बृहस्पति	ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ड़ा, भे	पुखराज	पीला हकीक, सुनैला
मकर	शनि	भो, ज, जी, खे, खू, खो, गा, गी	नीलम	काला हकीक, जमुनिया, लाजवर्त, काला स्टार
कुम्भ	शनि	गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा	नीलम	काला हकीक, जमुनिया, लाजवर्त, काला स्टार
मीन	बृहस्पति	दा, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची	पुखराज	सुनैला, पीला हकीक

असलोमल विजयकुमार, मथुरा। फोन–0565–3296677, 2504880

Know Your Zodia (Rashi) and Select Your Lucky Stone (By Date of Birth)

Zodiac	Star	Date of Birth	Precious Stone	Semi Precious Stone (Substitute)
Aries	Mars	March 21-April 20	Coral	Red Agate, Red Onex
Taurus	Venus	April 21-May 20	Diamond	White Agate, Opal, Crystal, White Sapphire
Gemini	Mercury	May 21-June 20	Emerald	Green Agate, Green Onex, Green Jade, Turquoise
Cancer	Moon	June 21-July 20	Pearl	Micky Agate, White Coral, White Moon Stone
Leo	Sun	July21-Aug 21	Ruby	Star Ruby, Ratua Agate, Garnet
Virgo	Mercury	Aug 22-Sept 22	Emerald	Green Agate, Green Onex, Green Jade, Turquoise
Libra	Venus	Sept 23-Oct 22	Diamond	White Agate, Opal, Crystal, White Sapphire
Scorpio	Mars	Oct 23-Nov 22	Coral	Red Agate, Red Onex
Sagittarius	Jupitor	Nov 23-Dec 20	Yellow Sapphire	Yellow Agate, Golden Topaz
Capricornus	Saturn	Dec 21-Jan 19	Blue Sapphire	Amethist, Black Star, Lapis
Aquarius	Saturn	Jan 20-Feb 18	Blue Sapphire	Amethist, Black Star, Lapis
Pisces	Jupitor	Feb 19-March 20	Yellow Sapphire	Yellow Agate, Golden Topaz

Know Your Zodia (Rashi) and Select Your Lucky Stone (By Name)

Zodiac	Star	Name Started By Letter	Precious Stone	Semi Precious Stone (Substitute)
Aries	Mars	Chu, Che, Cho, La, Li, Lu, Le, Lo, Aa	Coral	Red Agate, Red Onex
Taurus	Venus	Ee, Ai, U, O, Wa, Wi, Wu, We, Wo	Diamond	White Agate, Opal, Crystal, White Sapphire
Gemini	Mercury	Ka, Ki, Ku, Gha, Gan, Cha, Ke, Ko, Ha	Emerald	Green Agate, Green Onex, Green Jade, Turquoise
Cancer	Moon	Ha, Hu, He, Ho, Da, Di, Du, De, Do	Pearl	Micky Agate, White Coral, White Moon Stone
Leo	Sun	Ma, Mi, Mu, Me, Mo, Ta, Ti, Tu, Te	Ruby	Star Ruby, Ratua Agate, Garnet
Virgo	Mercury	Ta, Pa, Pi, Pu, Sha, Nha, Tha, Pe, Po	Emerald	Green Agate, Green Onex, Green Jade, Turquoise
Libra	Venus	Ra, Ri, Ru, Re, Ro, Ta, Ti, Tu, Te	Diamond	White Agate, Opal, Crystal, White Sapphire
Scorpio	Mars	To, Na, Ni, Nu, Ne, No, Ya, Yi, Yu	Coral	Red Agate, Red Onex
Sagittarius	Jupitor	Ye, Yo, Bho, Bhi, Bhu, Dha, Pha, Dhra, Bha	Yellow Sapphire	Yellow Agate, Golden Topaz
Capricornus	Saturn	Bho, Ja, Ji, Khe, Khu, Khi, Kho, Go, Gi	Blue Sapphire	Amethist, Black Star, Lapis
Aquarius	Saturn	Ga, Ge, Go, Sa, Su, Se, See, So, Da	Blue Sapphire	Amethist, Black Star, Lapis
Pisces	Jupitor	Di, Du, Tha, Jha, Jhna, De, Do, Cha, Chi	Yellow Sapphire	Yellow Agate, Golden Topaz

रुद्राक्ष—मान्यता एवं महात्म्य

प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार, रुद्राक्ष को भगवान शिव का ही स्वरूप माना गया है। रुद्राक्ष के बारे में हमारे धार्मिक व पौराणिक ग्रन्थों में बहुत-से प्रकरण मिलते हैं। रुद्राक्ष को मुखदार रूप में पूजा जाता है। इसकी माला बनाकर भी पहनी जाती है तथा इसके औषधि के रूप में भी बहुत-से उपयोग किये जाते हैं।

ऐसी मान्यता है कि घर में रुद्राक्ष की पूजा-अर्चना करने से लक्ष्मी का हमेशा वास रहता है और वस्त्र, अन्न एवं दूसरी किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती है। जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करते हैं उनको भूत-प्रेत इत्यादि व्याधियाँ कभी भी परेशान नहीं करती हैं। रुद्राक्ष की पूजा-अर्चना करने वाले निश्चय ही आखिरी समय में स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष का आकार व प्रकार

रुद्र + अक्षि (रुद्राक्ष) अर्थात् रुद्र (शिव) की आँखों से उत्पन्न रुद्राक्ष फल एवं फूल दोनों ही है। इसका रंग भूरा होता है। यह गर्म एवं तर होता है। कुछ विद्वान् इसे ठंडा भी मानते हैं। यह रक्त-विकार को नष्ट और धातु को पुष्ट करता है। शरीर के बाहर तथा अन्दर के कीटाणुओं को मारता है, इससे रक्तचाप एवं हृदय रोग दूर होने में सहायता मिलती है।

रुद्राक्ष को सभी मालाओं में सबसे अधिक लाभदायक माना गया है तथा इस पर किये गये मन्त्र-जाप इत्यादि का फल भी सभी मालाओं पर किये गये जाप से कई गुणा अधिक मिलता है, ऐसी मान्यता हिन्दू धर्म शास्त्रों में है।

रुद्राक्ष उत्पत्ति की प्राचीन कथा

स्कन्द महापुराण में रुद्राक्ष उत्पत्ति की कक्षा इस प्रकार है—प्राचीन समय में पाताल लोक का राजा मय बड़ा ही बलशाली, पराक्रमी तथा

अजेय था। एक बार उसके मन में लोभ जागा कि पाताल से बाहर निकलकर दूसरे लोकों पर भी विजय प्राप्त की जाये। अपने इसी विचार के अनुकूल उन पातालवासी दानवों ने मानवों, गंधर्वों तथा देवताओं पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये। अपने बल के मद में चूर मय ने हिमालय पर्वत के तीन शृंगों पर तीन पुर बनवा लिये। वे तीनों पुर विभिन्न धातुओं से निर्मित थे—एक सोने का पुर था, दूसरा चाँदी का तथा तीसरा लोहे का।

ये तीनों पुर एक प्रकार के अभेद्य दुर्ग थे। ऐसे अभेद्य पुरों में रहकर इन त्रिपुरासुरों ने देवताओं को अत्यंत कष्ट दिया। उन्होंने देवताओं के स्थानों को जीत लिया तथा उन्हें अधिकारों से वंचित करके उनसे जीते गये उन्हीं स्थानों में रहने लगे। देवगणों के समान ही त्रिपुरासुरों ने गंधर्वों तथा मानवों पर भी अत्याचार किये तथा उन्हें भी जीत लिया। इस तरह से अभेद्य त्रिपुर में रहकर त्रिपुरासुरों ने तीनों लोकों को जीत लिया तथा एकछत्र राज्य करने लगे। महापराक्रमी त्रिपुरासुरों द्वारा देश, घर, अधिकार इत्यादि सब कुछ छीन लिये जाने से देवगण ज्यादा ही घबरा गए और दु:ख व शोक में डूब गये। त्रिपुरासुरों के डर से उन देवताओं को किसी ने भी शरण नहीं दी। सब पत्नी, पुत्र, मित्र इत्यादि से विमुक्त हो गये। देवताओं, मानवों तथा गंधर्वों को प्राण बचाने के लिये अपने स्थानों को छोड़कर इधर-उधर वनों में निर्जन गर्तों में, गुफाओं इत्यादि में छिपकर रहना पड़ा।

इस भयंकर विपत्ति के समय में सब देवगणों ने मिलकर इस संत्रास से छुटकारा पाने हेतु आपस में विचार-विमर्श किया। बुद्धिपूर्वक मन्त्रणा करके सबने फैसला किया कि उन्हें उनकी दुर्दशा से सम्पूर्ण जगत के रचयिता ब्रह्मा जी ही छुटकारा दिला सकते हैं। इस प्रकार अपने निश्चय के परिणामस्वरूप सब देवगण मिलकर ब्रह्मलोक में ब्रह्मा जी के पास गये तथा उन्हें अपनी दुर्दशा का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया। सबने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि त्रिपुरासुर दानवों से अब आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। इस प्रकार से कोई ऐसा उपाय करें जिससे हम उन बलगर्वित दानवों को जीतकर पूर्व की भाँति अपने स्थानों तथा अधिकारों को प्राप्त कर सकें।

देवगणों के मध्यम से इस वृत्तान्त को सुनकर ब्रह्मा जी ने उनसे कहा कि त्रिपुरासुर इस समय महापराक्रमी हैं, समय तथा भाग्य उनका साथ दे रहा है। अपने अभेद्य दुर्गों तथा महाप्रतापी होने के कारण इस समय वे इतने शक्तिशाली हैं कि युद्ध करके मैं भी उन्हें नहीं हरा सकता। इस महाविपदा से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है कि हम सब मिलकर विष्णु लोक में भगवान विष्णु की शरण में चलें। सम्भवत: भगवान विष्णु के पास चलने से आपका कल्याण होगा।

यह सुनकर ब्रह्मा जी सहित सब देवगण मिलकर विष्णुलोक में भगवान विष्णु की शरण में पहुँचे। भगवान विष्णु की स्तुति करके देवगणों ने अपनी करुण गाथा उनके समक्ष प्रस्तुत की तथा उनसे अनुरोध किया कि किसी तरह से त्रिपुरासुरों से उनकी रक्षा की युक्ति सुझायें। इस पर भगवान विष्णु ने भी ब्रह्माजी की भाँति ही अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए देवगणों से कहा कि इस विपत्ति से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है कि हम सब मिलकर देवाधिदेव भगवान शंकर की शरण में कैलाश पर्वत पर चलें, वही आपकी इस परेशानी से रक्षा कर सकते हैं। इतना कहकर मधुसूदन भगवान विष्णु भी ब्रह्मा जी तथा इन्द्रादि देवताओं के साथ भगवान शंकर के लोक कैलाश पर्वत की तरफ चल दिये।

कैलाश शिखर पर पहुँचकर सबने वहाँ देवाधिदेव भगवान शंकर के दर्शन किये। भगवान शंकर की स्तुति तथा दण्डवत् करने के बाद देवगणों ने उनसे अपनी परेशानी का वर्णन किया और कहा कि मय नाम के दानवेन्द्र ने त्रिकुट पर तीन अभेद्य पुर स्थापित कर लिये हैं। उन त्रिपुरासुरों ने हमारा सब-कुछ छीनकर हमें बुरी तरह हरा दिया है। इस प्रकार से हम सब मिलकर अपनी परेशानियों के निवारण हेतु आपकी शरण में आये हैं। अब आप ही इस महान् कष्ट तथा संत्रास से हमारी रक्षा कर सकते हैं।

देवताओं की इस मार्मिक प्रार्थना को सुनकर भगवान शंकर ने उन्हें अभय का आश्वासन दिया तथा कतिपय युद्ध-सामग्री प्रस्तुत करने को कहा। भगवान शंकर की बात सुनकर देवगणों ने कुछ ही समय में रथ, धनुष, दिव्य-बाण, प्रत्यंचा, सारथी, इत्यादि सभी युद्ध सामग्री की

व्यवस्था कर दी। इस युद्ध हेतु पृथ्वी मण्डल को रथ बनाया गया था। रथ के सारथी ब्रह्मा जी खुद थे। पृथ्वी मण्डल स्वरूप रथ पर चढ़कर सुमेरु पर्वत रूपी धनुष को भगवान शंकर ने धारण कर लिया। सागर स्वरूप तुनीर को भगवान ने बाँध लिया। कमलकांत भगवान विष्णु खुद दिव्य-बाण बनकर उपस्थित थे। उन्हें भगवान शिव ने हाथ में ले लिया।

इस तरह से युद्ध हेतु तैयार होकर ब्रह्मा, विष्णु, भगवान शंकर, इन्द्रादि देवताओं सहित हिम शैलेन्द्र के श्रृंगों पर स्थित त्रिपुरासुरों के नगरों के पास पहुँचे। त्रिपुरासुरों के नगरों के सामने पहुँचकर भगवान शिव के साक्षात् नारायण स्वरूप अमोघ-बाण को अपने धनुष पर चढ़ाया। शूलपाणि साधते ही उन दानवों के तीनों पुर दग्ध हो गये। इस तरह से त्रिपुर के जलते ही दानवों में हा-हाकार मच गया। त्रिपुर के नायक दानवगण मारे गये, कुछ डर के मारे भाग गये, कुछ शराग्नि से जल गये। त्रिपुर दाह के समय भगवान शिव ने अपने रौद्र रूप को धारण कर लिया था।

इस प्रकार मय दानवेन्द्र एवं उसके द्वारा रक्षित त्रिपुरासुरों का नाश हो जाने के पश्चात् अपने रौद्र रूप में ही भगवान शंकर, ब्रह्मा, विष्णु इन्द्रादि सब देवताओं को साथ लेकर हिमालय पर्वत के एक सुन्दर शिखर पर युद्ध की थकान मिटाने के लिये विश्राम करने पहुँचे। युद्ध की थकान मिट जाने पर भगवान शंकर बहुत ज्यादा प्रसन्न हुये। विजयी भगवान शंकर उस हर्ष के कारण जोर-जोर से हँसने लगे तथा उसी हर्ष में हँसते-हँसते भगवान रुद्र की आँखों से चार बूँद आँसू टपक पड़े। उन्हीं चार बूँद हर्श्राश्रुओं के उस शीतशैल शिखर पर गिर जाने से चार अंकुर पैदा हुये। कुछ समय के बाद वे चारों अंकुर बढ़कर पत्र, पुष्प तथा फल इत्यादि से हरे-भरे हो गये। इस तरह से रुद्र के अश्रुकणों से उत्पन्न ये वृक्ष रुद्राक्ष नाम से ही जगत में प्रसिद्ध हो गये।

रुद्राक्ष महात्म्य—प्राचीन कथा

भगवान रुद्र की आँखों से टपके आँसुओं से रुद्राक्ष की उत्पत्ति होने के कारण ही रुद्राक्ष को साक्षात् शिव स्वरूप ही माना जाता है। पुराणों की

ऐसी मान्यता है कि रुद्राक्ष धारण करने वाला साक्षात् रुद्र को ही धारण करता है। रुद्राक्ष का महात्म्य अति अद्‌भुत और आश्चर्यजनक है। रुद्राक्ष धारण करने वाला या उसकी पूजा करने वाला शिव सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करता है। इस विषय में अनेक प्राचीन कथायें पुराणों में वर्णित हैं। इसी क्रम में यहाँ एक प्राचीन कथा का उल्लेख किया जा रहा है।

किसी समय केरल प्रदेश के एक ग्राम में सभी शास्त्रों का ज्ञाता देवदत्त नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। वह ब्राह्मण वेद-वेदांगों के तत्त्वों में पारंगत था। देवदत्त धर्मशास्त्रों में पारंगत, सर्वज्ञ, सर्ववेत्ता पण्डित था और श्रौत विधान व स्मार्त विधान के कर्मकाण्डों में लगा रहता था।

कुछ समय पश्चात् दैवयोग से कुसंगति के कारण देवदत्त नामक उस ब्राह्मण की मति विपरीत हो गयी और वह पापयुक्त कर्म करने लगा। उन पापकर्मों को करने से वह नीच ब्राह्मण कहलाने लगा। देवदत्त दूसरों को लूटने लगा, पर-स्त्रियों में लम्पट रहने लगा। इसी प्रकार जुआ, खेलना, चोरी करना, वेश्याओं के साथ रमण करना, शराब पीना, मांस भक्षण करना आदि जितने भी बुरे कर्म हैं, वह उन्हीं में रत रहने लगा। देवदत्त पाप बुद्धि वाले धूर्त पापियों के साथ मिलकर ग्रामवासियों को तरह-तरह से सताने लगा।

देवदत्त के पाप-कर्मों से परेशान होकर एक दिन सभी ग्रामवासियों तथा ब्राह्मण वर्ग ने सलाह की कि क्यों न उसे गाँव से ही निकाल दिया जाये। इस प्रकार देवदत्त को मार-पीटकर ग्रामवासियों ने ग्राम से निकाल दिया। उस गाँव से निकाले जाने पर देवदत्त एक अन्य गाँव में पहुँचा, किन्तु वहाँ भी वह अपने पाप-कर्मों से बाज नहीं आया। उस दूसरे गाँव के लोग भी कुछ ही समय में उसके पाप-कर्मों और अत्याचार से तंग हो गये, फलस्वरूप उस ग्राम के निवासियों ने भी देवदत्त को अपने ग्राम से भगा दिया। इस प्रकार, अन्य किसी भी ग्राम में जब देवदत्त को शरण नहीं मिली तो अन्त में वह जंगल में जाकर रहने लगा।

जंगल में रहते हुये भी देवदत्त की पापवृत्तियों में कोई कमी नहीं आई। जंगल में भी वह निरीह पशु-पक्षियों को मारकर उनसे अपनी क्षुधा शान्त करता रहा। इस प्रकार, काफी समय तक वह एक जंगल से दूसरे

जंगल में भटकता फिरा। उसी समय उस पापिष्ट, दुरात्मा, दुराचारी, दुष्ट देवदत्त का मृत्यु का समय आ गया। देवदत्त किसी निर्जन वन में विचरण कर रहा था कि एक स्थान पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और वहीं पर मर गया।

मृत्यु-मूर्च्छा से पीड़ित, मृत्यु को प्राप्त देवदत्त को यमपुरी ले जाने के लिये यमराज के दूत वहाँ पर पहुँचे और यमपाश उसके गले में बाँधकर उसे घसीटते हुये यमपुर की ओर ले जाने लगे, किन्तु जिस भूमि पर गिर कर देवदत्त की मृत्यु हुई थी वहाँ संयोग से रुद्राक्ष स्पर्श करने से देवदत्त को शिवलोक कैलाश में उपस्थित करने की आज्ञा शिवदूतों को शंकर जी ने दी। कैलाश से आये शिवदूतों ने रास्ते में यमदूतों द्वारा देवदत्त को पाश में बाँधकर घसीटते हुये और कोड़ों से पीटते हुये यमपुर की ओर ले जाते हुये देखा। इस पर यमदूतों और शिवदूतों में परस्पर विवाद छिड़ गया। यमदूतों और शिवदूतों में आपस में युद्ध हुआ। यमदूत घबराकर भाग गये। अन्त में शिवदूत देवदत्त को छुड़ाकर, उसके गले से पाश खोलकर, उसे दिव्यरूपधारी बनाकर, वस्त्र और गहनों से अलंकृत करके, दिव्य-विमान में बैठाकर शिवलोक ले गये और वहाँ पहुँचने पर उसे शिव सानिध्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार रुद्राक्ष इस तरह से प्रभावशाली तथा साक्षात् शिवस्वरूप होते हैं।

रुद्राक्ष के महत्त्व एवं महात्म्य को प्रदर्शित करने वाली इसी प्रकार की अन्य कथायें भी पौराणिक ग्रन्थों में मिलती हैं, किन्तु उपर्युक्त कथा पढ़कर यदि कोई इसका निष्कर्ष यह निकाले कि जीवन भर पाप-कर्मों में लिप्त रहा जाये और अन्तिम समय में रुद्राक्ष माला या रुद्राक्ष का दाना गले में डाल लिया जाये अथवा रुद्राक्ष माला धारण किये रहो और पाप-कर्मों में लिप्त रहो, अन्त में रुद्राक्ष के पुण्य-प्रभाव से मोक्ष प्राप्ति हो ही जानी है, तो यह उनकी भूल होगी। रुद्राक्ष मुक्ति में तभी सहायक हो सकता है, जब हम रुद्राक्ष धारण करने के साथ ही साथ नित्य-जीवन में आचरण एवं अपने कर्मों की ओर भी ध्यान दें। जब हम सदाचरण, सत्यकर्म अपनायें, शिव-पूजन में श्रद्धापूर्वक मन लगायें, दुष्कर्मों को

यत्नपूर्वक जीवन से निकालने का प्रयत्न करें तभी रुद्राक्ष धारण करने से कुछ लाभ सम्भव हो सकता है।

एक मुख से चौदह मुखी रुद्राक्ष

रुद्राक्ष पेड़ के फल की गुठली होती है। इस गुठली पर प्राकृतिक रूप से कुछ सीधी धारियाँ होती हैं, ये धारियाँ स्पष्ट रूप से दिखायी देती हैं। इन धारियों की गिनती के आधार पर ही रुद्राक्ष के मुख की गणना होती है। जैसे किसी रुद्राक्ष पर चार धारियाँ हैं तो वह रुद्राक्ष चार मुख वाला रुद्राक्ष कहलायेगा।

अक्सर रुद्राक्ष एक मुखी से चौदह मुखी तक पाये जाते हैं। इसके पश्चात् पन्द्रह से इक्कीस मुख वाले रुद्राक्ष भी होते हैं, किन्तु ये बहुत ही कम मिल पाते हैं। एक से चौदह मुख तक रुद्राक्ष सुलभता से प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रत्येक मुखदार रुद्राक्ष अपना पृथक्-पृथक् महत्व रखते हैं। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार, प्रत्येक रुद्राक्ष का वर्णन इस तरह से है—

एक मुखी रुद्राक्ष

एक मुख वाले रुद्राक्ष में एक प्राकृतिक धारी होती है। एक मुख वाले रुद्राक्ष को परब्रह्म माना जाता है। इसे साक्षात् भगवान शिव का ही रूप माना जाता है, इसमें भगवान शिव खुद ही विराजते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष के विषय में कहा गया है कि इसके दर्शन मात्र से ही मानव का कल्याण हो जाता है, तो पूजन अथवा धारण से क्या नहीं हो सकता होग ? यह ब्रह्म-हत्या जैसे महापाप को नष्ट करता है। जिस घर में यह होता है उस घर में लक्ष्मी विशेष रूप से विराजमान होती हैं। यह धारणकर्त्ता को सभी तरह के नुकसान तथा डर से दूर रखता है। जिसके साथ भगवान शिव खुद ही रहते हों उसे भला क्या प्राप्त नहीं हो सकता है। एक मुख वाला रुद्राक्ष सर्वोत्तम, सर्वमनोकामना-सिद्धि, फलदायक और मोक्षदाता है। इसे सभी रुद्राक्षों में सबसे ज्यादा फल देने वाला माना गया है। इसे धारण करने से सभी तरह के अनिष्ट दूर हो जाते हैं, चाहे वह परिस्थितिवश हों या दुश्मन-जनित। एक सबसे ज्यादा फल देने वाला

माना गया है। इसे धारण करने से सभी तरह के अनिष्ट दूर हो जाते हैं, चाहे वह परिस्थितिवश हों या दुश्मन-जनित। एक मुखी रुद्राक्ष को पूजने से मनवांछित फल प्राप्त होता है। गले में अथवा पूजन में एक मुख वाला रुद्राक्ष धारण करने से अवश्य ही पुण्य उदय होता है। एक मुख वाला रुद्राक्ष मानसिक शान्ति देकर मानव के समस्त पाप तथा संकट हर लेता है इसमें कोई शक नहीं है तथा यह प्रमाणित है।

एक मुखी रुद्राक्ष दुर्लभ होता है। यह दूसरे रुद्राक्षों के मुकाबले बहुत ही कम मात्रा में पैदा होता है तथा नेपाली एक मुखी तो सर्वथा दुर्लभ वस्तु ही है। असली एक मुख वाला रुद्राक्ष जो उपलब्ध है वह या तो हरिद्वार (हिमालय) के जंगलों में या रामेश्वरम् के जंगलों में पैदा होते हैं। इसमें भी रामेश्वरम में जो रुद्राक्ष पैदा होता है वह अर्द्ध-चन्द्राकार या काजू के आकार का होता है तथा हरिद्वार (हिमालय) में जो पैदा होता है वह बिल्कुल गोल तो नहीं लगभग गोल जैसा ही होता है। कीमत के मामले में हरिद्वार (हिमालय) का गोल रुद्राक्ष रामेश्वरम् के अर्द्ध-चन्द्राकार के मुकाबले बहुत कीमत का होता है। यह पूजन हेतु भी अति उत्तम है। इसे आप अपने पूजन स्थान पर चाँदी की तश्तरी अथवा सिंहासन पर रखकर प्रतिदिन पूजा कर सकते हैं।

नोट–एक मुख वाला और 14 मुख वाले का असर एक-जैसा ही है। एक मुख वाला न मिले तो चौदह मुख वाला रुद्राक्ष पहनना अथवा पूजन करना चाहिये।

विशेष नोट–एक मुख वाला रुद्राक्ष गल्ले में रखने से गल्ला कभी धन से खाली नहीं होता है।

एक मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

हरिद्वार (हिमालय)—2,500 रु० से 5,000 रु० तक

रामेश्वरम्—1,000 रु० से 1,500 रु० तक।

दो मुखी रुद्राक्ष

दो मुख वाले रुद्राक्ष में दो धारी होती हैं। यह रुद्राक्ष अर्ध-नारीश्वर स्वरूप है, यह शिव और शक्ति का रूप है। इसे पहनने से भगवान शिव

और माता पार्वती दोनों ही खुश होते हैं। दो मुखी रुद्राक्ष गोहत्या के पाप से मुक्ति दिलाता है और यह दिमाग को सन्तुलित रखता है। इसको पहनने से मनुष्य की बुद्धि जाग्रत होती है और घर में हर तरह की सुख-सुविधा उपलब्ध होती है। इसको पहनने से पति-पत्नी में एकात्मय भाव पैदा होता है। यह रुद्राक्ष श्रद्धा तथा विश्वास का स्वरूप है। यह व्यापार-कार्य में सफलता दिलाता है। दो मुख वाला रुद्राक्ष सांसारिक समृद्धि की प्राप्ति कराता है और घर से क्लेश-कारण तो हमेशा-हमेशा के लिए ही खत्म करता है।

दो मुख वाला रुद्राक्ष नेपाल का काफी कम होता है और महँगा भी होता है, इसलिये दो मुख वाला रुद्राक्ष हरिद्वार तथा रामेश्वरम् का ही ज्यादा मात्रा में देखने को मिलता है। इसमें भी हरिद्वार का ही ज्यादा शुभ है।

दो मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

हरिद्वारी (हिमालय)—500 रु० से 1000 रु० तक
रामेश्वरम्—20 रु० से 50 रु० तक
नेपाली—5,000 रु० से 10,000 रु० तक

तीन मुखी रुद्राक्ष

तीन मुख वाले रुद्राक्ष में 3 धारियाँ होती हैं। तीन मुख वाले रुद्राक्ष को अग्नि स्वरूप माना जाता है। यह सत्य, रज तथा तम, इन तीनों का निगुणात्मक शक्ति रूप है। इस रुद्राक्ष में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों शक्तियों का समावेश तो है ही, इसके साथ-साथ इसमें तीनों लोक-आकाश, पृथ्वी, पाताल की भी शक्तियाँ निहित होती हैं। यह मानव को त्रिकालदर्शी बनाकर भूत, भविष्य और वर्तमान के बारे में बताता है। इसका धारण करने से व्यक्ति की विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का ह्रास होता है तथा रचनात्मक प्रवृत्ति पैदा होती है, इसीलिये यह अध्ययन कार्य में मददगार है। जो विद्यार्थी पढ़ने में कमजोर हों वह इसे धारण करके अद्‌भुत लाभ उठा सकते हैं। इसको धारण करने से इष्ट देव खुश होते हैं तथा इसको धारण करने से मन में दया, धर्म, परोपकार के भाव पैदा होते

हैं। यह पर-स्त्री गमन के पापों को नष्ट करता है। यह धारक या पूजक के सभी पापों का नाश कर उसे तेजस्वी बनाता है।

तीन मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

हरिद्वारी—50 रु० से 100 रु० तक।

रामेश्वरम्—100 रु० से 250 रु० तक।

नेपाली—250 रु० से 750 रु० तक।

चार मुखी रुद्राक्ष

चार मुख वाले रुद्राक्ष में चार धारियाँ होती हैं। चार मुख वाला रुद्राक्ष चतुर्मुख ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। चार वेदों का रूप माना गया है। यह मनुष्य को काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष चतुर्वर्ग देने वाला है। यह चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र तथा चारों आश्रम—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास के माध्यम से पूजित तथा परम वन्दनीय है। इसको पहनने वाला धनाढ्य, अरोग्यवान तथा ज्ञानवान बन जाता है। चार मुख वाला रुद्राक्ष वृद्धिदाता है। जिस बालक की बुद्धि पढ़ने में कमजोर हो अथवा बोलने में अटकता हो उसके लिये भी यह सर्वोत्तम है। चार मुख वाला रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक रोगों में शान्ति मिलती है तथा पहनने वाले का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। इसे पहनने वाले का नर-हत्या का पाप दूर होता है। अग्नि पुराण में इसके विषय में लिखा है कि इसको धारण करने से व्याभिचारी भी ब्रह्मचारी तथा नास्तिक भी आस्तिक हो जाता है।

चार मुख वाले रुद्राक्ष सबसे श्रेष्ठ नेपाल का होता है तथा नेपाली चार मुख वाला रुद्राक्ष आसानी से प्राप्त भी हो जाता है।

चार मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—20 रु० से 50 रु० तक।

पाँच मुखी रुद्राक्ष

पाँच मुख वाले रुद्राक्ष पर पाँच धारियाँ होती हैं। पाँच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् रुद्र स्वरूप है, इसे कालाग्नि के नाम से भी जाना जाता है।

रुधोजात्, तत्पुरुष, ईशान, अघोर तथा कामदेव शिव के ये पाँचों रूप पाँच मुख वाले रुद्राक्ष में वास करते हैं। पाँच मुख वाले रुद्राक्ष को पंचमुख ब्रह्मा स्वरूप माना जाता है, इनके पाँच मुखों को भगवान शिव का पंचानन स्वरूप माना गया है। मानव इस संसार में जो भी ज्ञान रूपी सम्पत्ति प्राप्त करता है वह सुस्पष्ट तथा स्थायी हो तभी उसकी सार्थकता है, इस तरह के ज्ञान की रक्षा हेतु पाँच मुख वाला रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है। यह मनुष्य को उन्नति के रास्ते पर चलने की ताकत देता है तथा उन्हें आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति कराता है। पाँच मुख वाला रुद्राक्ष कालाग्नि रुद्र का प्रतीक माना जाता है। यह पर-स्त्री गमन के पाप को हरता है तथा इसे धारण करने से सभी तरह के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके धारक को किसी तरह का दुःख नहीं सताता। इसके गुण अन्तत हैं, इसलिये इसे अत्यधिक फलदायक तथा महिमामय माना जाता है। पाँच मुख वाले रुद्राक्ष के कम से कम तीन अथवा पाँच दाने धारण करने चाहियें।

पंच मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—20 रु० से 50 रु० तक।

छः मुखी रुद्राक्ष

छः मुख वाले रुद्राक्ष पर छः धारियाँ होती हैं। छः मुख वाला रुद्राक्ष शिवजी के पुत्र कुमार कार्तिकेय की शक्ति का केन्द्र बिन्दु है। यह विद्या, ज्ञान, बुद्धि को देने वाला है। छः मुख वाला रुद्राक्ष पढ़ने वाले छात्रों, बौद्धिक कार्य करने वालों को बल देने वाला है। यह विद्या अध्ययन में अद्‌भुत शक्ति देता है। छः मुख वाले रुद्राक्ष के विषय में कहा जाता है कि यह छह तरह की बुराइयों काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, मद को जड़ से खत्म करता है। इसके पहनने से मनुष्य की खोई हुयी शक्तियाँ जाग्रत होती हैं, स्मरण शक्ति प्रबल होती है तथा बुद्धि का विकास बहुत तेज गति से होता है। यह धारक को आत्म-शक्ति, संकल्प-शक्ति, ज्ञान-शक्ति, अध्ययन-शक्ति, रोगों से लड़ने की ताकत भी देता है। इसको पहनने से मनुष्य वाक्‌पटु बनता है। इसे पहनने से हृदय की दुर्बलता, चर्म रोग और नेत्र रोग दूर होते हैं। यह दरिद्रता का नाश करता

है। छ: मुख वाला रुद्राक्ष पहनने से व्यक्ति शिक्षा, काव्य, छंद, व्याकरण, ज्योतिषाचार्य, चारों वेद, रामायण तथा महाभारत इत्यादि ग्रन्थों का विद्वान् हो सकता है। इसके पहनने से सुख-सुविधा भी जरूर ही मिलती है।

छः मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—20 रु० से 50 रु० तक।

सात मुखी रुद्राक्ष

सात मुख वाले रुद्राक्ष के ऊपर सात धारियाँ होती हैं। सात मुख वाला रुद्राक्ष सप्त ऋषियों का स्वरूप है। ऋषिजन हमेशा संसार के कल्याण में कार्यरत् रहते हैं, इस प्रकार से सात मुख वाले रुद्राक्ष पहनने मात्र से ही सप्त ऋषियों का सदा आशीर्वाद रहता है, जिससे मनुष्य का सदा कल्याण होता है। इसके साथ ही यह सात माताओं ब्राह्मणी, माहेश्वरी कौमारी, वैष्णवी, इन्द्राणी, चामुण्डा का मिला-जुला रूप भी है। इन माताओं के प्रभाव से यह पूर्ण ओज, तेज, ज्ञान, बल तथा सुरक्षा प्रदान करके आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक परेशानियों को दूर करता है। यह उन सात आवरणों का भी दोष मिटाता है जिससे मानव शरीर निर्मित होता है, यथा—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, महत्त्व तथा अहंकार। सात मुख वाला रुद्राक्ष धन-सम्पत्ति, कीर्ति तथा विजयश्री प्रदान करने वाला होता है। इसको धारण करने से धनागम बना रहता है, साथ ही व्यापार, नौकरी में भी उन्नति होती है। यह रुद्राक्ष सात शक्तिशाली नागों का भी प्रिय है। सात मुखी रुद्राक्ष साक्षात् अनंग स्वरूप है, अनंग को कामदेव के नाम से भी जाना जाता है, इसलिये इसको पहनने से मनुष्य स्त्रियों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है और पूर्ण स्त्री-सुख मिलता है। इसको पहनने से स्वर्ण चोरी के पाप से मुक्ति मिलती है।

सात मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—250 रु० से 500 रु० तक।

आठ मुखी रुद्राक्ष

आठ मुख वाला अथवा अष्टमुखी रुद्राक्ष पर आठ धारियाँ होती हैं। अष्टमुखी रुद्राक्ष गणेश भगवान स्वरूप है। भगवान गणेश सभी देवों में

प्रथम पूज्य हैं। आठ मुख वाले रुद्राक्ष को अष्टमूर्ति (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्र और यजमान) रूप साक्षात् शिव शरीर माना जाता है। मानव-भगवान की बनायी आठ प्रकृति (भूमि, आकाश, जल, अग्नि, वायु, मन, बुद्धि, अहंकार) के अधीन रहता है। आठ मुख वाला रुद्राक्ष धारण करने से आठों प्रवृत्तियाँ मदद करती हैं, जिससे आठों दिशाओं में विजय प्राप्त होती है। जिस तरह से सात मुख वाला रुद्राक्ष पहनने वालों की रक्षा सात मातायें करती हैं, उसी तरह से आठ मुख वाले रुद्राक्ष पहनने से आठ देवियाँ रक्षा करती हैं। इसको पहनने से गणेश भगवान की कृपा बनी रहती है, जिससे लेखन-कला ऋद्धि-सिद्धि आदि की प्राप्ति होती है तथा दुर्घटनाओं व शत्रुओं से रक्षा होती है, प्रेत बाधा का डर नहीं रहता। यह साहस तथा शक्ति प्रदान करता है। आठ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव भगवान का स्वरूप भी माना जाता है। इसके बारे में मान्यता है कि इसको पहनने से कोर्ट-कचहरी के मामलों में असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ता तथा दैविक, दैहिक एवं भौतिक कष्टों का निवारण हो जाता है। आठ मुख वाला रुद्राक्ष पहनने से अन्न, धन तथा स्वर्ण की वृद्धि होती है। दुष्ट स्त्री, गुरु-पत्नी गमन के पापों से मुक्ति मिलती है तथा यह मनुष्य को अन्तर्मुखी बनाकर उसके जीवन की समस्त उथल-पुथल खत्म कर नीचे से ऊपर उठने का रास्ता भी दिखाता है।

आठ मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—1,000 रु० से 2,500 रु० तक।

नौ मुखी रुद्राक्ष

नौ मुख वाले रुद्राक्ष में नौ धारियाँ होती हैं। नौ मुख वाले रुद्राक्ष को नवशक्ति सम्पन्न माना जाता है। दुर्गा जी के सभी नव-अवतारों की पूर्ण शक्तियाँ इसमें समायी होती हैं, इसलिये यह पहनने वाले को अलौकिक-दिव्य शक्तियाँ भी देता है। नौ मुख वाले रुद्राक्ष में नौ तीर्थों—पशुपतिनाथ, केदारनाथ, सोमनाथ, बद्रीनाथ, विश्वनाथ, जगन्नाथ, पारसनाथ व वैद्यनाथ के दर्शन पुंण्य होते हैं। वैसे तो सभी

रुद्राक्ष शिव-शक्ति के रूप हैं, किन्तु नौ मुख वाले रुद्राक्ष देवी माता के उपासकों के लिये विशेष हितकर होता है, इसको धारण करने से वीरता, धीरता, साहस, कर्मठता, पराक्रम, सहनशीलता तथा यश की वृद्धि होती है। यह रुद्राक्ष पहनने वाले को नवरात्रों के व्रत के समान पुण्य देता है तथा पति-पत्नी, पिता-पुत्र के मतभेदों को दूर कर तन-मन से सदा पवित्र रखता है। नौ मुख वाला रुद्राक्ष के देवता भैरव व यमराज हैं। इसको धारण करने से यमराज का भय नहीं रहता है तथा इसको पहनने वाला सदा सबका हित-चिंतक होता है। यह पहनने वाले के पक्ष में निर्णय करवाता है। यह भ्रूण-हत्या के पाप से मुक्ति प्रदान करता है तथा माँ की भक्ति में रुचि को बनाये रखता है, जिससे मानव सद्गति को प्राप्त होता है।

नौ मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत—

नेपाल—1,500 रु० से 3,000 रु० तक।

दस मुखी रुद्राक्ष

दस मुख वाले रुद्राक्ष में दस धारियाँ होती हैं। दस मुख वाला रुद्राक्ष भगवान विष्णु स्वरूप है, इसे दशावतार—मत्स्य, राम, कृष्ण, कच्छप, नृसिंह, वाराह, वामन, परशुराम, बुद्ध तथा कल्कि के स्वरूप का प्रतीक माना जाता है। इसे पहनने से ये दसों देवता बहुत खुश होकर पहनने वालों को अनेक प्रकार की दिव्य शक्तियाँ प्रदान करते हैं। इसको पहनने से दसों दिशाओं तथा दस दिक्पाल—अग्नि, यम, कुबेर, इन्द्र, निर्ऋति, वरुण, वायु, ईशान, अनन्त तथा ब्रह्मा सन्तुष्ट रहते हैं। दस मुख वाला रुद्राक्ष पहनने से दसों दिशाओं में कीर्ति फैलती है तथा दसों इन्द्रियों के माध्यम से किये गये समस्त पाप भी खत्म हो जाते हैं। दस मुख वाला रुद्राक्ष पहनने वालों पर किसी ग्रह का आधिपत्य नहीं रहता है। दस मुख वाले रुद्राक्ष पहनने से लोक-सम्मान मिलता है, राजसी कार्यों में सफलता मिलती है, कीर्ति विभूति तथा धन की प्राप्ति होती है तथा धारणकर्ता की सभी लौकिक तथा पारलौकिक इच्छा भी पूरी होती हैं। भूत, पिशाच, राक्षस, बेताल इत्यादि का डर समाप्त हो जाता है। जिस प्रकार एक मुख

वाला रुद्राक्ष सम्पूर्ण शिव स्वरूप है उसी प्रकार दस मुख वाला रुद्राक्ष सम्पूर्ण विष्णु स्वरूप है। इसी कारण यह नेताओं, समाज-सेवियों तथा कलाकारों हेतु भी उत्तम माना जाता है।

दस मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—1,500 रु० से 3,000 रु० तक।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष

ग्यारह मुख वाले रुद्राक्ष में ग्यारह धारियाँ होती हैं। ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष भी रुद्र स्वरूप है, यह भगवान शंकर के भक्तों हेतु बहुत ही शुभकारी एवं अमोघ वस्तु है। शिवजी के ग्यारहवें रुद्र महावीर बजरंगबली हैं, जिनके नाम से ही भूत-प्रेत भागते हैं। वह गुणवान, विद्यावान तथा चतुरता प्रदान करने वाले देवता हैं। ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष बल, बुद्धि तथा शरीर को बलिष्ठ एवं निरोगी बनाता है। भगवान इन्द्र भी इसके देवता माने जाते हैं, अगर किसी मनुष्य की कुछ दान करने की इच्छा हो और वह दान न कर पाया हो तो ग्यारह मुख वाले रुद्राक्ष को धारण करे, इससे दान की पूर्ति हो जाती है। इसके बारे में यह कहा गया है कि इसे पहनने मात्र से ही सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञ तथा एक लाख गाय दान करने के बराबर पुण्य फल प्राप्त होता है। जिनके जीवन में सदा संघर्ष बना रहता हो, इसको पहनने से सांसारिक समृद्धि तथा उसके भोगने का सुख प्राप्त होता है। इसको पहनने से एकादशी व्रत का पुण्य हमेशा ही प्राप्त होता है तथा मनुष्य हमेशा विजयी रहता है। स्त्रियों हेतु यह रुद्राक्ष सबसे ज्यादा शुभकारी है। पति की सुरक्षा, उसकी लम्बी आयु व उन्नति तथा सौभाग्य प्राप्ति में यह रुद्राक्ष अत्यन्त शुभ है।

ग्यारह मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—2,000 रु० से 4,000 रु० तक।

बारह मुखी रुद्राक्ष

बारह मुख वाले रुद्राक्ष में बारह धारियाँ होती हैं। बारह मुख वाला रुद्राक्ष भगवान सूर्य के बारह रूपों के ओज, तेज तथा शक्ति सामर्थ्य का

केन्द्र बिन्दु है। भगवान सूर्य संसार को चलाने वाले देवता हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी सूर्य भगवान की कृपा पर निर्भर है, पृथ्वी के सभी प्राणियों के प्राण-रक्षक सूर्य भगवान हैं। जिस तरह सूर्य का प्रकाश सारे संसार को अपनी रोशनी देकर सारे संसार को ज्योर्तिमय बना देता है ठीक उसी तरह से बारह मुख वाला रुद्राक्ष भी मनुष्य को उन्नति का रास्ता दिखाकर उसका जीवन उन्नतशील बना देता है। बारह मुख वाला रुद्राक्ष बारह ज्योर्तिलिंगों—महाकाल, सोमनाथ, रामेश्वरम्, ओंकारेश्वर, मल्लिकार्जुन, भीमशंकर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, त्रयम्बकेश्वर, विश्वेश्वर, केदारेश्वर, तथा घुरूमेश्वर का प्रतीक माना जाता है। इसको पहनने वाला व्यक्ति कभी रोग, चिन्ता, डर, भ्रम से परेशान नहीं होता है। धन, वैभव, ज्ञान तथा दूसरे भौतिक सुखों का प्रदाता यह रुद्राक्ष अद्‌भुत रूप से सुख देने वाला होता है। इसको धारण करने से बारह आदित्य प्रसन्न होते हैं। महामंत्र **"ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय"** का जप करने से जो फल मिलता है, वह बारह मुख वाले रुद्राक्ष के पहनने से स्वत: ही प्राप्त होता है। इसको धारण करने से हमेशा चेहरे पर खुशी, समाज में मान-सम्मान तथा वाणी में चातुर्यता उत्पन्न होती है। बारह मुख वाला रुद्राक्ष बहुत शक्तिशाली तथा तेजस्वी रुद्राक्ष होता है। बारह मुख वाला रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य को शासक का पद प्राप्त होता है, यह शादी-विवाह सम्बन्धों की विवशताओं को दूर करता है। इसको पहनने से शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है और जीवन निरोगी तथा सुखी व्यतीत होता है।

बारह मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—2,500 रु० से 5,000 रु० तक

तेरह मुखी रुद्राक्ष

तेरह मुख वाले रुद्राक्ष में तेरह धारियाँ होती हैं। तेरह मुख वाला रुद्राक्ष भगवान इन्द्र का स्वरूप माना जाता है। इसके पहनने मात्र से इन्द्र प्रसन्न होते हैं, जिससे समृद्धि की प्राप्ति होती है। यह रुद्राक्ष सभी प्रकार के अर्थ तथा सिद्धियों की पूर्ति करता है, जिससे हर तरह की इच्छाओं की

पूर्ति होती है तथा यश की प्राप्ति होती है। इसको पहनने से हर प्रकार के भोगों की प्राप्ति होती है तथा सभी मनोकामनायें भी पूरी होती हैं।

तेरह मुख वाले रुद्राक्ष के देवता कामदेव हैं इसी कारण तेरह मुख वाला रुद्राक्ष काम तथा रस-रसायन एवं धातुओं तथा अर्थ को सिद्धि देने वाला माना गया है। इसको पहनने से इन्द्र तथा कामदेव भी खुश होकर सभी प्रकार की सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति करते हैं, समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है, पद में उन्नति होती है। नवीन योजना में सफलता मिलती है। यह पहनने वाले को मनचाहे स्त्री-पुरुष को वशीकरण करने की शक्ति देता है, यह नि:सन्तान तथा निर्धन को धन देने वाला है। इससे बन्धु-बान्धव की हत्या का पाप दूर होता है।

तेरह मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—5,000 रु० से 10,000 रु० तक।

चौदह मुखी रुद्राक्ष

चौदह मुख वाले रुद्राक्ष पर चौदह धारियाँ होती हैं। चौदह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र की आँखों से प्रकट हुआ रुद्राक्ष माना जाता है। परम प्रभावशाली तथा थोड़े समय में ही शिवजी को खुश करने वाला यह चौदह मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात देवमणि है। पुराणों में इसके विषय में कहा गया है कि यह चौदह विद्या, चौदह मनु, चौदह लोक, चौदह इंद्र का साक्षात् देव स्वरूप है। चौदह मुख वाले रुद्राक्ष को वृक्ष से उत्पन्न सर्वदेवमय, विशिष्ट व दुर्लभ रुद्राक्ष माना जाता है। यह दुर्लभ होने के साथ-साथ बहुत ही उपयोगी भी है। चौदह मुख वाले रुद्राक्ष में हनुमान जी की भी सम्पूर्ण शक्ति निहित रहती है। इसके असर से व्यक्ति सभी तरह के संकटों से मुक्त रहता है। हानि, दुर्घटना, रोग एवं चिन्ता से मुक्त रखकर साधक को सुरक्षा-समृद्धि देना इसका विशेष गुण है। चौदह मुख वाले रुद्राक्ष का महत्व इसलिये भी अधिक है, क्योंकि भगवान शिव स्वयं चौदह मुख वाला रुद्राक्ष धारण किया करते थे, इसीलिये चौदह मुख वाला रुद्राक्ष ही एकमात्र ऐसा रुद्राक्ष है जिसका एक दाना धारण करने से ही मनुष्य खुद साक्षात् शिव स्वरूप हो जाता है। पौराणिक ग्रन्थों की

मान्यता के अनुसार एक चौदह मुख वाला रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य देवताओं से पूजित होकर सीधे स्वर्ग जाता है। चौदह मुख वाले रुद्राक्ष की शक्तियाँ अपार हैं।

चौदह मुख वाले रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—15,000 रु० से 25,000 रु० तक

श्री गौरी शंकर रुद्राक्ष

प्राकृतिक रूप से परस्पर जुड़े दो रुद्राक्षों को गौरी-शंकर रुद्राक्ष कहा जाता है। गौरी-शंकर रुद्राक्ष को भगवान शिव और माता गौरी का रूप माना जाता है इसलिये इसका नाम गौरी शंकर रुद्राक्ष पड़ा है। यह रुद्राक्ष एक मुख वाला तथा चौदह मुख वाले की तरह बहुत ही दुर्लभ और विशिष्ट रुद्राक्ष होता है। इसमें भगवान शंकर का वरदान और माँ पार्वती की दिव्य शक्तियाँ निहित होती हैं। इसको पहनने से भगवान शंकर और माता पार्वती दोनों की समान रूप से खुश होते हैं और अनेक प्रकार के वरदान और शक्तियाँ धारणकर्ता को प्राप्त होते हैं। माता पार्वती हमेशा ही भगवान शंकर को मनुष्यों को वरदान देने को प्रेरित करती रहती हैं। यह रुद्राक्ष मानव को हर तरह के रुद्राक्ष से होने वाले लाभ को अकेले ही दिलवाता है, जो व्यक्ति एक मुख वाला अथवा चौदह मुख वाला रुद्राक्ष पहनना चाहते हों और पहन नहीं सकते हों उन्हें गौरी-शंकर जरूर ही धारण करना चाहिये, क्योंकि एक मुख वाले और चौदह मुख वाले के समान ही यह रुद्राक्ष भी हर तरह की सिद्धियों का दाता है। यह अपने आप में विशिष्ट रुद्राक्ष है। इस रुद्राक्ष को पहनने के लिये सोने अथवा चाँदी में मढ़वा लेना श्रेष्ठ है।

गौरी शंकर रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—2,500 रु० से 5,000 रु० तक

श्री गौरी शंकर पाठ रुद्राक्ष

इस रुद्राक्ष में तीन रुद्राक्ष एकसाथ जुड़े होते हैं। गौर पाठ रुद्राक्ष शिव-पार्वती-गणेश यानि शिव परिवार के रूप में माना जाता है। यह

रुद्राक्ष अत्यन्त दुर्लभ होता है, साल में एक अथवा दो रुद्राक्ष ही पैदा होते हैं। कभी-कभी कई साल में भी एक रुद्राक्ष पैदा नहीं होता है। यह रुद्राक्ष प्रजाति का सबसे दुर्लभ हीरा समझा जाता है। जितना फल एक मुख वाले रुद्राक्ष से चौदह मुख वाले रुद्राक्ष तथा गौरीशंकर रुद्राक्ष सहित सभी रुद्राक्ष पहनने से मिलता है, उससे करोड़ों गुना फल श्री गौरी पाठ रुद्राक्ष दर्शन से ही प्राप्त हो जाता है। इसकी कीमत दो अथवा तीन लाख रुपये तक होती है। इसके दर्शन भी किसी भाग्य वाले को ही प्राप्त होते हैं, ऐसी लोगों की मान्यता है।

गणेश रुद्राक्ष

गणेश रुद्राक्ष में एक धारी सूँड की तरह अलग से उठी होती है। जिस प्रकार से भगवान गणेश की सूँड है उसी तरह इसकी भी सूँड के कारण इसे गणेश रुद्राक्ष कहते हैं। इसको पहनने से गणेश भगवान बहुत ही खुश होते हैं। भगवान गणेश ज्ञान और रिद्धि-सिद्धि के दाता हैं, इसलिये इसको पहनने से भी ज्ञान और रिद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है। गणेश रुद्राक्ष भगवान गणेश के उपासकों हेतु अति उत्तम है।

गणेश रुद्राक्ष की कीमत

नेपाली—250 रु० से 750 रु० तक

इस तरह उपरोक्त विवेचन से एक मुख से चौदह मुख तक तथा गणेश रुद्राक्ष तक का महत्व हमने स्पष्ट किया है और इससे पता चलता है कि पृथक्-पृथक् रुद्राक्ष धारण करने से पृथक्-पृथक् फल हमें प्राप्त होता है, परन्तु आखिर में एक बात जरूर कहना चाहूँगा कि रुद्राक्ष अपने आप में एक दिव्य अलौकिक शक्ति है, इसलिये आपको जो रुद्राक्ष उपलब्ध हो जाये उसी रुद्राक्ष को मस्तिष्क से लगाकर प्रभु को याद करके तुरन्त पहन लेना चाहिये, क्योंकि रुद्राक्ष रुद्र है और सब रुद्र पूजन-अर्चना के योग्य हैं। रुद्राक्ष पहनने से जरूरी संकल्प होना चाहिये, कौन-सा रुद्राक्ष धारण करें इसको प्रभु की इच्छा पर ही छोड़ देना श्रेष्ठ है। कण-कण में भगवान हैं और सब कुछ करवाने वाले भी भगवान ही हैं तो रुद्राक्ष की तरफ दिलचस्पी करवाने वाले भी भगवान ही तो हैं,

इसलिये पहनने वाले भी भगवान ही होंगे। रुद्राक्ष एक मुख वाले रुद्राक्ष से चौदह मुख वाले रुद्राक्ष तक के देखने में आते हैं, परन्तु रुद्राक्ष 21 मुखी तक के होते हैं जो कि बहुत ही ज्यादा महँगे होते हैं और हर समय उपलब्ध नहीं होते हैं। बहुत अधिक प्रयत्न और बहुत ज्यादा पैसा खर्च करके भी इनको खरीद पाना काफी मुश्किल होता है। यह रुद्राक्ष दुर्लभ परन्तु होते जरूरी हैं और इनका मूल्य प्रकृति के हिसाब से तय होता है, जिस तरह की तादाद में प्रकृति इनको पैदा करती है उसी तरह से इनका मूल्य होता है। इनका फल भी इसी हिसाब से लगातार बढ़ता जाता है। कभी-कभी प्रकृति एक से बढ़कर एक चमत्कार करती है उसी तरह से कभी-कभी रुद्राक्ष मुख की सभी सीमायें तोड़कर 21 मुखी से भी ज्यादा मुख के पैदा होते हैं, किंतु इनकी उपलब्धता लगभग न के बराबर है। अधिकतर पुराणों में 14 मुखी तक के रुद्राक्ष का महात्म्य व गुणों का उल्लेख किया गया है तथा यह भी बताया गया है कि किसको कौन-सा रुद्राक्ष पहनना चाहिए और उसके उस रुद्राक्ष के पहनने से क्या लाभ होंगे।

रुद्राक्ष पहनने की विधि

पदम् पुराण के आधार पर इसको पहनने के लिये रुद्राक्ष को पंचगव्य (गोमूत्र, गाय का गोबर, गाय का दही, गाय का दूध, तथा गाय का घी) तथा पंचामृत (गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, शहद तथा शक्कर) से स्नान कराना चाहिये, किंतु अगर पंचगव्य का हिसाब न बैठ पाये तो पंचामृत अनिवार्य है। उसके बाद प्राण प्रतिष्ठा मंत्र को पढ़ें। एक माला फेरें तो सर्वोत्तम अन्यथा नौ बार तो जरूर ही बोलें।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ हौं अघोरे घोरे हुँ घोरतरे हुँ।
ॐ हीं श्री सर्वतः सवड़िग नमस्ते रुद्ररूपे हुम।।

उसके बाद रुद्राक्ष के अभीष्ट मन्त्र अर्थात् हरेक रुद्राक्ष का जो अपना स्व-मन्त्र है, उसकी एक माला फेरकर रुद्राक्ष को पहनना चाहिए। रुद्राक्ष पहनने का दिन, नक्षत्र शुभ हो ऐसा पंचांग में देख लेना चाहिये। साधारणतया जो भी दिन पंचांग में शुभ त्यौहार दिखा रखे हों उस दिन पहन लें तो सबसे अच्छा नहीं तो सोमवार तो निश्चित है।

प्रत्येक रुद्राक्ष का "स्व-मन्त्र" शिव पुराण व पद्म पुराण के अनुसार है। दोनों में से किसी एक का जाप करें।

शिव पुराण के अनुसार–

एक मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः
दो मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ नमः
तीन मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ क्लीं नमः
चार मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः
पाँच मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः
छः मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं हुं नमः
सात मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हुं नमः
आठ मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हुं नमः
नौ मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं हुं नमः
दस मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः नमः
ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष— ॐ ह्रीं हुं नमः
बारह मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ क्रों क्षौं रौं नमः
तेरह मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः
चौदह मुख वाला रुद्राक्ष— ॐ नमः

पद्म पुराण के अनुसार–

एक मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ॐ दृशं नमः
दो मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ॐ नमः
तीन मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ॐ नमः
चारमुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः

पाँच मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हूं नमः
छः मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हूं नमः
सात मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हुं नमः
आठ मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ सः हूँ नमः
नौ मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हं नमः
दस मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ ह्रीं नमः
ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष— ॐ श्रीं नमः
बारह मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ हूं ह्रीं नमः
तेरह मुख वाला रुद्राक्ष — ॐ क्षां चौं नमः
चौदह मुख वाला रुद्राक्ष— ॐ नमो नमः

पन्द्रह मुख वाला रुद्राक्ष से इक्कीस मुख वाला रुद्राक्ष तक के स्व-मन्त्र के लिये निम्न मन्त्र की एक माला फेरनी चाहिये—

"ॐ नमः रुद्र देवाय नमः" या "ॐ आं ह्रीं क्रौं"

रुद्राक्ष धारण करने के राशि अनुसार मन्त्र

(1) मेष ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी नारायण नमः
(2) वृष ॐ गोपालय उत्तरध्वजायः नमः
(3) मिथुन ॐ कलीं कृष्णाय नमः
(4) कर्क ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्त रूपिणे नमः
(5) सिंह ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः
(6) कन्या ॐ नमो प्रीं पिताम्बराय नमः
(7) तुला ॐ तत्वनिरन्जनाय तारकरामाय नमः
(8) वृश्चिक ॐ नारायण सुरसिंहाय नमः
(9) धनु ॐ श्रीं देवकृष्णाय उर्ध्वषताय नमः
(10)मकर ॐ श्रीं वत्सलाय नमः
(11)कुम्भ ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्चुतायः नमः
(12)मीन ॐ क्लीं उद्घृताय उद्धरिणे नमः

रुद्राक्ष का विभिन्न रोगों में उपयोग

(1) उच्च रक्तचाप के रोगियों हेतु तो रुद्राक्ष माला एक वरदान स्वरूप है। यह रक्तचाप को नियन्त्रित रखती है। इसके लिये यह जरूरी है कि रुद्राक्ष के दाने अथवा रुद्राक्ष की माला रोगी के हृदय तक लटकती रहे।

(2) रुद्राक्ष को दूध में उबालकर उस दूध को पीने से स्मरण शक्ति बढ़ती है और खाँसी में भी आराम मिलता है।

(3) रुद्राक्ष के दाने को पानी में घिसकर अगर विषाक्त फोड़ों पर इसका लेप किया जाये तो फोड़े ठीक हो जाते हैं।

(4) रुद्राक्ष के दाने को रात को ताँबे के बर्तन में जल भर कर उसमें डाल दें। सुबह दानों को निकाल कर खाली पेट उस जल को पीने से हृदय रोग तथा कब्ज इत्यादि में लाभ मिलता है।

(5) आयुर्वेदिक दृष्टि से रुद्राक्ष को महौषधि माना गया है। इसके बारे में कहा गया है कि यह उष्ण तथा अम्ल होता है। इसी कारण यह वात तथा कफ एवं अन्य रोगों का शमन करता है। उष्ण होने के कारण यह सर्दी तथा कफ से होने वाले सभी रोगों में लाभदायक माना गया है।

रुद्राक्ष की व्यवसाय में महत्ता

प्रशासनिक अधिकारी	13 मुख वाला और 1 मुख वाला
कोषाध्यक्ष	8 मुख वाला और 12 मुख वाला
जज-न्यायाधीश	14 मुख वाला और 2 मुख वाला
पुलिस तथा मिलट्री सेवा	9 मुख वाला और 4 मुख वाला
बैंकिंग सेवा	11 मुख वाला और 4 मुख वाला
डॉक्टर-वैद्य	9 मुख वाला और 11 मुख वाला
नर्स-कैमिस्ट-कम्पाउन्डर	4 मुख वाला और 3 मुख वाला
वकील	13 मुख वाला और 4 मुख वाला
नेता-मन्त्री-विधायक-सांसद	14 मुख वाला और 1 मुख वाला
अध्यापक-धर्म प्रचारक	14 मुख वाला तथा 6 मुख वाला

लेखक, क्लर्क, टाइपिस्ट, स्टेनो	11 मुख वाला व 8 मुख वाला
मैकेनिकल इन्जीनियर	10 मुख वाला और 11 मुख वाला
सिविल इन्जीनियर	8 मुख वाला और 14 मुख वाला
इलैक्ट्रिकल इन्जीनियर	7 मुख वाला और 11 मुख वाला
कम्प्यूटर इन्जीनियर	14 मुख वाला और गौरीशंकर
पायलेट वायुसेना	10 मुख वाला और 11 मुख वाला
जलयान चालक	12 मुख वाला और 8 मुख वाला
रेल-बस-कार चालक	10 मुख वाला और 7 मुख वाला
व्यवसायी (दुकानदार)	14 मुख वाला और 13 मुख वाला
उद्योगपति (कारखानेदार)	14 मुख वाला और 12 मुख वाला
संगीतकार-कवि	13 मुख वाला और 9 मुख वाला
डॉक्टर (सर्जन)	14 मुख वाला और 4 मुख वाला
डॉक्टर (फिजीशियन)	10 मुख वाला और 11 मुख वाला
होटल स्वामी	14 मुख वाला, 1 मुख वाला और 13 मुख वाला
ठेकेदार	14 मुख वाला, 13 मुख वाला और 11 मुख वाला

रुद्राक्ष खरीदने से पहले ध्यान देने योग्य बातें

रुद्राक्ष के विषय में लोगों में काफी भ्रम व्याप्त है। विश्व में सबसे ज्यादा रुद्राक्ष की फसल 'इण्डोनेशिया' में होती है, इसके बाद नेपाल, अफ्रीका, जावा, सुमात्रा, मलेशिया, भूटान और भारत में होती है।

रुद्राक्ष सिर्फ नेपाल का ही शुभ होता है ऐसी बात मिथ्या है। यह मान्यता हिन्दुओं में हिन्दू देवता शिव के साथ ही जुड़ी हुयी है। नेपाल जिसकी भौगोलिक सीमा को इन्सान ने बाँटा है, भी हिमालय की तराई में बसा हुआ है। पशुपतिनाथ का क्षेत्र होने से हिन्दुओं की नेपाल के प्रति गहरी आस्था है, किन्तु यथार्थ में किसी भी देश-प्रदेश के रुद्राक्ष के स्वभाव-तासीर एक ही है।

नेपाल में बड़े आकार के दाने पैदा होते हैं, जबकि इण्डोनेशिया में छोटे आकार के दाने सबसे ज्यादा मात्रा में होते हैं।

रुद्राक्ष का मुख्य एवं सीधा-सा कार्य मानसिक शान्ति प्रदान करना है। इसकी अपनी एक चुम्बकीय शक्ति होती है, जो कि रक्तचाप को सन्तुलित कर हृदय को मजबूती प्रदान करता है।

रुद्राक्ष एक्यूप्रेशर की तरह ही काम करता है। इसके उठे हुए नोंक उंगलियों को उचित दबाव देते हैं, जिसमें हृदय सम्बन्धित अंगुली भी है, जिससे हृदय को शक्ति मिलती है। रुद्राक्ष में छेद नहीं होता बल्कि वृक्ष से तोड़ने के पश्चात् किया जाता है। इनके छिलके मजबूत होते हैं, जिसे एक विशेष प्रक्रिया के माध्यम से उतारा जाता है। फिर भी यदा-कदा कुछ दानों में छिलके लगे रह जाते हैं, जो कि इस बात का प्रमाण है कि फल पकने से पहले तोड़ा गया है।

अच्छे रुद्राक्ष की पहचान

(1) रुद्राक्ष दाने को सुईं से कुरेदो, कुरेदने पर रेशा निकले तो 'लकड़ी' अन्यथा 'कैमिकल'। नकली में आकृतियाँ; जैसे—शिवलिंग, त्रिशूल, साँप, योनि स्पष्ट दिखायी देंगे, जबकि असली में ऐसा नहीं। हाँ, असली रुद्राक्ष को अत्यधिक गौर से देखने पर हम अपनी कल्पना शक्ति से कोई आकृति महसूस कर सकते हैं।

(2) लैबोट्री टैस्ट। कभी-कभार दाना सस्ता किन्तु फीस टैस्टिंग महंगी अर्थात् 9 की लकड़ी, 90 का खर्चा।

(3) व्यापारी/अन्य पर विश्वास, क्योंकि व्यस्त एवं आधुनिक जीवन/समय में हम किसी भी बात/वस्तु को मानते तो हैं, पर जानते नहीं, के सिद्धान्तानुसार सामने वाले पर निर्भर होना पड़ता है।

(4) 9 मुख वाले से 21 मुख वाले व एक मुख वाले रुद्राक्ष महँगे होते हैं। गौरीशंकर भी महँगे होते हैं। अगर हमें इनके मुखों अथवा जोड़ों को लेकर शक हो तो इनकी टैस्टिंग हेतु आप एक कटोरे में पानी को उबालिये जब पानी उबलने लगे तब रुद्राक्ष को उबलते हुए पानी में एक

मिनट तक रखें और एक मिनट के बाद कटोरे को चूल्हे से उतार कर एक मिनट के लिये ढक्कन से ढक दें, उसके बाद रुद्राक्ष दाना निकाल लें एवं गौर से दाने को देखें। अगर दाने के मुख को जोड़-जोड़कर बनाया होगा तो वे जितनी फाँके जोड़ी होंगी वो फट जायेंगी और जोड़ को जोड़ने वाला सोल्यूशन भी दिखेगा। नहीं तो प्राकृतिक तौर पर थोड़े अथवा ज्यादा फटे हुए रुद्राक्ष को अगर डालेंगे तो वे और भी फट जायेंगे।

चतुर कारीगर अपना हस्त कौशल महँगे रुद्राक्ष में दिखाने से नहीं चूकते। रुद्राक्ष दाना छोटे साइज में कम मिलता है, इसलिये दाना जितना छोटा होगा उतना ही महँगा होता जायेगा, अपेक्षाकृत बड़े दाने के। इसी प्रकार, पाँच मुखी की प्राप्ति बहुतायत में होती है, इस प्रकार से ये सस्ते होते हैं, जबकि बाकी मुखदार इससे महँगे होते हैं।

इनके मूल्यों में घटत-बढ़त चलती रहती है। भारत में पशुपतिनाथ की स्थली नेपाल के रुद्राक्ष का मूल्य सबसे अधिक होता है। एक मुख वाला रुद्राक्ष कम मिलता है, मुख्य रूप से नेपाल का एक मुखी गोल होता है, जो कि अप्राप्य है। अगर प्राप्त हो जाये तो अमूल्य है।

नेपाल को छोड़कर शेष सभी जगह के एक मुख वाला रुद्राक्ष प्राय: अर्द्ध-चन्द्राकार पाये जाते हैं। कभी-कभी तीन एवं दो मुख वाले के भी एक मुख वाले प्राकृतिक तौर पर बन जाते हैं। ऐसे एक मुख वाले दाने को टॉप से देखने पर दो अथवा तीन **कट** से दिखेंगे किन्तु बनता एक ही है। अगर इनकी प्राण-प्रतिष्ठा करके पहना जाये तो इनका असर पूर्णत: एक मुख वाले का ही होता है, ये काफी महँगे दाने होते हैं। रुद्राक्ष गर्म एवं तर होता है, अगर हम दानों का किसी भी तरह से उपयोग नहीं करते तो तेल में डुबोकर रखना चाहिये। इससे रुद्राक्ष फटेगा नहीं नहीं तो प्राकृतिक तौर पर भी फटने का डर रहता है।

ये माना जाता है कि दो अंगूठे के नाखून के बीच में रुद्राक्ष को रखने से ये किसी भी दिशा में घूमे तो असली नहीं तो नकली, किन्तु ये प्रामाणिक नहीं है। कारण, किसी भी गोल/नोकदार वस्तु को इस तरह रखेंगे तो एक निश्चित दिशा में घूमेगी।

रुद्राक्ष पर भगवान शिव की पूजा के साथ ही किसी भी भगवान की पूजा, जाप इत्यादि कर सकते हैं। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार, रुद्राक्ष माला पर किये गये जप से सभी तरह की मालाओं से सहस्त्रों गुणों अनन्त फल प्राप्त होता है। रुद्राक्ष माला को धारण करने के बाद कोई कठोर यम-नियम इत्यादि नहीं हैं, क्योंकि भगवान शिव ही संहारक, औघड़नाथ, भूतनाथ इत्यादि हैं। रुद्राक्ष का उपयोग तीन तरह से होता है—

(1) औषधि के रूप में, (2) धारण करना, (3) विभिन्न मुख वाले दानों की पूजा करना।

आजकल अनुभव के आधार पर यह देखा गया है कि रुद्राक्ष लाल-पीला मिश्रित अर्थात् भूरे रंग के ही अधिकांशत: मिलते हैं और पहनने के कुछ समय बाद ही काले पड़ जाते हैं।

जहाँ तक रुद्राक्ष के मुखों का प्रश्न है तो यह जरूरी नहीं है कि मुख सिर्फ 14 तक ही होते हैं। अब तक 21 मुख के दाने भी प्राप्त हुये हैं। कारण मुख प्रकृति के माध्यम से ही बनते हैं तथा प्रकृति का कोई सख्त नियम 14 मुख तक के लिये नहीं है। हाँ, ये बात जरूर है कि 14 मुख वाले से ऊपर के रुद्राक्ष दुर्लभ है। इसी तरह से दो मुख वाला गोल बड़ा दाना भी बहुत कम प्राप्त होता है। रुद्राक्ष के छोटे दानों की मालायें पाँच मुखी दाने की होती हैं। कभी-कभार उसमें 4 मुख वाले या छ: मुख वाले के दाने भी मिश्रित हो जाते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने का शुभ समय

ग्रहण, संक्रान्ति, पूरनमासी, अमावस्थ्या, वैशाखी, तीर्थाटन, दीपावली गंगातट, महाशिवरात्रि, पूज्य इष्ट देव के निकट, पूज्य गुरुदेव के दर्शन के पश्चात् कुम्भ पर्व, गंगा पर्व अथवा कोई महान नदी पर्व पर, दूसरा कोई प्रभु उत्सव के समय, नवरात्रों के दौरान, दूसरा कोई शुभ दिन।

पुराणों में रुद्राक्ष धारक के विषय में कोई भी विशेष परहेज नहीं बताया गया है किन्तु फिर भी रुद्राक्ष पहनने वाले को मास, मछली,

अण्डा इत्यादि वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिये। शुद्ध विचार, मनुष्य के कल्याण तथा मानसिक शान्ति के हेतु बहत जरूरी है। इसलिये रुद्राक्ष पहने वाले को अपने विचार शुद्ध, तन-स्वच्छ तथा भोजन सात्विक करना चाहिये। रुद्राक्ष पहनकर अगर धार्मिक निष्ठा का पालन किया जाये तो इनका असर भी जल्दी से होता है।

रुद्राक्ष के बारे में विचार

(1) रुद्राक्ष से स्त्रियों को पुत्र लाभ होता है।

(2) रुद्राक्ष लम्बी आयु प्रदान करता है।

(3) रुद्राक्ष मन को शान्ति प्रदान करता है।

(4) रुद्राक्ष भगवान शंकर का सबसे प्यारा आभूषण है।

(5) रुद्राक्ष धारण करने से ब्रह्म हत्या और गौ-हत्या जैसे महापाप से छुटकारा मिलता है।

(6) रुद्राक्ष अपना असर चालीस दिन के अन्दर दिखाता है।

(7) रुद्राक्ष सभी वर्णों के पाप का नाश करता है।

(8) रुद्राक्ष पहनने से मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है।

(9) रुद्राक्ष की पूजा से सभी दु:खों से छुटकारा होता है।

(10) रुद्राक्ष को जेवर की तरह शान से पहनना चाहिए।

(11) रुद्राक्ष की माला पहनने के लिये किसी से पूछने की जरूरत नहीं है, क्योंकि रुद्राक्ष कभी विपरीत फल नहीं देता है।

(12) रुद्राक्ष तेज तथा ओज में अपूर्व वृद्धि करता है।

(13) रुद्राक्ष धारक मनुष्यों को देवतागण भी आदर देते हैं।

(14) रुद्राक्ष जितना पुराना होता है उतना ही उत्तम फलदायक होता है।

(15) रुद्राक्ष हमेशा भगवा रंगा हुआ होता है, जो पहनने के थोड़े समय बाद काला हो जाता है।

(16) रुद्राक्ष धारण करके मरने पर मनुष्य जन्म जन्मान्तर के फेरे में से निकलकर भगवान के चरणों में स्थान पाता है।

(17) रुद्राक्ष में अनेक प्रकार की दिव्य शक्तियाँ समायी रहती हैं।

(18) रुद्राक्ष खरीदने का अवसर मिलना ही भाग्य का उदय है।

(19) दुनिया भर में सबसे ज्यादा रुद्राक्ष हरिद्वार तथा मथुरा में विक्रय होता है।

(20) दुनिया के हर देश में रुद्राक्ष के जानकार हैं तथा दुनिया के हर देश के बुद्धिजीवियों की रुद्राक्ष के प्रति आस्था बढ़ रही है।

(21) रुद्राक्ष अकाल मृत्युधारी है।

(22) जिस घर में रुद्राक्ष की पूजा की जाती है वहाँ सदा लक्ष्मी का वास रहता है।

(23) रुद्राक्ष गृहस्थियों के लिये अर्थ तथा काम का दाता है।

(24) रुद्राक्षधारी को यमराज का डर नहीं रहता।

(25) रुद्राक्ष शारीरिक व्याधियों का शमन करता है।

(26) भारत की महान् प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी हमेशा रुद्राक्ष की माला पहनती थीं।

(27) रुद्राक्ष कुण्डलिनी जागृत करने में मद्द करता है।

(28) रुद्राक्ष भोग और मोक्ष दोनों में सहायक है।

(29) रुद्राक्ष पहनने से हृदय रोग बहुत जल्दी सही होते हैं।

(30) रुद्राक्ष धारण करते समय अगर मन्त्र याद नहीं है तथा मन में कोई संशय है तो भगवान शंकर का महामंत्र "ऊँ नम: शिवाय" का जाप करके रुद्राक्ष धारण कर लेना चाहिये।

(31) भूत-प्रेत पिशाच, डंकिनी इत्यादि कोई भी हवा तथा तन्त्र-मन्त्र तथा टोटके और सम्मोहन का असर रुद्राक्ष धारक पर नहीं होता है।

(32) रुद्राक्ष धारण करके मनुष्य अपने कारोबार में तथा अपने पदों पर उच्चासीन रहता है।

ग्रह व राशि के अनुसार लाभकारी रुद्राक्ष

सूर्य	सिंह	एक मुखी तथा बारह मुखी
चन्द्र	कर्क	दो मुखी तथा गौरी शंकर
मंगल	मेष	वृश्चिक तीन मुखी तथा चौदह मुखी
बुध	मिथुन, कन्या	तेरह मुखी तथा ग्यारह मुखी

गुरु	धनु, मीन	चौदह मुखी या एक मुखी तथा सात मुखी
शुक्र	वृष, तुला	तेरह मुखी, छः मुखी तथा दस मुखी
शनि	मकर, कुम्भ	एक मुखी या चौदह मुखी
राहु		आठ मुखी
केतु		तीन मुखी

असली रुद्राक्ष की पहचान

असली रुद्राक्ष की टेस्टिंग की कोई मशीन नहीं होती है। नकली रुद्राक्ष बनाने वाले लोगों ने हर पहचान की काट करके हर अच्छी पहचान नकली रुद्राक्ष के अन्दर पैदा कर दी है। परन्तु रुद्राक्ष के विश्वसनीय विक्रेता और इसको पुराने समय से प्रयोग करने वाले व्यक्ति अपने अनुभव के आधार पर इसे देख कर ही असली नकली का फैसला कर सकते हैं। कुछ लोग इन नकली बेचने वालों के भय से हर रुद्राक्ष को इतनी गौर से देखते हैं कि उन्हें असली रुद्राक्ष भी नकली नजर आने लगता है क्योंकि हर मुख के रुद्राक्ष पर मुखों के साथ-साथ कुछ आड़ी तिरछी रेखायें बनती सी प्रतीत होती हैं परन्तु यह रुद्राक्ष में प्राकृतिक तौर पर पायी जाती हैं 'मुख' केवल उसे बोलते हैं जो अन्दर काफी गहरायी (यानि रुद्राक्षफल के बीज) के साथ जुड़े होते हैं जो रुद्राक्ष जितने मुख होता है तोड़ने पर उसके उतने ही खरबूजे जैसे टुकड़े होते हैं तथा कुछ लोग इतने समझदार तथा मीन मेख निकालने वाले होते हैं कि उन्हें नकली रुद्राक्ष ही असली लगता है क्योंकि नकली रुद्राक्ष बनाने वाला उसमें हर वह पहचान डालता है कि वह बिलकुल असली लगे तथा उसे मनभावक आकार भी प्रदान करता है परन्तु असली रुद्राक्ष प्रकृति की देन है तथा प्रकृति मनुष्य की गुलाम नहीं है वरन् मनुष्य ही प्रकृति का गुलाम है इसलिये असली रुद्राक्ष के मुख बहुत अधिक स्पष्ट कभी-कभी नहीं होते हैं तथा आकार भी हमेशा एक समान नहीं होता। या तो सैकड़ों रुद्राक्ष एक-दूसरे के जुड़वा जैसे हो सकते हैं या दो रुद्राक्ष भी आपस में मेल नहीं खाते। धारियाँ कहीं-कहीं बहुत दूर तथा कहीं-कहीं इतनी

निकट होती हैं कि उन्हें गिनना भी मुश्किल होता है तो कभी-कभी सम दूरी पर दिखलायी देती हैं। यह सब प्रकृति का चमत्कार है।

भिन्न-भिन्न व्यक्ति रुद्राक्ष की भिन्न-भिन्न पहचान बताते हैं कुछ व्यक्तियों के अनुसार डूबने वाला रुद्राक्ष असली होता है तथा तैरने वाला नकली, तो कुछ व्यक्ति रंग के हिसाब से रुद्राक्ष की असलीयत बताते हैं कि काला या पीला या लाल रुद्राक्ष असली होता है, तो कुछ व्यक्तियों की राय के अनुसार ताँबा के 2 सिक्कों के मध्य रखने से असली रुद्राक्ष घूमने लगता है यह सब केवल कोरी बकवास है तथा नकली बेचने वालों द्वारा फैलायी गयी अफवाह है। असली रुद्राक्ष का डूबने अथवा तैरने से या रंग से तथा सिक्कों में घूमने से कोई भी मतलब नहीं है। जिस प्रकार हीरे की पहचान जौहरी ही कर सकता है उसी प्रकार रुद्राक्ष की पहचान अनुभव से ही सम्भव है। इसको व्यक्ति तुरन्त खरीद कर नहीं सीख सकता है इसलिये रुद्राक्ष किसी परिचित से अथवा विश्वसनीय दुकान से ही खरीदना चाहिये।

रुद्राक्ष माला

रुद्राक्ष माला धारण किये हुये व्यक्ति को देखकर शिव, विष्णु, देवी, गणेश, सूर्य तथा अन्य समस्त देवगण प्रसन्न होते हैं। रुद्राक्ष के मुख में ब्रह्मा का निवास माना गया है, मध्य भाग में रुद्र (शिव) का तथा पुच्छ भाग में विष्णु का निवास माना गया है। इस प्रकार रुद्राक्ष भोग और मोक्ष दोनों को देने वाला होता है।

जप माला में एक-सौ आठ दाने ही पिरोये जाते हैं और एक दाना सुमेरू रूप में गूँथा जाता है। कई बार लोगों में एक सहज जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि प्रत्येक जप माला में, चाहे वह रुद्राक्ष की माला हो या कोई अन्य माला, एक सौ आठ दाने ही क्यों लगाये जाते हैं? जप माला में एक सौ आठ दाने लगाये जाने का क्या रहस्य या प्रयोजन है? साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि सुमेरू क्यों लगाया जाता है? इन सभी प्रश्नों का समाधान इस प्रकार है—

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से आकाश गंगा में अश्विनी, भरणी, कृतिका आदि सत्ताइस नक्षत्रों की एक माला होती है। ये सत्ताइस नक्षत्र

सुमेरू पर्वत के सहारे चारों दिशाओं में घूमते हैं। अतएव 27 नक्षत्र × 4 दिशायें = 108 मणिकाओं की एक नक्षत्र माला आकाश गंगा में बनती है तथा यह नक्षत्र माला सुमेरू पर्वत के सहारे घूमती है, किन्तु कभी भी सुमेरू का उल्लंघन नहीं करती।

इसी ज्योतिषीय आधार पर जप माला में 108 दानों का ही उपयोग किया जाता है और सुमेरू पर्वत के प्रतीक के रूप में एक दाना सुमेरू लगाया जाता है। इस प्रकार जप माला चाहे रुद्राक्ष की हो या चन्दन, तुलसी, स्फटिक आदि की किन्तु सभी मालाओं में 108 मनकों को ही पिरोया जाता है। इसी आधार पर एक सौ आठ मणियों की माला जप काल में घुमायी जाती है और जिस प्रकार नक्षत्र सुमेरू पर्वत का उल्लंघन न करके उसके चारों ओर चारों दिशाओं में घूमते हैं, उसी प्रकार जप काल में भी माला के सुमेरू का उल्लंघन नहीं किया जाता है बल्कि उंगलियों के सहारे माला को पलट दिया जाता है।

रुद्राक्ष की माला चाहे छोटे दानों की हो या बड़े दानों की, किन्तु धारक को उनका लाभ समान रूप में मिलता है। जप सिद्धि में रुद्राक्ष माला का बड़ा महत्त्व होता है। इसके द्वारा किये गये प्रत्येक जप का अन्य मालाओं की तुलना में कई गुना अधिक फल प्राप्त होता है। जप सिद्धि का एक यह महत्त्वपूर्ण माध्यम है। इसके द्वारा अनेक कल्याणकारी और फलदायक मन्त्र सिद्ध किये जा सकते हैं। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर वे अपनी शक्ति के अनुसार फल देते हैं। पंचदेव पूजन में इसके द्वारा जपानुष्ठान करने पर बहुत शीघ्र सफलता मिलती है। महामृत्युंजय जैसे मंत्र भी इसके द्वारा जाप करने से शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

माला शुद्धि

सोमवार के दिन प्रात:काल नित्य कर्म आदि से निर्वत्त होकर किसी शिव मन्दिर या अपने पूजा गृह में बैठकर सर्वप्रथम कच्चे-दूध और गंगाजल से माला धोकर इसे साफ वस्त्र से पोंछ लें। इसके पश्चात् धूप, दीप आदि से इसकी पूजा करके इसके दानों में सुमेरू पर चन्दन लगायें, तब पंचाक्षर मंत्र **'ॐ नमः शिवाय'** की पाँच माला जाप करके इसे धारण करें। ●

विभिन्न मालायें तथा उनके प्रकार

(1) **चाँदी की माला**–पुष्टि कर्म के अन्तर्गत सात्विक–अभीष्ट की पूर्ति के लिए इस माला का उपयोग बहुत असरकारी माना जाता है।

(2) **तुलसी की माला**–वैष्णव भक्तों एवं राम–कृष्ण की उपासना हेतु यह माला उत्तम मानी गयी है। इसका आयुर्वेदिक महत्व भी है, यह शरीर की शुद्धता हेतु भी धारण की जाती है।

(3) **मूँगे की माला**–यह गणेश एवं लक्ष्मी जी की साधना में प्रयुक्त होती है।

(4) **वैजन्ती माला**–यह माला वैष्णव भक्तों हेतु व लक्ष्मी ज़ी के जप में उपयोग की जाती है।

(5) **रुद्राक्ष माला**–यह इतनी असरकारी है कि किसी भी प्रकार की साधना में इसका उपयोग किया जाता है। देवी, देवताओं व नवग्रहों की साधना में अगर उपयुक्त माला न हो, तो रुद्राक्ष की माला का उपयोग निश्चित मन से करना चाहिये। यह परम शुभकारी होती है।

(6) **अम्बर की माला**–यदि किसी व्यक्ति को पीलिया हो तथा उसे यह माला अथवा इसके दाने पहना दिये जायें तो पीलिया बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है।

(7) **कमल गट्टा की माला**–यह माला शत्रु नाश एवं लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु प्रयुक्त होती है।

(8) **पुत्र जीवा की माला**–इसका उपयोग सन्तान प्राप्ति के लिये की जाने वाली साधना में होता है।

(9) **चन्दन की माला**–यह माला दो प्रकार की होती है—(1) सफेद चन्दन, (2) लाल चन्दन। सफेद चन्दन की माला का उपयोग शान्ति पुष्टि कर्मों में एवं राम–विष्णु एवं अन्य देवता उपासना में होता है और लाल चन्दन की माला का उपयोग गणेश उपासना एवं देवी साधना के लिए उपयुक्त होता है।

(10) **स्फटिक की माला**–यह माला लक्ष्मी जाप हेतु उत्तम मानी गयी है। इसके धारक को चन्द्रमा तथा शिवजी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

(11) शंख माला–यह माला कुछ विशेष तान्त्रिक उपयोगों में प्रभावशाली रहती है।

(12) हल्दी की माला–बृहस्पति ग्रह, गणेश पूजा, देवी बगुलामुखी की साधना में यह आत्म उपयोग में लायी जाती है। यदि किसी को पीलिया हो गया हो तो उसके गले में 8-10 दाने पहना देने से पीलिया रोग दूर हो जाता है।

(13) कहरवा की माला–यदि किसी के खून में खराबी आ जाये अथवा रजस्वला अधिक होती है तो उसे यह माला पहना देने से ठीक हो जाती है।

(14) नवरत्न की माला–यह माला नवग्रह शान्ति हेतु धारण की जाती है, इसमें नौ ग्रह के नौ रत्न होते हैं। इस माला को धारण करने से मानसिक शान्ति मिलती है।

इस तरह की दूसरी बहुत-सी मालायें आती हैं जो विभिन्न बीमारियों में, तन्त्र साधना में, पूजा में प्रयुक्त होती हैं। चाहे कोई भी माला हो उसका शुद्ध एवं पूर्ण होना बहुत जरूरी है।

अष्टधातु की अँगूठी

अष्टधातु की अँगूठी नौ ग्रहों के माध्यम से मनुष्य पर पड़ने वाली शुभ एवं अशुभ दृष्टि को सन्तुलित करती है, जो ग्रह मनुष्य पर शुभ असर डाल रहे हैं उस शुभ असर को तीव्र करने के लिये मनुष्य को अष्ट-धातु की अँगूठी पहननी चाहिये तथा जो ग्रह मनुष्य पर अशुभ असर डाल रहे हैं उस अशुभ असर को समाप्त करने हेतु मनुष्य को यह अँगूठी पहनायी जाती हैं।

इस अँगूठी को पहनने से मनुष्य को धन लाभ, व्यापार वृद्धि, पुत्र लाभ, पारिवारिक सुख इत्यादि फायदे होते हैं तथा भूत-प्रेत, कर्जा, कष्ट, बीमारी इत्यादि से छुटकारा मिलता है।

अष्टधातु अँगूठी की कीमत — 125/-

स्पेशल अष्टधातु अँगूठी की कीमत — 250/-

अष्टधातु की पारे वाली अँगूठी

अष्टधातु की अँगूठी के साथ पारे की गोली भरी हुयी अँगूठी भी उपलब्ध है। इसमें अष्टधातु तथा पारे दोनों के गुण समाये होते हैं। ये एक तथा एक ग्यारह वाली बात साबित करते हैं। यह अँगूठी ज्यादा तथा जल्दी ही असर दिखाती है।

पारे की अँगूठी की कीमत

एक पारे वाली अँगूठी	—	125/-
एक पारा तथा रेडियम अष्टधातु में	—	125/-
दो पारा तथा रेडियम अष्टधातु में	—	150/-
घूमने वाला पारा तथा रेडियम अष्टधातु में	—	150/-

यन्त्र-जड़ित अष्टधातु की अँगूठी

यन्त्र जड़ी हुयी अष्टधातु की अँगूठी राशि एवं ग्रहों के अनुसार पहनी जाती है। ये अँगूठी रत्नों की तरह से तीव्र रूप से असरकार होती हैं। ये यन्त्र-जड़ित अँगूठी पहनने से मनुष्य ग्रहों के असर को सन्तुलित कर सकता है।

राशि व ग्रह के अनुसार यन्त्र-जड़ित अँगूठी

(1) मेष	मंगल	बीसा यन्त्र की अँगूठी
(2) वृष	शुक्र	पन्द्रह के यन्त्र की अँगूठी
(3) मिथुन	बुध	तीसा यन्त्र की अँगूठी
(4) कर्क	चन्द्र	बीसा यन्त्र की अँगूठी
(5) सिंह	सूर्य	तीसा यन्त्र की अँगूठी
(6) कन्या	बुध	चौंतीसा यन्त्र की अँगूठी
(7) तुला	शुक्र	चौंतीसा यन्त्र की अँगूठी
(8) वृश्चिक	मंगल	बीसा यन्त्र की अँगूठी
(9) धनु	गुरु	पन्द्रह के यन्त्र की अँगूठी
(10) मकर	शनि	चौंतीसा यन्त्र की अँगूठी

(11) कुम्भ	शनि	तीसा यन्त्र की अँगूठी
(12) मीन	गुरु	पन्द्रह के यन्त्र की अँगूठी

यंत्र

यंत्र का महत्व मान कर उससे लाभ प्राप्त करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। प्रत्येक आविष्कार के मूल में उसकी आवश्यकता छिपी होती हैं। हम देखते हैं कि सदियों से दीपावली के दिन दुकान के दरवाजे पर यंत्र लिखवाने की प्रथा चली आ रही है तथा श्रद्धावान लोग इससे विशेष लाभ उठाते हैं। यंत्रों पर विश्वास करके आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है साथ ही श्रद्धा फलती है। जिनको यंत्रों पर विश्वास होता है उन्हें इनका फल भी मिलता है। यंत्रों में मन्त्रों की भी शक्ति निहित रहती है तथा हर मनुष्य वेदपाठी नहीं होता है जिससे मन्त्रों का सही उच्चारण कर सके। गलत मंत्र का इस्तेमाल सही नहीं है इसलिये यंत्रों की उत्पत्ति हुयी यंत्रों पर भी रेखांकित भाषा में मंत्र ही लिखे होते हैं इसीलिये यंत्रों को पूजा में रखने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। यंत्र सोने, चाँदी, ताँबा, अष्टधातु तथा स्फटिक मणि पर अंकित अति शुभ होते हैं। यंत्र पूजने से सभी मनोरथ सफल होते हैं।

अलग-अलग उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अलग-अलग यंत्रों के पूजन का महात्म महाऋषियों ने सुझाया है। कुछ यंत्रों का फल नीचे दे रहे हैं।

श्रीयंत्र-श्री यश तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिये।

श्रीमहालक्ष्मी यंत्र-दर्शन मात्र से धन धान्य रिद्धि सिद्धि प्राप्ती।

श्री महामृत्युंजय-स्वास्थ्य कष्ट दूर करने हेतु।

श्री दुर्गा यंत्र-विशेष संकट निवारण हेतु।

श्री बीसा यंत्र-भूत प्रेत बाधा हटाने के लिये। सभी प्रकार के कल्याण हेतु।

श्री मंगल यंत्र-शादी विवाह तथा शुभ कार्य में आने वाले विघ्न हटाने के लिये, पुत्र प्राप्ति के लिये।

श्री बगलामुखी यंत्र-मुकदमा, कार्य सिद्धि और शत्रु पर विजय पाने के लिये।

श्री कुबेर यंत्र–धनपति बनने के लिये।

श्री गणेश यंत्र–रिद्धि सिद्धि के लिये।

श्री सरस्वती यंत्र–बुद्धि, विद्या प्राप्ति के लिये।

नवग्रह की शान्ति हेतु नवग्रह यंत्र व नवग्रह के नौ अलग-अलग यंत्र जैसे—शनि, राहू, केतू, मंगल, बुद्ध, सूर्य, शुक्र, बृहस्पति, चन्द्र, इस प्रकार अन्य कई तरह के यंत्र पूजा में रखे जाते हैं।

इस तरह आपने देखा कि किस कार्य योजना के लिये कौन-सा यंत्र पूजना चाहिये। परन्तु यंत्रों को प्रयोग से पूर्व शुद्ध कर लेना चाहिये। इन सब यंत्रों में विशेष रूप से श्रीयंत्र सबसे अधिक प्रचलित है क्योंकि इसमें श्री विद्या की शक्ति होती है तथा लक्ष्मी माता का वरदान होता है।

श्री यंत्र

श्री का अर्थ होता है लक्ष्मी इसलिये श्रीयंत्र को लक्ष्मी यंत्र भी कहते हैं। ऋषि-मुनियों के अनुसार श्रीयन्त्र को घर, दुकान अथवा पूजा गृह में, आफिस में, शुद्ध स्थान पर, तिजोरी और गल्ले में रखना चाहिये तथा श्रीयंत्र के लाकेट अथवा श्रीयंत्र मुद्रित अँगूठी, बाजूबंद भी पहन सकते हैं। इसका पूजन पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान से धूप, दीप, पुष्प, सुगन्धित, गंगाजल छिड़क कर करना चाहिये। इससे धन-धान्य की कमी नहीं होती है और सुख-सुविधा और सम्मान में वृद्धि होती है।

यंत्र शुद्धीकरण करने की विधि

दीपावली, होली, महाशिवरात्रि या दूसरे किसी भी शुभ दिन प्रात:काल स्नान करके कुशासन या ऊन आसन पर बैठकर शुद्ध मन से पूर्ण आस्था तथा श्रद्धा के साथ अपने गुरुदेव का ध्यान करें।

सर्वप्रथम पंचामृत से स्नान कराने के बाद दूध तथा गंगाजल में पुन: स्नान कराकर किसी साफ कपड़े से पौंछकर पूजा स्थल पर स्थापित करें। उसके पश्चात् धूप, दीप, पुष्प, सुगंधि, रोली तथा चावल से इसकी पूजा करें।

इसके बाद आसन पर बैठकर संबंधित देवता का ध्यान करके गुरुमंत्र का 108 बार जाप करें। तत्पश्चात् यंत्र पर रोली के तथा अष्टगंध

अथवा गोपी चन्दन का अंशु अर्पित करें। इसके पश्चात् इसके ऊपर ॐ अथवा स्वास्तिक बनायें। इस तरह आप स्वत: यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा कर सकते हैं। प्राण प्रतिष्ठा के बाद यंत्र की पूजा नित्य देवमूर्ति के समान धूप, दीप, अगरबत्ती, पुष्प आदि से इसकी पूजा-अर्चना करनी चाहिये।

हमारे यहाँ उपलब्ध ताम्र-पत्र पर अंकित यंत्रों की सूची

(1) श्री यंत्र
(2) महालक्ष्मी यंत्र
(3) गणेश यंत्र
(4) विष्णु यंत्र
(5) कनक धारा यंत्र
(6) राम रक्षा यंत्र
(7) नवग्रह यंत्र
(8) घंटा करण यंत्र
(9) चरण पादुका यंत्र
(10) व्यापार वृद्धि यंत्र
(11) वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
(12) चामुण्डा यंत्र
(13) बीसा यंत्र
(14) दुर्गा अम्बाजी यंत्र
(15) गायत्री यंत्र
(16) हनुमान यंत्र
(17) सुख स्मृति यंत्र
(18) संतान गोपाल यंत्र
(19) बगुलामुखी यंत्र
(20) त्रिपुर भैरवी यंत्र
(21) कुबेर यंत्र
(22) महामृत्युंजय यंत्र
(23) धनदा यंत्र
(24) वशीकरण यंत्र
(25) नवदुर्गा यंत्र
(26) सरस्वती यंत्र
(27) ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र
(28) सूर्य यंत्र
(29) चन्द्र यंत्र
(30) मंगल यंत्र
(31) बुध यंत्र
(32) बृहस्पति यंत्र
(33) शुक्र यंत्र
(34) शनि यंत्र
(35) राहु यंत्र
(36) केतु यंत्र
(37) महाकाली यंत्र
(38) शुभलाभ यंत्र
(39) कार्य सिद्धि यंत्र

हमारे यहाँ प्राप्त यंत्र असंख्य प्रकार के हैं किन्तु कुछ बहुउपयोगी यंत्रों की लिस्ट दी गयी है।

यंत्रों का असर अकाट्य तथा द्रुतगति से होता है।

नोट–यह सभी यंत्र ताम्रपत्र पर अंकित $2'' \times 2''$, $3\frac{1}{2}'' \times 3\frac{1}{2}''$, $7'' \times 7''$, $12'' \times 12''$ के साईज में हमेशा मिलते हैं। अष्ट धातु में भी $2'' \times 2''$ तथा $3\frac{1}{2}'' \times 3\frac{1}{2}$ साईज में हमेशा तैयार मिलते हैं।

श्रीयंत्र तथा नवग्रह जैसे सबसे ज्यादा बिकने वाले यंत्र चाँदी तथा सोने के भी बनवाये जाते हैं। नवग्रह यंत्र पर ग्रहों के पत्थर चढ़वाकर भी यंत्र आर्डर पर तैयार करवाये जाते हैं।

स्फटिक श्री यंत्र (मेरू आकार)

स्फटिक के सन्दर्भ में हम पहले ही कह चुके हैं कि यह रत्न मणि के समान है, इस प्रकार स्फटिक श्रीयन्त्र मेरू आकार, स्फटिक श्रीयन्त्र कछुआ पृष्ठ पर तथा स्फटिक श्रीयन्त्र शिवलिंगाकार की महिमा अपरम्पार है। इसके विषय में हम बस इतना ही कह सकते हैं कि हिन्दू धर्म के चार स्तम्भ चारों शंकराचार्य समझे जाते हैं, स्फटिक श्रीयन्त्रों की पूजा शंकराचार्य तक करते हैं। हिन्दू दर्शन के प्रचण्ड ज्ञाता महामण्डलेश्वर तान्त्रिक, योगी, साधु, पंडित, संन्यासी सभी के पूजा स्थल में स्फटिक निर्मित श्रीयन्त्र प्रमुख स्थान पाता है। इसको यन्त्रराज की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि बाकी सभी यन्त्रों में मन्त्रों के साथ धातुओं की शक्ति समायी होती है, किन्तु इसमें मन्त्र के साथ-साथ दिव्य, अलौकिक स्फटिक मणि की भी सम्पूर्ण शक्तियाँ निहित हैं। इसके बहुत ज्यादा प्रभावपूर्ण होने के पीछे एक बात है कि बाकी सभी यन्त्रों को सीधी समआकार प्लेट पर लिखा जाता है, किन्तु मेरू आकार को प्लेट पर नहीं लिखा जाता, बल्कि इसको उभारा जाता है जिससे इसकी शक्ति में लाखों गुनी बढ़ोत्तरी हो जाती है, इसलिये स्फटिक मेरू आकार श्रीयन्त्र एकदम से लाभदायी तथा आध्यात्मिक शक्तियों का केन्द्र बिन्दु है।

पिरामिड

पिरामिड का उल्लेख भी पुराने ग्रन्थों में है, किन्तु हिन्दू धर्म के अधिकतर ग्रन्थ विदेशी आक्रमणकारियों ने या तो जला दिये नष्ट कर दिये अथवा लूटकर अपने साथ ले गये, इसलिये पिरामिडों से लाभ विदेशियों ने ही ज्यादा उठाया है। विदेशों में मरने के बाद शव पर विभिन्न द्रवों का लेप करके पिरामिडों में रखने का उल्लेख मिलता है। इससे ये शव जिन्हें वह लोग ममी के नाम से पुकारते हैं, सैकड़ों हजारों साल के पश्चात् भी उसी रूप में सुरक्षित पाये जाते हैं यह सब उन पिरामिडों की देन है, क्योंकि पिरामिड ब्रह्माण्ड में से नकारात्मक अंशों को समाप्त करके सकारात्मक अंशों की उत्पत्ति करते हैं। यह नकारात्मक अंशों को ही सकारात्मक अंशों में बदल देते हैं तथा परिवर्तन अणु की गति से होता है, जिसका जल्दी ही अंदाजा आम आदमी नहीं लगा सकता। यह सकारात्मक अंशों को अणु की भाँति विस्फोटक गति से उत्पन्न करते हैं। आजकल पुन: भारतीय समाज में यह प्रचलन में आ गये हैं तथा इसके असर को अत्यधिक प्रतिभा सम्पन्न लोग, जैसे—वैज्ञानिक तथा डॉक्टर अथवा विशेषज्ञ अधिक समझ पाते हैं। इनको घरों में रखने से घर के भीतर के दूषित असर नष्ट होकर अच्छे तथा स्वच्छ परिणाम देते हैं, जिससे जीवनदायी ऊर्जा का तेजी से निर्माण होता है तथा हमारे जीवन में नवीन उत्साह का संचार होता है। इन्हें बीमार व्यक्ति के पास रखने से अत्यन्त उत्साहवान परिणाम उपलब्ध होते हें तथा यह घर के सभी प्राणियों को फायदा पहुँचाते हैं, चाहे वह घर के बच्चों के विद्या अध्ययन से सम्बन्ध रखते हों या शुद्ध जलवायु से या आपसी मन-मुटाव से। यह सब मुसीबतों को पास आने से रोकने में मद्दगार हैं।

यह हमें वास्तु दोषों से भी मुक्त करते हैं, क्योंकि हर व्यक्ति का निवास स्थान अथवा कार्यस्थल वास्तुशास्त्र के हिसाब से नहीं बना होता है, इनसे हमें वास्तु के विपरीत स्थिति से होने वाले बुरे प्रभावों को रोकने में सहायता मिलती है, क्योंकि वास्तुशास्त्र सौर मण्डल में चलने वाली मैग्नेट लाइनों से सम्बन्ध रखता है इन्हीं मैगनेट लाइनों के आधार पर वास्तुशास्त्र हमें बताता है कि हमारा शयन कक्ष कौन-सी दिशा में होना

चाहिये और हमारी रसोई का स्थान क्या होना चाहिये और शौचालय घर के किस हिस्से में होने से हमारे ऊपर इन मैगनेट लाइनों का दुष्परिणाम नहीं होगा, परन्तु यदि हमने वास्तुशास्त्र के हिसाब से परिसर का निर्माण नहीं कराया है तो हमें चारों दिशाओं में पिरामिड रख देने चाहियें, जिससे यह मैगनेट लाइनों के नकारात्मक असरों को सोखकर उन्हें सकारात्मक प्रभावों में बदल दे तथा हमें वास्तु दोष से मुक्ति दिला सके। पिरामिड परिसर की चारों दिशाओं के अतिरिक्त उपलब्ध स्थानों पर कहीं भी रख सकते हैं व कितने भी रखे जा सकते हैं। पिरामिड हमें कभी नुकसान नहीं पहुँचातें बल्कि फायदा ही पहुँचाते हैं। अगर किसी परिसर का निव-निर्माण हो रहा है तो 11 पिरामिड इसकी नींव में रखवा देने चाहियें, जिससे यह अन्दर ही अन्दर वास्तु दोषों का नाश कर हमें वास्तु दोषों से होने वाली परेशानियों से बचा सके। पिरामिड दूसरे पिरामिडों की अपेक्षा ज्यादा शीघ्र अपना लाभ प्रदर्शित करते हैं। ये छोटे-बड़े सभी साइज में आते हैं।

स्फटिक बॉल

यह स्फटिक मणि की बनी होती है। इसका उपयोग ज्यादातर रेकी तथा सम्मोहन में किया जाता है। रैकीमास्टर अथवा सम्मोहनकर्त्ता इसका इस्तेमाल कर अपने असर में अप्रत्याशित वृद्धि करते हैं। वे वॉल से ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति का विकास करते हैं। इसी तरह से क्रिस्टल पेन्सिल भी ऊर्जा की वृद्धि के काम आती है।

हत्था जोड़ी

यह एक वनस्पति है। एक विशेष जाति के पौधे की जड़ खोदने पर उसमें मानव भुजा जैसी दो शाखायें दिख पड़ती है, इसके सिरे पर पंजा जैसा बना होता है। उंगलियों के रूप में उस पंजे की आकृति ठीक इस प्रकार की होती है जैसे कोई मुट्ठी बाँधे हो। जड़ निकालकर उसकी दोनों शाखाओं को मोड़कर परस्पर मिला देने से करबद्धता की स्थिति आती है, यही हत्था जोड़ी है। इसके पौधे अकसर मध्य प्रदेश में होते हैं जहाँ वनवासी जातियों के लोग इसे निकालकर बेच दिया करते हैं।

हत्था जोड़ी में अद्भुत असर निहित रहता है। यह साक्षात् चामुण्डा देवी का प्रतिरूप है। यह जिसके पास भी होगी वह अद्भुत रूप से प्रभावशाली होगा। सम्मोहन, वंशीकरण, अनुकूलन, सुरक्षा तथा सम्पत्ति संवर्धन की इसमें चमत्कारी शक्ति होती है। इसे कहीं से प्राप्त करके तान्त्रिक विधि के साथ सिद्ध कर दिया जाये तो साधक निश्चित रूप से चामुण्डा देवी का कृपा पात्र हो जाता है।

यात्रा, विवाद प्रतियोगिता, साक्षात्कार, युद्ध क्षेत्र इत्यादि में यह साधक की रक्षा करती है तथा उसे विजय प्रदान करती है। भूत-प्रेत आदि वायव्य आत्माओं का उसे कोई डर नहीं रहता। धन-सम्पत्ति देने में यह बहुत चमत्कारी साबित हुई है। तान्त्रिक वस्तुओं में यह महत्वपूर्ण है, किन्तु इसका लाभ सिर्फ तभी प्राप्त हो सकता है जब हत्था जोड़ी शुद्ध हो तथा उसकी नियमानुसार पूजा कर ली जाये। किसी की उपयोग की हुई हत्था जोड़ी अनुकूल नहीं होती।

हत्था जोड़ी छोटी-बड़ी कई आकारों में प्राप्त होती है, असर सब का समान होता है। सामान्यत: इनकी बनावट एक जैसी होती है, दो भुजायें तथा दोनों उंगलियाँ मुट्ठी बँधी हुई।

पूजन विधि–सर्वप्रथम कहीं से हत्था जोड़ी प्राप्त करें। उसे रविवार के दिन शुभ योग में शुद्ध जल से स्नान कराकर लाल वस्तु पर रखें। थोड़ी देर में पानी सूख जायेगा। इसे तिल के कच्चे तेल में डूबोकर रख दें। कटोरी में तेल इस तरह से भरें कि हत्था जोड़ी डूब जाये। वह तेल का बर्तन कहीं एक पवित्र स्थान पर रखें।

इसका हर रोज पूजन दर्शन बहुत लाभकारी होता है। प्रतिदिन धूप बत्ती देकर माला मन्त्र जपने से इसकी शक्ति बढ़ती है। विधिवत् सिद्ध हत्था जोड़ी का असर अचूक है। यह अनुभव सिद्ध सत्य है। आस्था व पवित्रता के साथ इसके पूजन से साधक का कल्याण होता है।

हत्था जोड़ी प्राप्त करने से लेकर उसे सिद्ध करने तक समस्त क्रियाओं में सिर्फ इस मन्त्र के मन ही मन जाप करते रहने से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है—**ऊँ ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै विच्चै**। इस मन्त्र के माध्यम से सिद्ध की गयी हत्था जोड़ी जीवन के बहुत से क्षेत्रों में साधक को सफलता प्रदान करती है।

बिल्ली की जेर

बिल्ली प्रसव के समय एक तरह की थैली त्यागती है। उसे आंवल अथवा जेर कहते हैं। अकसर सभी पशुओं में प्रसव के समय आंवल निकलता है। बिल्ली अपना आंवल एकदम से खा जाती है। पालतू बिल्ली का आंवल किसी कपड़े से ढक कर प्राप्त कर लिया जाये तो इसका तान्त्रिक असर धन-धान्य में वृद्धि करता है। मुख्य रूप से यह जेर धात्विक संग्रह में (सोना-चाँदी बटोरने में) मद्दगार होती है।

पूजनविधि–सर्वप्रथम कहीं से जेर प्राप्त करके उस पर हल्दी का चूर्ण मल कर रख लेना चाहिये। इसके पश्चात् किसी शुभ मुहूर्त में उसे लाल वस्त्र पर लपेट कर लोभान की धूनी तथा कपूर के दीप से पूजकर दुर्गा मन्त्र "ऊँ दुं दुर्गाये नमः" का 108 बार जाप कर, उसे कहीं सुरक्षित रख देना चाहिये।

एकाक्षी नारियल

नारियल का समूचा गोला बहुत ही पवित्र तथा शुभ कार्यों में प्रयुक्त होता है। बहुत सी पूजाओं में यह प्रमुख उपदान माना गया है। सामान्यत: सभी गोलों में दो काले बिन्दु (नेत्र) होते हैं, किन्तु कभी-कभी एक नेत्र वाला गोला भी मिल जाता है। ऐसे गोले को एकाक्षी नारियल कहते हैं। अगर यह प्राप्त हो जाये तो उसे लक्ष्मी गणेश की भाँति पूजना चाहिये। लाल वस्त्र के आसन पर स्थापित करके लाल चन्दन, पुष्प, सिन्दूर, धूप, दीप आदि से नियमित पूजा करके इसे भण्डार अथवा तिजोरी में स्थापित करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

श्वेतार्क गणपति

भारतीय वनस्पतियों में मदार एक विशिष्ट वर्ग का पौधा है। यह विषैला होता है, इसकी पत्तियों को कोई भी पशु नहीं खाता, फिर भी यह अद्भुत गुणों से सम्पन्न होता है। इसकी रुई कोमल एवं गरम होती है। आयुर्वेद में इसकी विषाक्तता को औषधीय उपयोग के माध्यम से जीवनदायी निरूपित किया जाता है।,

आमतौर पर बैंगनी रंग के फूल वाले मदार के पौधे ही सब जगह उगते हैं। औषधीय उपयोगों में वही काम आते हैं, परन्तु एक पौधा ऐसा है, जिसके फूल सफेद होते हैं। उसे सफेद मदार (श्वेतार्क) कहते हैं। •

प्रमुख चमत्कारी कवच

शुद्ध अष्टधातु युक्त चमत्कारी कवच

सिद्ध श्री महामृत्युंजय कवच

सिद्ध एवं अद्भुत

महामृत्युंजय कवच

भगवान शंकर का आशीर्वाद प्राप्त यह कवच धारणकर्ता को सभी प्रकार के भय (शत्रु भय, मृत्यु भय, प्रेत भय, मानसिक व शारीरिक) आदि से मुक्ति दिलाता है। धारणकर्ता को इसे धारण करने के पश्चात् आत्मबल व निडरता प्राप्त होती है।

ऊँ त्रयंम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ऋद्धी सिद्धी से परिपूर्ण

सिद्ध श्री सरस्वती कवच

धारण करने से लाभ–माँ सरस्वती को विद्या की देवी कहा जाता है। अत: यह कवच विद्यार्थी वर्ग के लिए विशेष लाभकारी है। चाहे वह किसी श्रेणी–उच्च शिक्षा या अन्य, जैसे–छात्र, कलाकार, पत्रकार, लेखक, काव्य, व्याकरण, ज्योतिषाचार्य, वेद, रामायण ग्रन्थ आदि वर्गों में अध्ययनरत हों। इसको पहनने से मन पढ़ाई की ओर खिंचने लगता है तथा किया गया अध्ययन लम्बे समय तक याद रहता है और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

शुद्ध अष्टधातु, पीताम्बरी हकीक एवं रुद्राक्ष द्वारा निर्मित

अद्भुत बगलामुखी कवच

(शत्रुओं पर विजय पाने हेतु धारण करें)

सिद्ध श्री बगलामुखी कवच

धारण करने से लाभ–माँ बगलामुखी सभी शत्रुओं का नाश करने वाली माता है। विपत्तियों का विनाश करने वाली माँ बगलामुखी धारणकर्ता के सभी कष्टों का निवारण कर सुख-समृद्धि प्रदान करने वाली है। मुकदमों में विजय, शत्रुओं की पराजय, दुश्मनों का नाश इस दैवीय शक्ति कवच के धारण करने से प्राप्त होता है। इस कवच को धारण करने से मनुष्य हर क्षेत्र में विजयी होता है। यदि आपने इस कवच को धारण किया हुआ है तो सामने वाली सारी शक्तियाँ आपके सामने क्षीण हो जाती हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े आदि को इस कवच को अवश्य धारण करना चाहिये।

शुद्ध स्फटिक श्रीयंत्र जड़ित

अलौकिक श्री लक्ष्मी कवच

लक्ष्मी को प्रसन्न करने वाला अद्‌भुत कवच गले में धारण करें।

स्फटिक श्रीयंत्र

श्री का अर्थ होता है लक्ष्मी इसलिये श्रीयंत्र को लक्ष्मी यंत्र भी कहते हैं। प्राचीन मान्यता के अनुसार स्फटिक रत्न मणि के समान होता है। अत: स्फटिक श्रीयंत्र की महिमा अपरम्पार है। इसलिये स्फटिक श्रीयंत्र तुरन्त फलदायी होता है एवं चमत्कारिक रूप से लक्ष्मी प्राप्ति में सहायक होता है।

इा कवच को धारण करने पर अद्‌भुद लाभ मिलते हैं।

असली नजरबट्टु व शुद्ध रुद्राक्ष द्वारा निर्मित

दिव्य नजरबट्टु कवच

(हर प्रकार के टोने टोटकों से बचाव हेतु धारण करें)

धारण करने से लाभ–दिव्य नजरबट्टु कवच में असली नजरबट्टु व शुद्ध रुद्राक्ष का प्रयोग किया गया है।

खराब दृष्टि तो नहीं है या शनि की दशा-महादशा इत्यादि तो नहीं चल रही। इस कवच को धारण करने से शनि से संबंधित समस्त दोष शान्त होते हैं तथा शनि भगवान की कृपा प्राप्त होती है, जिससे उसकी राशि में चाहे शनि किसी भी अवस्था में हो परन्तु कभी खराब फल नहीं देते हैं, हमेशा अच्छा फल ही देते हैं।

रुद्राक्ष व स्फटिक से निर्मित

शुद्ध अष्टधातु युक्त चमत्कारी कवच

सभी राशियों में लाभदायक

गले में धारण करें

चमत्कारी कवच

समस्त गृहों की शांति, धनवृद्धि, उद्देश्यों की पूर्ति, घर में सुख-शांति प्राप्त करने के लिए इस कवच को धारण करना अति आवश्यक है। व्यस्त जीवन में अशुद्ध भोजन के कारण होने वाले रोगों में लाभ प्रदान करने वाला यह कवच यदि बच्चों के गले में धारण करें तो यह बच्चों की पढ़ाई व मानसिक संतुलन को स्थिरता प्रदान करता है। इस कवच को भगवान शंकर व माता पार्वती का आशीर्वाद प्राप्त है, जो रुद्राक्ष व स्फटिक के रूप में विद्यमान है। •

ASLOMAL VIJAY KUMAR (HARIDWAR-MATHURA)

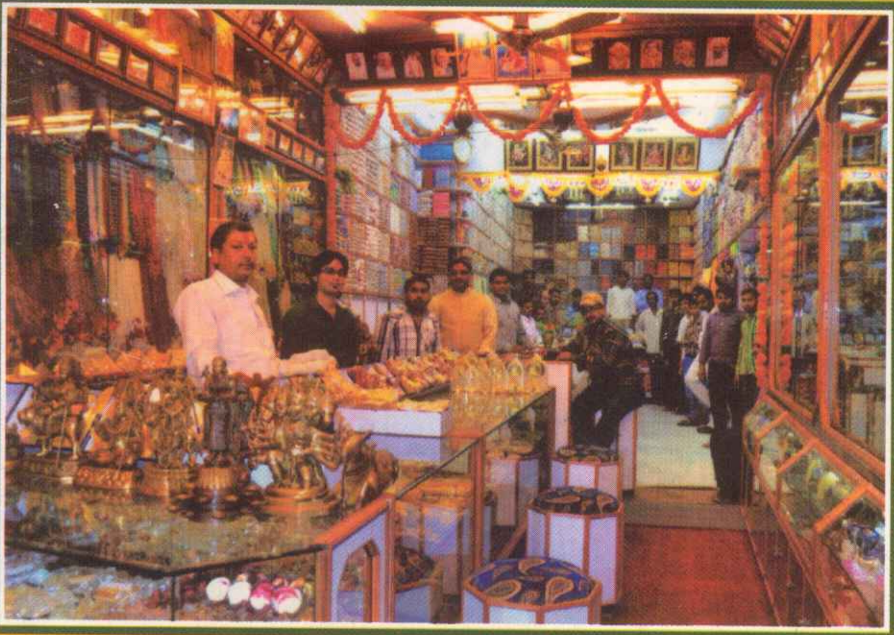

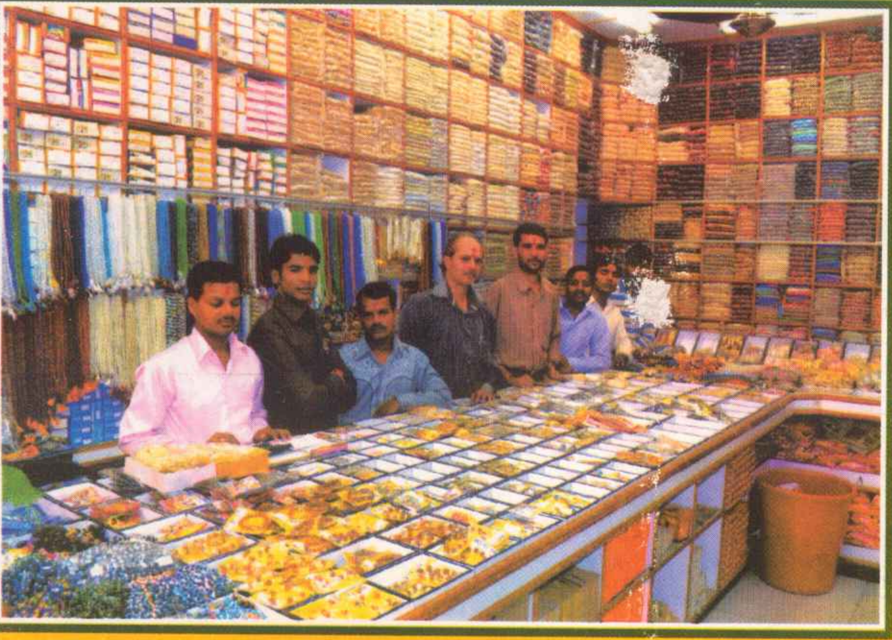

पारद शिवलिंग

दक्षिणावर्ती शंख

असली रुद्राक्ष

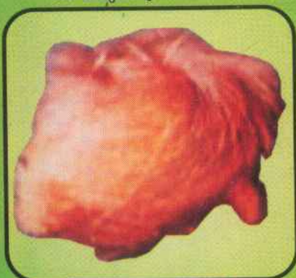

सियार सिंगी

स्फटिक श्री यंत्र

बिल्ली की जेर

हत्था जोड़ी

शालीग्राम

नवरत्न माला

रत्न व रुद्राक्ष रहस्य

हर प्रकार के असली रत्न व उपरत्न, रुद्राक्ष, तुलसा, चन्दन व स्फटिक की बड़ी व छोटे दानों की मालाऐं, एक मुखी से चौदह मुखी तक रुद्राक्ष शुद्ध व गारंटी के साथ मिलने का एकमात्र स्थान :

असलोमल विजयकुमार

रामगिरी की हवेली, बड़ा बाजार, हरिद्वार-249401, फोन + 01334-227606, 222266

कंसखार, छत्ता बाजार, मथुरा-281001
फोन : (ऑफिस) (0565) 2407185, 3196677 (शोरूम) (0565) 2504880, 3296677

26, ग्राउंड फ्लोर-2nd, भोईवाड़ा, भूलेश्वर, मुम्बई-400002 फोन : (022) 66315556-57-58